अलहुज्जतुल बालिग़ा

उस व्यक्ति की मृत्यु के बारे में जो नासिरा बस्ती में प्रकट हुआ

लेखक

मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम०ए०

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत

क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब

नाम किताब : **अलहुज्जतुल बालिग़ा**
ALHUJJAT-UL-BAALIGHA (POWERFUL ARGUMENT)

लेखक : **मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम०ए०**
MIRZA BASHIR AHMAD M.A.

अनुवादक : अन्सार अहमद बी.ए.बी.एड, मौलवी फ़ाज़िल
ANSAR AHMAD, B.A.B.ED. MOULVI FAZIL

संस्करण : अगस्त 2012 ई. प्रथम हिन्दी संस्करण
AUGUST-2012

संख्या : 1000

प्रकाशन : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान
FAZLE UMAR PRINTING PRESS, QADIAN

ज़िला–गुरदासपुर (पंजाब)
DISTT GURDASPUR (PUNJAB)

ISBN - 978-81-7912-365-2

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

TOLL FREE - 18001802131

प्रकाशक की ओर से

अल्लाह के नियमानुसार समस्त नबी (अवतार) इस संसार में आकर अपना कार्य करने के पश्चात् संसार से सिधार गए। उनकी मृत्योपरान्त उनके अनुयायियों ने उनकी ओर भांति-भांति की अनुचित आस्थाएं एवं धारणाएं सम्बद्ध कर दीं। कुछ लोगों ने तो उन के पद और श्रेणी को असाधारण तौर पर बढ़ा दिया, यहां तक कि उन्हें परमेश्वरीय (ख़ुदाई) श्रेणी से सुशोभित कर दिया तथा उनकी उपासना भी की जाने लगी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को न केवल ईसाइयों ने परमेश्वर बना लिया अपितु मुसलमानों ने भी उनकी ओर ऐसी बातें और आस्थाएं सम्बद्ध कर दीं कि वह वास्तविक मुर्दों को जीवित करते थे, पक्षी उत्पन्न करते थे तथा सब से विचित्र यह कि वह जीवित ही पार्थिव शरीर के साथ आकाश में उठा लिए गए और अन्तिम युग में आकाश से उतरेंगे तथा मुसलमानों के सुधार और मार्ग-दर्शन का कार्य करेंगे। इस प्रकार उन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी बड़ा स्थान दे दिया गया। ये समस्त बातें परमेश्वर के नियम के विपरीत हैं जिनका क़ुर्आन करीम स्पष्ट तौर पर खण्डन करता है तथा पूर्वकालीन ग्रन्थ और मानव-बुद्धि भी इसे कदापि स्वीकार नहीं करती।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि. (लेखक) ने इन्हीं अनुचित आस्थाओं का खण्डन करते हुए वास्तविक स्थिति स्पष्ट करने के लिए 'अलहुज्जतुलबालिग़ा' (सुदृढ़ तर्क) नामक एक पुस्तक लिखी, जिसके इस से पूर्व कई उर्दू संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक की उपादेयता की दृष्टि से इसका हिन्दी अनुवाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम (जमाअत

अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की आज्ञा एवं अनुमति से वर्ष 2012 ई. में प्रथम बार प्रकाशित किया जा रहा है। यह अनुवाद जनाब अन्सार अहमद साहिब ने किया है। ईश्वर उन्हें इसका उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और इसका प्रकाशन प्रत्येक दृष्टि से समस्त जन हिताय हो। यथास्तु

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

द्वितीय संस्करण का दशा वर्णन

मेरी यह संक्षिप्त सी पुस्तक अलहुज्जतुलबालिग़ा प्रथम बार सन् 1917 ई. में प्रकाशित हुई थी जबकि मैं अभी बिल्कुल युवावस्था में था और कालिज की शिक्षा से ताज़ा-ताज़ा निवृत्त हुआ था। आज लगभग अड़तीस वर्ष के लम्बे अन्तराल के पश्चात् जनाब फ़ज़्ल हुसैन साहिब की प्रेरणा पर इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है। मैंने द्वितीय संस्करण के समय इस पुस्तक के लेख में जो मेरी युवावस्था के युग की यादगार है कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया अपितु केवल यदा-कदा सामान्य शाब्दिक परिवर्तन और अन्त में एक आवश्यक परिशिष्ट बढ़ाने के पश्चात् लिपिक के सुपुर्द कर रहा हूँ।

मसीह नासिरी की मृत्यु की समस्या को इस दृष्टि से तो जो महत्व प्राप्त है वह स्पष्ट है कि इस समस्या का हज़रत मसीह मौऊद प्रवर्तक सिलसिला अहमदिया के दावे के साथ एक आधारभूत संबंध है परन्तु इस से भी अधिक महत्व का वह पहलू है जो मसीहियत के दज्जाली उपद्रव से संबंध रखता है। वर्तमान युग में इस्लाम के मुकाबले पर ईसाइयत को जो अस्थायी और प्रत्यक्ष सा प्रभुत्व प्राप्त हुआ है उसकी जड़ में यही झूठी आस्था कार्यरत है कि जहां समस्त लोकों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मृत्यु पाकर पृथ्वी के नीचे दफ़्न हो चुके हैं वहां 'नऊज़ुबिल्लाह' मसीह नासिरी अब तक ख़ुदा के पहलू में आकाश पर बैठा हुआ संसार में पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रहा है। अब समय है कि इस निराधार आस्था का असत्य होना सिद्ध करके इस्लाम को हर ओर से मसीहियत पर विजयी किया जाए। सत्य तो यह है कि यदि कोई नबी सदा के लिए जीवित है तो वह केवल हमारे पेशवा (उस पर मेरे प्राण बलिहारी हों) मुहम्मद-ए-अरबी (स.अ.व.) हैं और शेष समस्त अपना-अपना समय पूर्ण करके मृत्यु प्राप्त कर चुके हैं।

اللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ وَيَآ أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(फरवरी 1955 ई.)

विनीत

मिर्ज़ा बशीर अहमद

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अर्थात् हज़रत मसीह नासिरी की मृत्यु और जीवन की आस्था का तीन प्रकार से विशेष महत्व है **प्रथम**- इस दृष्टि से कि इस समय संसार का अधिकांश भाग ईसाई धर्म का अनुयायी होने के कारण हज़रत मसीह नासिरी को ख़ुदा का बेटा समझते हुए इस बात पर विश्वास रखता है कि वह इस संसार में कुछ वर्ष जीवन व्यतीत करने के पश्चात् आसमान पर वापस चले गए और वहां जीवित मौजूद हैं और ('हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं') ख़ुदा के अनादि शासन के भागीदार हैं। **द्वितीय**- इस दृष्टि से कि ईसाइयों की इस आस्था से आन्तरिक तौर पर प्रभावित हो कर तथा कुछ क़ुर्आन की आयतों और हदीसों की ग़लत व्याख्या करके इस युग की मुसलमान जनता भी इस धारणा पर दृढ़ हो गई है कि यद्यपि हज़रत ईसा ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा तो नहीं थे अपितु केवल ख़ुदा के एक नबी थे, परन्तु सलीब की घटना पर ख़ुदा ने उन्हें इस भौतिक शरीर के साथ आसमान पर उठा लिया था और वह अब तक आसमान पर जीवित मौजूद हैं और अन्तिम युग में पुन: धरती पर उतर कर उम्मते मुहम्मदिया का सुधार करेंगे। **तृतीय** - इस दृष्टि से कि चूंकि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब प्रवर्तक सिलसिला अहमदिया का मसीह मौऊद होने का दावा है, इसलिए जब तक हज़रत मसीह नासिरी की मृत्यु और जीवन की आस्था का निर्णय न हो कोई मुसलमान हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मसीहियत के दावे की ओर

गंभीरतापूर्वक ध्यान नहीं दे सकता। इन तीन कारणों से आवश्यक है कि क़ुर्आन, हदीस और ईश्वरप्रदत्त बुद्धि की दृष्टि से इस समस्या का समाधान करके ख़ुदा की प्रजा के मार्ग-दर्शन का सामान उपलब्ध किया जाए और ईसाइयत के मुक़ाबले में इस्लाम की प्रतिष्ठा में उन्नति हो।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का दा'वा तथा मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी प्रवर्तक जमाअत अहमदिया के मसीह होने के दावे के मार्ग में सब से प्रथम प्रश्न हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु का है, क्योंकि जब तक यह सिद्ध न हो जाए कि पूर्व मसीह की मृत्यु हो चुकी उस समय तक चाहे हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावे की सच्चाई पर सहस्त्रों सूर्यों को चढ़ा दिया जाए स्वभाव में कुछ आशंका अवश्य रहती है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब का जिस पद का दावा है अर्थात मसीह होने का जब तक उस की कुर्सी खाली न हो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई के बारे में हृदय को सन्तुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती। अत: आवश्यक है कि सर्व प्रथम इस बाधा को दूर किया जाए। अत: स्पष्ट हो कि क़ुर्आन करीम और हदीसों से ज्ञात होता है कि अन्तिम युग में जबकि मुसलमान दयनीय स्थिति में होंगे और मसीही आस्थाओं का ज़ोर होगा तथा अधर्म हर ओर अपना दामन फैला रहा होगा परमेश्वर मुसलमानों में एक मसीह अवतरित करेगा जो न केवल मुसलमानों में सुधार कार्य करेगा अपितु अन्य धर्मों के मुकाबले में भी खड़ा होगा और ठोस तर्कों द्वारा इस्लाम की विजय अन्य समस्त धर्मों पर सिद्ध कर देगा यहां तक तो सभी मुसलमानों की सर्वमान्य आस्था है परन्तु इस से आगे मतभेद आरंभ हो जाता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विरोधी

विद्वानों की यह मान्यता है कि कथित मसीह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही हैं जो सलीबी घटना के अवसर पर आसमान की ओर उठा लिए गए थे और अब तक भौतिक शरीर के साथ आसमान पर जीवित मौजूद हैं और अन्तिम युग में दोबारा पृथ्वी पर उतरेंगे। इस के मुक़ाबले पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब और आप की जमाअत की यह शिक्षा है कि हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है। इसलिए आने वाला मसीह कोई अन्य व्यक्ति होना चाहिए जो हज़रत मसीह नासिरी का सदृश बन कर आएगा। यद्यपि कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब का कर्तव्य न था कि वह मसीह की मृत्यु सिद्ध करते अपितु मिर्ज़ा साहिब के विरोधियों का कर्तव्य है कि वे क़ुर्आन और सही हदीसों से हज़रत मसीह का जीवित होना सिद्ध करें, क्योंकि मसीह के जीवित रहने का दावा एक ऐसा दावा है जो सामान्य अवलोकन के विपरीत होने के कारण किसी स्पष्ट सबूत के अभाव में मृत्यु के दावे के मुकाबले में नहीं किया जा सकता, जिसके लिए किसी बाह्य सबूत की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह सामान्य स्वाभाविक नियम के अनुकूल है, परन्तु बावजूद इसके हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने जनता के सुधार की नीयत से इस कार्य को अपने दायित्व में लिया फिर सुचारु रूप से उसका निर्वाह किया। आज और तो और बड़े-बड़े ग़ैर अहमदी प्रकाण्ड विद्वान भी इस विवाद पर किसी अहमदी के साथ वार्तालाप करते हुए बहुत घबराते हैं अपितु कई बार तो बात करने से ही बिल्कुल इन्कार कर देते हैं तथा कहते हैं कि इस विवाद का हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावे के साथ क्या संबंध है, जबकि मोटी बुद्धि वाला मनुष्य भी इस बात को समझ सकता है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में जांच-पड़ताल के मार्ग में मसीह नासिरी की मृत्यु और जीवन का मामला प्रथम प्रश्न है जिसका समाधान होना चाहिए।

प्रथम अध्याय

(आसमान पर उठाए जाने का)

इस संक्षिप्त भूमिका के पश्चात् कुछ सरल और साधारण तौर पर समझ में आने वाली बातों का वर्णन करना चाहता हूँ जिनसे स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह नासिरी भौतिक शरीर के साथ आसमान पर कदापि नहीं उठाए गए अपितु उन्होंने पृथ्वी पर ही अपने जीवन के दिन बिताए और पृथ्वी पर ही उनकी मृत्यु हुई।

मनुष्य का जीवन-मृत्यु इसी संसार से सम्बद्ध है

अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में प्रजा को सम्बोधित करते हुए फ़रमाता है –

فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ (सूरह:आराफ़ रुकू 2)

अर्थात् *"तुम अपने जीवन के दिन पृथ्वी पर ही व्यतीत करोगे और पृथ्वी पर ही तुम्हें मृत्यु आएगी।"*

इस आयत में परमेश्वर स्पष्टता के साथ वर्णन करता है कि समस्त मनुष्यों के लिए यह प्रारब्ध हो चुका है कि वे पृथ्वी पर ही जीवन के दिन गुज़ारेंगे तदोपरांत जब मृत्यु का समय आएगा तो उनकी मृत्यु भी पृथ्वी पर ही होगी। स्पष्ट है कि संसार में मनुष्य पर दो ही समय आते हैं। एक जीवन का समय है और एक मृत्यु का समय। इन दोनों को अल्लाह तआला ने पृथ्वी के साथ विशेष कर दिया है। अब प्रश्न उठता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बावजूद एक मनुष्य होने के किस प्रकार पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जा बैठे ? क्या मसीह को जीवित आकाश पर ले जाते हुए अल्लाह तआला अपने इस निर्णय को भूल गया कि मनुष्य अपने जीवन के

दिन धरती पर ही व्यतीत करेगा और धरती पर ही मृत्यु को प्राप्त होगा? फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है –

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ کِفَاتًا اَحۡیَآءً وَّ اَمۡوَاتًا (सूरहः मुरसलात रुकू 1)

अर्थात् *"हमने इस धरती को ऐसा बनाया है कि वह मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करने वाली और अपने पास रोकने वाली है। चाहे मनुष्य जीवित अवस्था में हो या मृत अवस्था में हो।"*

इस आयत ने मानो पहली आयत की व्याख्या कर दी। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हम ने पृथ्वी के अन्दर यह विशेषता रखी है कि वह जीवित और मृत दोनों को अपने साथ लगाए रखती है। और मानव शरीर को अपने से बाहर नहीं जाने देती। ये आयत भी मसीह के आकाश पर जाने को अनुचित सिद्ध कर रही है।

नबी करीम (स.अ.व.) अपने मनुष्य होने को पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर जाने के मार्ग में बाधक वर्णन करते हैं

तत्पश्चात जब काफ़िरों ने नबी करीम (स.अ.व.) से कहा कि यदि आप सच्चे हैं तो हमें आसमान पर चढ़ कर दिखाएँ। फिर हम मान लेंगे। इसके उत्तर में अल्लाह तआला ने आप को आदेश दिया कि हे रसूल तू इनको उत्तर दे कि

سُبۡحَانَ رَبِّیۡ هَلۡ کُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوۡلًا (सूरहः बनी इस्राईल रूकू-10)

अर्थात् *पाक है मेरा रब मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ।*

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट बताया है कि एक मनुष्य का जीवित आकाश पर जाना ख़ुदा के नियम और वादे के विपरीत है और ख़ुदा इस बात से पवित्र है कि ख़ुदा अपने निर्णयों को खंडित करे। विचारणीय

है कि अरब के काफ़िर नबी करीम (स.अ.व.) जैसे महान् वैभवशाली मनुष्य से आकाश पर जाने के चमत्कार की माँग करते हैं और इस प्रकार का चमत्कार देखने पर ईमान लाने का वादा करते हैं परन्तु नबी करीम (स.अ.व.) स्पष्ट उत्तर देते हैं कि मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ और कोई मनुष्य आकाश पर जीवित नहीं जा सकता। इस आयत की उपस्थिति में एक ईसाई यह बात कहने का साहस करता है तो करे कि मसीह जीवित आकाश पर चला गया परन्तु एक मुसलमान कहलाने वाला मनुष्य जो मसीह को एक मनुष्य और नबी करीम (स.अ.व.) से श्रेणी में बहुत छोटा मनुष्य समझता है वह एक पल के लिए भी इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि मसीह नासिरी अपने पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जा बैठे हों। कितनी विचित्र बात है कि नबी करीम (स.अ.व.) तो काफ़िरों को यह उत्तर देते हैं कि मैं केवल एक मनुष्य हूँ और मनुष्य का आकाश पर जीवित चले जाना ख़ुदा के नियम और निर्णय के विरुद्ध है परन्तु मुसलमान हैं कि मसीह को मनुष्य मानते हुए फिर भी उस को आकाश पर बैठा रहे हैं। क्या यदि वास्तव में मसीह आकाश पर जीवित बैठा है तो वह इस आयत के अनुसार मनुष्य से श्रेष्ठ हस्ती सिद्ध नहीं होता? क्या एक ईसाई मुसलमान को यह नहीं कह सकता कि जब क़ुर्आन में तुम्हारे नबी आकाश पर जीवित जाने के मार्ग में केवल अपने मानव होने को बतौर रोक के वर्णन करते हैं तो क्या मसीह जो तुम्हारे निकट आकाश पर जीवित पार्थिव शरीर के साथ जा पहुँचा वह तुम्हारे नबी से श्रेष्ठ अपितु मनुष्य से उच्च हस्ती सिद्ध न हुआ? इसका उत्तर मुसलमानों के पास केवल लज्जित होने के और क्या है। खेद! मुसलमानों ने स्वयं अपने हाथों से इस्लाम में इस्लाम को छोड़ने का मार्ग खोला और अपने सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) की सर्वोच्चता पर स्वयं अपने हाथ से प्रहार किया। किसी ने सच कहा है –

من از بیگانگاں ہر گز نہ نالم   کہ بامن ہرچہ کرد آں آشنا کرد

अर्थात '' *मैं दूसरों का गिला नहीं करता मुझ से तो जो कुछ किया है मेरे अपने मित्रों ने ही किया है।*

मे'राज की वास्तविकता

यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उठता है कि जब क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला स्पष्ट शब्दों में नबी करीम (स.अ.व.) के पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर जाने को आपके मनुष्य होने के कारण निषिद्ध ठहराता है तो फिर मे'राज के अवसर पर नबी करीम (स.अ.व.) किस तरह आकाश पर जा पहुँचे? इसके उत्तर में भली-भांति याद रखना चाहिए कि नबी करीम (स.अ.व.) का मे'राज पार्थिव शरीर के साथ नहीं हुआ था अपितु वह एक सर्वोत्कृष्ट कश्फ़ था जो नबी करीम (स.अ.व.) को दिखाया गया और जिस प्रकार स्वप्न में प्राय: मनुष्य अपनी चारपाई पर लेटे हुए दूरवर्ती देशों की सैर कर लेता है। इसी प्रकार इस कश्फ़ी अवस्था में हुआ। सदात्मा लोगों के एक वर्ग की यही विचारधारा है कि आँहज़रत (स.अ.व.) का मे'राज पार्थिव शरीर के साथ नहीं हुआ अपितु वह एक श्रेष्ठ कश्फ़ था। जिसमें आपकी और आपकी उम्मत की आगामी प्रगतियों के दृश्यों के तौर पर नबी करीम (स.अ.व.) को आकाशों की सैर कराई गई। हाँ कुछ मुसलमानों ने नि:सन्देह मे'राज को पार्थिव शरीर के साथ माना है परन्तु क़ुरआन शरीफ़ और सही हदीसें इस विचारधारा का खंडन करती हैं। प्रथम तो उपरोक्त आयत ही (अर्थात् आयत هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا) इस विचार को खंडित कर रही है यदि पार्थिव शरीर के साथ नबी करीम (स.अ.व.) आकाश पर जा सकते थे तो आपने क्यों मक्का के काफ़िरों को नकारात्मक उत्तर दे कर इस्लाम को मानने से वंचित कर दिया? यदि मे'राज पार्थिव शरीर के साथ हुआ था तो साधारण बात थी कि मक्का के

काफ़िरों को उनकी माँग पर उनको यह दृष्य दिखाया जाता परन्तु आँहज़रत (स.अ.व.) ने मनुष्य होने के नाते अपना पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जाना निषिद्ध ठहराया। इससे स्पष्ट है कि मे'राज पार्थिव शरीर के साथ नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त क़ुरआन शरीफ़ में मे'राज को रोया का शब्द अभिप्राय लिया गया है। जैसा कि कहा –

وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ (सूरहः बनी इस्राईल रुकू-6)

अर्थात् *"हमने जो रोया तुझे दिखाई है वह लोगों के लिए एक परीक्षा के तौर पर है"।*

फिर हज़रत आइशा रज़ि. से रिवायत आती है कि मे'राज की रात को आँहज़रत (स.अ.व.) का मुबारक शरीर पृथ्वी से पृथक नहीं हुआ (सीरत इबने हिशाम जिल्द-1) जिस से सिद्ध होता है कि मे'राज पार्थिव शरीर से नहीं था अपितु आपको कोई और सूक्ष्म शरीर दिया गया था जैसा कि कश्फ़ में होता है फिर बुख़ारी जो हदीस की पुस्तकों में प्रमाणिकता की दृष्टि से प्रथम श्रेणी पर है। इसमें लिखा है कि

ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ (बुख़ारी किताबुत्तौहीद)

अर्थात् ''*नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मे'राज में ये दृश्य देखने के उपरान्त जाग गए तथा उस समय आप मस्जिद हराम में थे*''।

इस से स्पष्ट ज्ञात होता है कि मे'राज एक उत्तम श्रेणी का कश्फ़ था जो कश्फ़ के रूप में दिखाया गया न कि पार्थिव शरीर के साथ और यही उद्देश्य था।

ख़ुदा की ओर 'रफ़ा' की सही व्याख्या

अतः क़ुर्आन करीम इस बात को कदापि सहन नहीं करता कि कोई मनुष्य पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चला जाए अपितु इसके विपरीत स्पष्ट शब्दों में घोषणा करता है, परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब के

विरोधी क़ुर्आन करीम की एक आयत से सिद्ध करने का प्रयास किया करते हैं कि अल्लाह तआला ने मसीह को जीवित आकाश पर उठा लिया था और वह आयत यह है :-

وَمَاقَتَلُوْهُ وَمَاصَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ......وَمَاقَتَلُوْهُ يَقِيْنًا بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ

(सूरह अन्निसा, रूकू-22)

अर्थात् ''*यहूद ने न तो मसीह का वध किया और न ही सलीब पर लटका का मारा अपितु वास्तव में घटना यह हुई कि मसीह उनकी दृष्टि में वध किए गए अपितु सलीब पर मारे गए जैसा बना दिया गया............. परन्तु वे कदापि, कदापि मसीह को मारने पर समर्थ नहीं हुए, अपितु मसीह को अल्लाह तआला ने अपनी ओर उठा लिया*''।

इस आयत से सिद्ध किया जाता है कि अल्लाह तआला ने मसीह को आकाश की ओर उठा लिया था, परन्तु यदि सोच-विचार से काम लिया जाए तो सिद्ध करने का दोष स्पष्ट दिखाई देता है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नि:सन्देह रफ़ा हुआ क्योंकि रफ़ा के सन्दर्भ में क़ुर्आन करीम के शब्द स्पष्ट हैं, उनका इन्कार नहीं किया जा सकता, परन्तु प्रश्न उठता है कि किस प्रकार और किस ओर रफ़ा(ऊपर उठाना) हुआ ?

क़ुर्आन करीम के शब्द ये हैं :-

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ

अर्थात् ''*अल्लाह ने मसीह को अपनी ओर उठा लिया*''।

अब यदि ख़ुदा की ओर उठाए जाने के अर्थ आकाश की ओर उठाए जाने के लिए जाएं तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या ख़ुदा तआला आकाश तक सीमित है ? क्या वह पृथ्वी पर मौजूद नहीं ? क्या इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से ख़ुदा प्रत्येक स्थान पर उपस्थित और दृष्टा नहीं ? है और अवश्य है तो इन शब्दों के क्या अर्थ हुए कि ख़ुदा ने मसीह को अपनी ओर उठा लिया ? इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर पाने के लिए आगे-पीछे के परिदृश्य

पर दृष्टि डालें। यहूद का दावा था कि उन्होंने मसीह को सलीब पर लटका कर मार दिया तथा इस से वे यह परिणाम निकालते थे कि (ख़ुदा की शरण चाहते हैं), मसीह एक लानती मौत मरा, क्योंकि तौरात की शिक्षानुसार सलीब पर मरना एक धिक्कारयुक्त (ला'नती) मौत है (इस्तिस्ना बाब-21, आयत-23) इस प्रकार जैसे यहूद मसीह का लानती (धिक्कृत) होना सिद्ध करते थे। उनके इस दावे के उत्तर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मसीह कदापि सलीब पर नहीं मरा अपितु उसका तो अल्लाह की ओर रफ़ा हुआ अर्थात् तुम ने प्रयास किया था कि मसीह को धिक्कृत (लानती) मौत का शिकार बनाओ परन्तु अल्लाह तआला ने तुम्हारे प्रयासों को असफल किया और बजाए इसके कि मसीह एक लानत वाली मौत से मर कर हाविया (नर्क का नीचे का तल) में गिरता अल्लाह तआला ने उसे अपनी ओर बुलन्द किया और उसे ख़ुदा की ओर आध्यात्मिक रफ़ा प्राप्त हुआ। ऐसा आध्यात्मिक रफ़ा ख़ुदा तआला के समस्त सानिध्य प्राप्त लोगों को प्राप्त होता है। जैसा कि क़ुर्आन करीम फ़रमाता है :-

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً

مَّرْضِيَّةً فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ

(सूरह फ़ज्र रुकू-1)

अर्थात् *"हे संतोष प्राप्त मनोवृत्ति लौट आ अपने प्रतिपालक की ओर इस अवस्था में कि तू स्वयं भी राज़ी हो और अल्लाह को भी राज़ी कर रही हो और मेरे दासों में सम्मिलित हो जा और मेरे स्वर्ग में ठिकाना बना।"*

इस आयत से ज्ञात होता है कि ख़ुदा तआला के समस्त सानिध्य प्राप्त लोगों का रफ़ा ख़ुदा की ओर ही हुआ करता है। अत: रफ़ा के अर्थ इस आयत से भी बिल्कुल स्पष्ट हो जाते हैं कि :-

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ

(सूरह-अलआ'राफ़ रुकू-22)

ख़ुदा हज़रत मूसा के एक विरोधी के बारे में जो पहले सदाचारी होता था जिसका नाम रिवायतों में "बल्अम बाऊर" वर्णन हुआ है फ़रमाता है कि "यदि हम चाहते तो अपने निशानों द्वारा उसका रफ़ा करते, परन्तु वह स्वयं पृथ्वी की ओर झुक गया।"

इस स्थान पर रफ़ा से आध्यात्मिक रफ़ा अभिप्राय लिया जाता है न कि शारीरिक रफ़ा, हालांकि यहां तो पृथ्वी का विपरीत प्रसंग भी विद्यमान है तो फिर क्यों अकारण हज़रत मसीह नासिरी के बारे में रफ़ा से शारीरिक रफ़ा अभिप्राय लिया जाए विशेषकर जब कि हम देखते हैं कि यहूद का यह आरोप था कि मसीह सलीबी अर्थात् ला'नती मौत मरा है तथा इससे वे यह परिणाम निकालते थे कि उसका आध्यात्मिक रफ़ा नहीं हुआ। इसके उत्तर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मसीह सलीब पर कदापि नहीं मरा अपितु इस के विपरीत उसे आध्यात्मिक रफ़ा प्राप्त हुआ। यदि यहां रफ़ा से शारीरिक रफ़ा अभिप्राय लिया जाए तो आयत के कुछ अर्थ ही नहीं बनते। यहूद आरोप लगाते हैं कि मसीह सलीब पर मरने के कारण आध्यात्मिक रफ़ा से वंचित रहा अपितु नाऊज़ुबिल्लाह एक ला'नती मौत मरा,इस पर उन्हें उत्तर मिलता है कि नहीं, मसीह को अल्लाह तआला ने जीवित आकाश की ओर उठा लिया। प्रश्न कुछ और है और उत्तर कुछ और। एक मोटी बुद्धि रखने वाला मनुष्य भी उत्तर देते हुए यह सोच लेता है कि क्या मैं मूल प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ या कोई असंबंधित बात कह रहा हूँ, परन्तु नाऊज़ुबिल्लाह हमारे विरोधियों का ख़ुदा विचित्र है कि आरोप तो आध्यात्मिक रफ़ा के बारे में है और उत्तर में रफ़ा शारीरिक प्रस्तुत किया जा रहा है। अत: यह बात यक़ीनी है कि हज़रत मसीह के बारे में ख़ुदा की ओर रफ़ा से अभिप्राय आध्यात्मिक रफ़ा है जो समस्त ख़ुदा के सदात्मा

लोगों का हुआ करता है न कि शारीरिक रफ़ा।

सारांश यह है कि **प्रथम** तो अल्लाह की हस्ती केवल आसमान के अन्दर सीमित नहीं अपितु ख़ुदा प्रत्येक स्थान पर मौजूद और दृष्टा है। अत: अल्लाह की ओर रफ़ा होने के अर्थ आध्यात्मिक रफ़ा के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं लिए जा सकते। **द्वितीय**– यह कि यहूद का आरोप आध्यात्मिक रफ़ा के बारे में था न कि शारीरिक रफ़ा के बारे में। अत: इसके उत्तर में शारीरिक रफ़ा प्रस्तुत करना व्यर्थ है और ऐसा उत्तर ख़ुदा जैसी नीतिवान हस्ती की ओर कदापि सम्बद्ध नहीं किया जा सकता। **तृतीय**– यह कि यदि अल्लाह की ओर उठाए जाने के अर्थ पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए जाने के हैं तो फिर स्वीकार करना पड़ेगा कि समस्त सदात्मा लोग जीवित आकाश की ओर उठाए जाते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है:– يَآاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً

अर्थात् *"हे सन्तोष प्राप्त आत्मा तू अपने ख़ुदा की ओर लौट आ।"*

चतुर्थ– यह कि स्वयं क़ुर्आन करीम में रफ़ा के अर्थ आध्यात्मिक रफ़ा के आए हैं जैसा कि हज़रत मूसा के युग में बलअम बाऊर के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि :–

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ

अर्थात् *"यदि हम चाहते तो उन निशानों के द्वारा उसका रफ़ा करते परन्तु वह तो स्वयं पृथ्वी की ओर झुक गया।"*

एक और आयत है जो रफ़ा के अर्थों को बिल्कुल स्पष्ट कर देती है। अल्लाह तआला फ़रमाता है –

يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ (सूरह: आले इमरान, रुकू–6)

अर्थात् ख़ुदा फ़रमाता है कि

"हे ईसा मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मौत से मृत्यु दूँगा और तुझे अपनी ओर उठाऊँगा।"

इस आयत में क्रमानुसार रफ़ा को मृत्यु के पश्चात् रखा गया है जिस से रफ़ा के अर्थ साफ तौर पर स्पष्ट हो जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् सदात्मा लोगों की आत्माओं का रफ़ा ख़ुदा की ओर हुआ करता है और उन्हें स्वर्ग की ओर उठा कर उच्च श्रेणी पर स्थान दिया जाता है परन्तु दुष्ट आत्माओं का रफ़ा किसी उच्च श्रेणी की ओर नहीं होता अपितु वे नर्क की ओर गिरा दी जाती हैं। अत: इसी अर्थ के अनुसार ख़ुदा ने मसीह नासिरी को गिरने से बचा कर अपनी ओर उठा लिया और यह अभीष्ट था بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ वाली आयत जिसकी ऊपर बहस गुज़र चुकी है इसी आयत के उत्तर में आई है। इसमें अल्लाह तआला ने वादा किया है कि हे ईसा मैं तुझे मृत्यु देकर अपनी ओर उठाऊँगा तथा आयत رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ में अल्लाह तआला ने इस वादे के पूरा होने की ओर संकेत किया है कि हम ने वादे के अनुसार मसीह को अपनी ओर उठा लिया। इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी आयतें और हदीसें हैं जो हमारे अर्थों का समर्थन करती हैं। उदाहरणतया क़ुर्आनी आयत:-

اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ (सूरह फ़ातिहा रुकू-2)

अर्थात् ''अल्लाह ही की ओर पवित्र बातें चढ़ती हैं और शुभकर्म ही मनुष्य के रफ़ा का कारण होते हैं।''

इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि प्रत्येक नेक मनुष्य को उसके शुभ कर्मों के कारण ख़ुदा की ओर रफ़ा प्राप्त होता है, तो अब क्या समस्त नेक मनुष्य आकाश पर जीवित उठाए जाते हैं ?

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला की ओर जाने के अर्थ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इस कथन से भी स्पष्ट हैं कि :-

اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ (सूरह: अस्साफ़्फ़ात-रुकू-3)

अर्थात् *''मैं अपने रब्ब की ओर जाने वाला हूँ।''*

फिर इस क़ुर्आनी आयत से तो समस्त मुसलमान अवगत हैं कि :-

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (सूरह: अलबक़रह रुकू-19)

अर्थात् *"हम अल्लाह ही के लिए हैं और अल्लाह की ओर ही हम जाएंगे।"*

तो क्या यहां अल्लाह की ओर जाने से यह अभिप्राय है कि हम आकाश की ओर जीवित उठाए जाएंगे? لا حول ولا قوّة اِلَّا بِاللّٰه फिर हदीस में आता है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने अपने चाचा अब्बास रज़ि. को सम्बोधित करके फ़रमाया-

رَفَعَكَ اللّٰهُ يَا عَمّ (देखो कन्ज़ुल उम्माल)

अर्थात् *"हे चाचा! ख़ुदा आप का रफ़ा करे।"*

इस हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) ने अपने चाचा के लिए रफ़ा की दुआ की है, जिस से स्पष्ट है कि रफ़ा से अभिप्राय रफ़ा आध्यात्मिक है न कि शारीरिक क्यों कि हज़रत अब्बास रज़ि. को कभी शारीरिक रफ़ा प्राप्त नहीं हुआ फिर और देखिए कि नबी करीम (स.अ.व.) ने हमें नमाज़ में पढ़ने के लिए यह दुआ सिखाई है कि :-

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَارْفَعْنِیْ

अर्थात् *"हे मेरे ख़ुदा मुझ पर दया कर और मेरा पथ-प्रदर्शन कर तथा मुझे आजीविका दे और मुझे रफ़ा प्रदान कर।"*

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं भी सदैव यह दुआ पढ़ा करते थे। अब यदि रफ़ा के अर्थ शारीरिक रफ़ा के लिए जाएं तो बड़ी कठिनाई का सामना है और वह यह कि नबी करीम जीवन-पर्यन्त रफ़ा के लिए दुआ करते रहे, परन्तु आप की दुआ स्वीकार नहीं हुई और आप को शारीरिक रफ़ा प्राप्त न हुआ। हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं इन बेहूदा बातों से।

इसके अतिरिक्त 'मुफ़रिदात राग़िब' जो क़ुर्आन करीम का प्रसिद्ध और प्रमाणित शब्दकोष है उसमें رَفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ के अर्थ ये लिखे हैं कि

رَفَعَهٗ مِنْ حَيْثُ التَّشْرِيْفِ

अर्थात् *"इमाम राग़िब साहिब फ़रमाते हैं कि इस आयत से अभिप्राय यह है कि "अल्लाह ने मसीह का स्तर ऊँचा किया।"*

तथा शब्दकोष की प्रसिद्ध पुस्तक 'लिसानुलअरब' में लिखा है कि अल्लाह तआला का नाम राफिअ (رافع) इसलिए है कि :-

هُوَ الَّذِیْ یَرْفَعُ الْمُؤْمِنَ بِالْاِسْعَادِ وَاَوْلِیَاءَهٗ بِالتَّقَرُّبِ

अर्थात् *"वह मोमिनों को सौभाग्य द्वारा और वलियों को सानिध्य द्वारा अपनी ओर उठाता है।"*

अत: यह बात निश्चित है कि अल्लाह तआला के कलाम में और नबियों की परिभाषा में रफ़ा से अभिप्राय आध्यात्मिक रफ़ा होता है न कि शारीरिक! हम दावे के साथ कहते हैं कि जहां कहीं भी ख़ुदा के कलाम में जब बन्दे के बारे में रफ़ा का शब्द प्रयोग किया गया हो तो उस के अर्थ आध्यात्मिक रफ़ा के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिए गए और स्पष्ट है कि आध्यात्मिक रफ़ा में मसीह नासिरी की कोई विशेषता बिल्कुल नहीं अपितु समस्त नेक लोगों का रफ़ा अल्लाह तआला की ओर होता रहा है, होता है और होता रहेगा।

مَاصَلَبُوْهُ और شُبِّهَ لَهُمْ के अर्थ तथा सलीबी घटना की मूल परिस्थितियां

आगे वर्णन करने से पूर्व इस प्रसंग में एक नोट आयत مَاصَلَبُوْهُ की व्याख्या और सलीबी घटना के बारे में उल्लेख करना आवश्यक है। उपरोक्त नोट में हमने उल्लेख किया है कि हज़रत मसीह नासिरी सलीब पर लटकाए तो गए,परन्तु वह सलीब पर नहीं मरे परन्तु हमारे विरोधी मौलवियों की यह आस्था है कि हज़रत मसीह सलीब पर बिल्कुल चढ़ाए ही नहीं गए

अपितु उन के स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति चढ़ा दिया गया जो उन के साथ पूर्ण सदृश्यता रखता था और उनको स्वयं ख़ुदा ने आकाश पर उठा लिया। इस बहस को मसीह की मृत्यु और जीवन से तो कोई संबंध नहीं है क्योंकि हज़रत मसीह सलीब पर चढ़े या न चढ़े इस से हमें कोई मतलब नहीं अपितु हमारा उद्देश्य तो केवल इस से है कि वह आकाश की ओर जीवित उठाए गए या नहीं, परन्तु फिर भी कुछ मौलवी लोग अकारण इस विवाद को मध्य में ले आते हैं, इसलिए इसके बारे में कुछ लिखना हित से खाली न होगा। अत: स्पष्ट हो कि सल्ब के अर्थ समझने में हमारे मौलवियों ने बहुत धोखा खाया है और वह यह कि वे इसके अर्थ केवल सलीब पर चढ़ाने के करते हैं हालांकि ये अर्थ उचित नहीं हैं, शब्दकोषों की पुस्तकों में लिखा है-

اَلصَّلِيب:اَلقِتلَةُ المَعرُوفَةُ (देखो लिसानुल अरब तथा ताजुल उरूस) अर्थात् सलीब देने के अर्थ प्रचलित पद्धति पर मारने के हैं अर्थात् किसी को सलीब पर लटका कर मारना। स्वयं सलीब शब्द के रूट में मारने का अर्थ मौजूद है क्योंकि सल्ब और सलीब के मूल अर्थ हड्डी के गूदे के हैं (देखो ताजुल उरूस, लिसानुल अरब तथा अक़रबुल मवारिद) इसलिए सल्ब के अर्थ यह हुए कि किसी व्यक्ति को इस प्रकार मारना कि उसके शरीर से हड्डियों का गूदा बह निकले और यही सलीबी मौत है, क्योंकि सलीब की पद्धति यह होती थी कि अपराधी को सलीब की लकड़ी पर कीलों के द्वारा लटका दिया जाता था जहां वह भूख, थकान आदि से लटक-लटक कर मर जाता था और उसका शरीर सड़ जाता था। अत: **मा सलबूहो** के यह अर्थ करना कि उन्होंने मसीह को सलीब की लकड़ी पर लटकाया तक नहीं बिल्कुल ग़लत है अपितु इसके अर्थ सलीब पर लटका कर मारने के हैं। हमारे विरोधी किसी समय यह कहते हैं कि यदि ये अर्थ उचित हैं तो आयत में مَاقَتَلُوهُ (मा क़तलूहो)का शब्द अधिक करने की क्या आवश्यकता थी केवल مَاصَلَبُوهُ (मा सलबूहो)कहना पर्याप्त था, परन्तु यह आरोप भी

उनकी इतिहास से अनभिज्ञता के कारण उत्पन्न हुआ है और वह यह कि हमारे विरोधियों ने समझ रखा है कि यहूद का केवल यही दावा था कि हम ने मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर चढ़ा कर मार दिया है जिसके उत्तर में ख़ुदा ने फ़रमाया कि यहूद ने मसीह अलैहिस्सलाम को कदापि नहीं मारा अपितु सलीब पर चढ़ाया तक नहीं, परन्तु यह ग़लत है यहूद में इस आस्था के बारे में दो वर्ग हैं। एक वर्ग का दावा है कि हमने पहले मसीह का वध किया फिर अपमानित करने के लिए सलीब पर मसीह का शरीर लटका दिया क्योंकि उन के यहां यह भी एक ढंग होता था कि अपराधी का शरीर दूसरों को शिक्षा देने के लिए किसी ऊँचे स्थान पर लटका देते थे। दूसरा वर्ग उनका यह कहता है कि मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर ही लटका कर मारा गया और सलीब पर ही उन की मृत्यु हुई। इन दोनों के खण्डन में ख़ुदा फ़रमाता है कि न तो मसीह को यहूद ने क़त्ल किया और न ही सलीब पर लटका कर मारा। क़ुर्आन करीम में जहां यहूद के दोनों वर्गों का दावा वर्णन किया है वहां केवल क़त्ल का शब्द प्रयोग किया है, क्योंकि क़त्ल का शब्द एक तो सामान्य अर्थों में आता है जिस का तात्पर्य यह होता है कि किसी प्रकार मार डालना और दूसरे विशेषतौर पर तलवार इत्यादि के साथ मारने पर बोला जाता है (देखो 'ताजुलउरूस' तथा 'लिसानुलअरब') अतः जहां यहूद का दावा वर्णन हुआ है वहां क़त्ल को सामान्य अर्थों में रखा है जो मार देने के समस्त ढंगों पर व्याप्त है परन्तु उत्तर देते हुए व्याख्या की आवश्यकता थी इसलिए क़त्ल के सामने सल्ब का शब्द रख कर क़त्ल को उसके विशेष अर्थों में सीमित करके दोनों दावों का खण्डन कर दिया गया है।

यह आरोप कि ख़ुदा का मसीह अलैहिस्सलाम को यह कहना कि كَفَفْتُ بَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ (सूरहः माइदह, रुकू-15) अर्थात् *"हमने तुझे बनी इस्राईल के उपद्रव से सुरक्षित रखा।"* स्पष्ट करता है कि

यहूद मसीह को सलीब पर लटकाने ही पर समर्थ नहीं हो सके एक नितान्त कमज़ोर आरोप है जो मात्र विचार करने की कमी से पैदा हुआ है। كَفَفْتُ بَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ के अर्थ केवल यह हैं कि ख़ुदा ने मसीह को उन की उद्दण्डता से सुरक्षित रखा अर्थात् यहूद ने जो यह इरादा किया था कि उसे सलीब द्वारा मार डालें इस में उन्हें निष्फल किया। इससे यह परिणाम निकालना कि यहूद मसीह को कोई छोटा कष्ट भी नहीं पहुँचा सके एक मूर्खतापूर्ण बात है जिसकी न तो शब्द अनुमति देते हैं और न ही इतिहास से इस की कोई साक्ष्य मिलती है। इसके अतिरिक्त हमारे नबी करीम (स.अ.व.) से भी ख़ुदा का वादा था कि وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ (सूरह माइदह रुकू-10) अर्थात् *"अल्लाह तुझे लोगों के उपद्रव से सुरक्षित रखेगा।"* परन्तु बावजूद इसके आप को काफ़िरों के द्वारा इतने कष्ट पहुंचे कि आपके कथनानुसार इतने कष्ट किसी अन्य नबी को नहीं पहुँचे। एक युद्ध के अवसर पर आप के दो दांत टूट गए तथा 'तायफ़' और 'उहद' के अवसर पर घाव भी लगे तथा कई अन्य प्रकार से भी कष्ट दिए गए तो क्या ख़ुदा का वादा झूठा निकला? कदापि नहीं। अत: كَفَفْتُ بَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ के केवल अर्थ हैं कि यहूद के उपद्रवों से मसीह को सुरक्षित रखा और उन्होंने जो इरादा किया था कि उसे सलीब पर मारकर नाऊज़ुबिल्लाह एक ला'नती मौत मरने वाला सिद्ध करें उन्हें इस इरादे में असफल किया, क्योंकि तौरात में लिखा है कि झूठा नबी कत्ल किया जाएगा और यह भी लिखा है कि वह जो सलीब पर लटका कर मारा जाता है वह ख़ुदा का मलऊन (धिक्कृत) होता है।

फिर यहूद और ईसाइयों की सामूहिक साक्ष्य मौजूद है कि बहरहाल मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर अवश्य लटकाया गया तथा यही दो जातियां हैं जो इस मामले में मूल गवाह हो सकती हैं। आगे इस बात के निर्णय में कि मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर मरा या कि नहीं मरा।

क़ुर्आन करीम की स्पष्ट साक्ष्य मौजूद है कि वह नहीं मरा और स्वयं इन्जील से ध्यानपूर्वक अध्ययन करने के फलस्वरूप यही सिद्ध होता है कि वह सलीब पर नहीं मरा, परन्तु इस विस्तार की गुंजायश नहीं है, केवल संक्षिप्त तौर पर इतना स्मरण रखना चाहिए कि (1) मसीह का सलीब पर मात्र दो-चार घंटे रहना जो सामान्य परिस्थितियों में एक स्वस्थ और युवा मनुष्य की मृत्यु के लिए पर्याप्त नहीं था (2) सलीब से उतरने के पश्चात् नियमानुसार उसकी हड्डियों का न तोड़ा जाना, जब कि उसके साथ के दो व्यक्ति सलीब पर चढ़ाए गए अपराधियों की हड्डियां तोड़ी गईं। (3) उस समय वहा चारों और घोर अन्धकार का व्याप्त हो जाना तथा भयंकर भूकम्प का आना (4) रोम के शासक पैलातूस की पत्नी का स्वप्न कि मसीह निर्दोष है इसे छोड़ दिया जाए। (5) अगला दिन सब्त का दिन होना जब कि शरीअत की दृष्टि से सलीब पर कोई अपराधी नहीं रखा जा सकता था (6) पैलातूस की मसीह को मुक्त करने की इच्छा (7) स्वयं मसीह का विनय और गिड़गिड़ा कर ख़ुदा से दुआएं करना कि यह प्याला उस से टल जाए। (8) पैलातूस का मसीह की कथित मृत्यु के बारे में सन्देह करना (9) मसीह का स्वयं को यूनुस नबी अलैहिस्सलाम के साथ समरूप ठहराना जो तीन दिन मछली के पेट में जीवित रहकर अन्ततः जीवित ही बाहर निकल आया था (10) मसीह के हमदर्दों और मित्रों का प्रयास कि मसीह किसी प्रकार बच जाए (11) उन का उसे सलीब से उतारने के पश्चात् उसके शरीर को सरकार से मांगना तथा उसे एक हवादार और गुफ़ा जैसी खुली क़ब्र में रखना (12) उस के शरीर से बरछी मारने पर रक्त का निकलना (13) मसीह के बारे में रहस्यमयी ढंग से भेद छुपाने के लिए चौकीदारों को रिश्वत दिया जाना (14) मसीह अलैहिस्सलाम का सलीबी घटना के पश्चात् गुप्त रूप से क़ब्र से ग़ायब होना तथा अपने कुछ हवारियों से मिलना और उन्हें अपने घाव दिखाना तथा इधर-उधर आते जाते देखा

जाना (15) एक मरहम का मौजूद होना जो सदियों से चिकित्सा (तिब्ब) की पुस्तकों में मरहम-ए-ईसा के नाम पर प्रसिद्ध चला आता है जो उसके घावों पर लगाया गया था (16) फिर मसीह का यह कहना कि मैं बनी-इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के लिए भेजा गया हूँ जिसके कारण उसका अफ़ग़ानिस्तान और कश्मीर की ओर जाना आवश्यक था जहां बनी इस्राईल के बहुत से क़बीले आबाद थे इत्यादि-इत्यादि। ये समस्त बातें स्पष्ट तौर पर बता रही हैं कि इन्जील के अनुसार भी यह कदापि सिद्ध नहीं होता कि मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर मरा हो अपितु सत्य यही है कि वह घावों की सख़्त पीड़ा के कारण एक गहरी बेहोशी की अवस्था में था, परन्तु जब उसकी भली-भांति देख-रेख की गई तो वह स्वस्थ हो गया और गुप्त तौर पर अपने देश से प्रवास करके बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों की खोज में दूसरे देश की ओर प्रस्थान कर गया।

बहस के अन्तर्गत आयत में जो شُبِّهَ لَهُمْ के शब्द हैं उनके ये अर्थ करना कि कोई और व्यक्ति मसीह के समरूप बना दिया गया था बिल्कुल ग़लत और हास्यास्पद बात है। प्रथम तो यह सरासर अन्याय है कि **एक** व्यक्ति के स्थान पर दूसरे निर्दोष व्यक्ति को सलीब पर चढ़ा दिया जाए। **द्वितीय**-यह कि उन शब्दों के किसी नियम के अन्तर्गत ये अर्थ नहीं हो सकते कि मसीह के सदृश कोई और व्यक्ति बना दिया गया, क्योंकि شُبِّهَ का शब्द भूतकाल कर्मवाचक है तथा इस का सर्वनाम एक वचन अज्ञात और छुपा हुआ है* और इस शब्द के अर्थ ये हैं कि ''समरूप बना दिया गया'' और

---

* अरबी भाषा के मुहावरे के अनुसार यह शक्ल भी हो सकती है कि شُبِّهَ में कोई गुप्त सर्वनाम (ضمير) न माना जाए अपितु لَهُمْ को ही सहायककर्ता माना जाए। इस स्थिति में وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ के यह अर्थ होंगे कि यहूद पर मामला संदिग्ध हो गया। ये अर्थ भी अरबी बोल-चाल के अनुसार बिल्कुल ठीक और उचित है।

यही अर्थ हमारे विरोधी भी स्वीकार करते हैं, परन्तु प्रश्न यह है कि कौन समरूप बना दिया गया है और किसके संदिग्ध बना दिया गया? हमारे विरोधी मौलवी लोग इस अवसर पर एक बाहरी व्यक्ति को अकारण मध्य में ले आते हैं कि उसे मसीह के समरूप बना दिया गया, हालांकि किसी बाहरी व्यक्ति का इस आयत में क्या, इसके करीब-करीब भी कोई चर्चा नहीं है। स्पष्ट है कि जो समरूप बनाया गया और जिसके समरूप बनाया गया उन दोनों का आयत के अन्दर या उस से मिलता-जुलता वर्णन होना चाहिए। किसी को कोई अधिकार नहीं कि अपनी ओर से कोई बात क़ुर्आन करीम के अन्दर डाल दे। यह तो यहूदियों वाला अक्षरान्तरण हो जाएगा। आयत में केवल मसीह की चर्चा है या इस बात की चर्चा है कि यहूद ने दावा किया कि मसीह क़त्ल किया गया और सूली दिया गया है। अत: आवश्यक है कि उन्हीं में से कोई समरूप बना तथा उन्हीं में से किसी के समरूप बना। अत: विचार कीजिए कि आयत के अर्थ कैसे स्पष्ट हो गए وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ अर्थात् यहूद ने मसीह को क़त्ल कदापि नहीं किया और न सलीब पर मारा, परन्तु मसीह उनकी दृष्टि में मक़्तूल (वधित) और मस्लूब (फांसी दिया गया) के समान अवश्य हो गया और यही हमने ऊपर वर्णन किया है कि यहूद को मसीह के मामले में धोखा लगा रहा। लोगों ने समझा कि मसीह सलीब पर मर गया है हालांकि वह केवल मूर्च्छावस्था में था जो बाद में जाती रही तथा इलाज द्वारा मसीह अलैहिस्सलाम स्वस्थ हो गया। अल्लाह तआला ने मसीह अलैहिस्सलाम को यहूद के उपद्रव से बचाने का यह उपाय किया कि उनकी दृष्टि में मसीह मस्लूब (सलीब पर मारा हुआ) के समान कर दिया गया, परन्तु अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि वे विचार करते और इस मामले में केवल अनुमान का अनुसरण न करते तथा पूर्ण जांच-पड़ताल से काम लेते तो उन्हें ज्ञात हो जाता कि वे मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर मारने में

समर्थ नहीं हो सके अपितु كَفَّ اللّٰهُ عَنْهُ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ

अत: यह तो निर्णय हुआ कि मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर लटकाया तो गया परन्तु वह सलीब पर मरा नहीं अपितु उसे ख़ुदा ने यहूद के बुरे इरादों से सुरक्षित रखा, परन्तु यहां स्वाभाविक तौर पर यह विचार अवश्य पैदा होता है कि मसीह अलैहिस्सलाम इसके पश्चात् गया कहां? कदाचित दर्शकों का विचार हो कि इस मामले में क़ुर्आन करीम ख़ामोश होगा, परन्तु नहीं, जब वह किसी समस्या को लेता है तो उसके हर पहलू पर प्रकाश डालता है। अत: इस समस्या पर भी वह ख़ामोश नहीं है। देखिए ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है :-

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ

(अलमोमिनून रुकू-3)

अर्थात् *"हमने मसीह और उसकी मां को एक निशान बनाया और उन दोनों को हमने एक ऐसे स्थान की ओर शरण दी जो बुलन्द थी तथा जिसमें झरने जारी थे।"*

इस आयत में जो शब्द آوٰی अर्थात् शरण प्रयोग हुआ है वह स्पष्ट तौर पर इस ओर संकेत कर रहा है कि यह सलीबी घटना के बाद का अवसर है जब मसीह यहूद के उपद्रव से बाल-बाल बचा। देखिए इस आयत में अल्लाह तआला कैसे स्पष्ट शब्दों में फ़रमाता है कि मसीह को एक बुलन्द स्थान की ओर शरण दी गई जो झरनों वाली थी। अत: हम देखते हैं तो कश्मीर का क्षेत्र इस वर्णन पर चरितार्थ होता है। इसलिए जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब का इस बात की ओर ध्यान गया तो एक लम्बे समय की छान-बीन के पश्चात् यह स्पष्ट ज्ञात हो गया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब से बचकर अफ़ग़ानिस्तान और कश्मीर की ओर प्रवास करके आ गए थे। इसका कारण यह है कि मसीह का अवतरण बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के लिए था, जैसा कि स्वयं मसीह के शब्दों से स्पष्ट है कि मैं बनी इस्राईल

की खोई हुई भेड़ों की ओर भेजा गया हूँ। अत: इतिहास हमें बताता है कि बनी–इस्राईल की कुछ जातियां मसीह से पूर्व अफ़ग़ानिस्तान और कश्मीर के क्षेत्रों में आकर आबाद हो गई थीं। देख लीजिए कि कश्मीर का शब्द ही इस ओर संकेत कर रहा है। यह 'काफ़' और 'शमीर' को मिलाने से बना है जो वास्तव में 'अशीर' था तथा बिगड़ कर 'शीर' और फिर उच्चारण की कठिनाई के कारण 'शमीर' बन गया तो जैसे कश्मीर के अर्थ हुए 'कअशिर' अर्थात् 'अशीर' की तरह का देश। संसार जानता है कि अशीर इब्रानी भाषा में असीरिया अर्थात् शाम के देश को कहते हैं। यह कश्मीर का नाम बनी इस्राईल ने ही आकर रखा था, क्योंकि नियम है कि अपने मूल देश के नाम पर लोग अपने नए देशों के नाम रख लिया करते हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने इतनी खोज के पश्चात् कश्मीर का इतिहास तलाश किया तो पुरानी घटनाओं में मिल गया कि लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व किसी बाहरी देश से यहां एक शहज़ादा नबी आया था जिसका नाम यूज़ आसिफ़ था जो स्पष्ट तौर पर यसू शब्द से बिगड़ा हुआ मालूम होता है। अन्तत: मसीह अलैहिस्सलाम की क़ब्र भी मुहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में मिल गई। इस क़ब्र के बारे में भी वहीं की गवाही और इतिहास से पता किया गया तो यही विदित हुआ कि यह उसी यूज़ आसिफ़ की क़ब्र है जो उन्नीस सौ वर्ष पूर्व कश्मीर में आया था। अतिरिक्त सबूत यह मिला कि वह क़ब्र और उसके साथ वाली मसीह की माँ की क़ब्र* ठीक उसी ढंग पर बनी हुई हैं जिस प्रकार बनी इस्राईल की क़ब्रें होती थीं। इसके अतिरिक्त मसीह के प्रवास का एक प्रमाण यह है कि मसीह शब्द के अर्थ लम्बी यात्रा करने वाले के हैं तथा स्पष्ट है कि मसीह के अतिरिक्त अन्य किसी नबी ने इतनी लम्बी यात्राएं नहीं कीं। एक हदीस में भी आया है कि :–

---

* यह भूल से लिखा गया है। वास्तव में उनके साथ वाली क़ब्र एक अन्य बुज़ुर्ग की है। (प्रकाशक)

اَوْحَى اللّٰہُ تَعَالٰی اِلٰی عِیْسٰی اَنْ یَّا عِیْسٰی اِنْتَقِلْ مِنْ مَّکَانٍ اِلٰی مَکَانٍ لِئَلَّا تُعْرَفَ فَتُؤْذٰی

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द द्वितीय, पृष्ठ-34)

अर्थात् *"अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को वह्यी की कि हे ईसा तू एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर निकल जा ताकि ऐसा न हो कि तू पहचाना जाए और तुझे कष्ट में डाला जाए।"*

यह हदीस स्पष्टता के साथ सलीबी घटना के पश्चात् की परिस्थितियों की ओर संकेत करती है क्योंकि उसी समय यह भय उत्पन्न हुआ था कि यदि यहूद मसीह को दोबारा देख लेंगे तो पुनः उपद्रव करेंगे।

नुज़ूल की वास्तविकता

तत्पश्चात् हम फिर अपने मूल लेख की ओर लौटते हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा और नुज़ूल के साथ संबंध रखता है। हमारे विरोधी मौलवी लोग मसीह अलैहिस्सलाम के आकाश पर जीवित जाने के सबूत में एक तर्क यह दिया करते हैं कि हदीसों में आने वाले मसीह के संबंध में नुज़ूल का शब्द प्रयोग किया गया है जो उतरने के अर्थों में आता है। इस से सिद्ध हुआ कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे और स्पष्ट है कि आकाश से वह केवल इस स्थिति में ही उतर सकते हैं जब कि वह आकाश की ओर उठाए गए हों। इसके उत्तर में भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि प्रथम तो किसी सही हदीस में मसीह के संबंध में नुज़ूल के साथ (سَمَاء) का शब्द प्रयोग नहीं हुआ ताकि आकाश से उतरने के अर्थ लिए जाएं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने कई हज़ार रुपये का इनाम उस व्यक्ति के लिए निर्धारित किया जो कोई मरफ़ू* मुत्तसिल हदीस

* वह हदीस जिसकी सनद रसूल करीम (स.अ.व.) तक पहुँचे और मुत्तसिल यह कि उस हदीस की सनद में आदि से अन्त तक वर्णनकर्ताओं में से कोई एक भी वर्णनकर्ता न टूटे। (अनुवादक)

ऐसी प्रस्तुत करे जिसमें मसीह के बारे में जीवित आकाश पर जाने और फिर आकाश से उतरने के शब्द नबी करीम (स.अ.व.)ने फ़रमाए हों, परन्तु आज तक कोई विरोधी ऐसी हदीस प्रस्तुत नहीं कर सका। इस से दर्शकगण परिणाम निकाल सकते हैं कि ऐसी कोई हदीस उपलब्ध ही नहीं।

इसके अतिरिक्त नुज़ूल (उतरना) के अर्थ पर भी विचार नहीं किया गया। अरबी भाषा में नुज़ूल के अर्थ प्रकट होने और आने के भी हैं जैसा कि अरबी शब्द कोशों से प्रकट है। स्वयं ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है:-

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ

(सूरह तलाक़ रकू-2)

अर्थात् *"अल्लाह ने तुम्हारी ओर याद कराने वाला रसूल भेजा है जो तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ता है।"*

इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में 'नुज़ूल' का शब्द प्रयोग किया गया है, हालांकि सब जानते हैं कि नबी करीम (स.अ.व.) आकाश से नहीं उतरे थे अपितु अरबों में ही जन्म लेकर अवतरित किए गए थे। अतः क़ुर्आन करीम फ़रमाता है :-

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

अर्थात् *"अल्लाह तआला ने यह रसूल तुम में तुम्हीं में से प्रकट किया है।"*

फिर क़ुर्आन करीम फ़रमाता है :-

وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ (सूरह हदीद रुकू-3)

अर्थात् *"हमने लोहा उतारा है जिसमें युद्ध का सामान है तथा लोगों के लिए और भी बहुत से लाभ हैं।"*

लीजिए लोहा भी आकाश से उतर रहा है, हालांकि सब उसे पृथ्वी से ही

खोद कर निकालते हुए देखते हैं। पुन: फ़रमाता –

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ (आराफ़ रकू-3)

अर्थात् *"हे आदम की संतान (लोग) हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे नंगेपन को ढकता है।"*

इस आयत में लिबास के लिए भी नुज़ूल का शब्द वर्णन हुआ है, हालांकि लिबास तो रुई इत्यादि से पृथ्वी पर तैयार किया जाता है। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम फ़रमाता है:-

وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ (ज़ुमर रुकू-1)

अर्थात् *"ख़ुदा ने तुम पर चौपाए (जानवर) उतारे हैं।"* हालांकि घोड़े, गधे और बैल सब पृथ्वी पर ही पैदा होते हैं।

इन समस्त आयतों से स्पष्ट है कि नुज़ूल के अर्थ शाब्दिक तौर पर हमेशा उतरने के ही नहीं होते अपितु नुज़ूल का शब्द अधिकतर उस वस्तु के लिए प्रयोग किया जाता है जो अल्लाह तआला की ओर से मनुष्य को पुरस्कार के तौर पर दी जाती है और चूंकि ऐसी ने'मत ख़ुदा की ओर से आती है इसलिए उसके बारे में नुज़ूल का शब्द प्रयोग कर लिया जाता है अपितु प्राय: अरबी बोल-चाल में नुज़ूल का शब्द मात्र प्रकट के अर्थ भी देता है और यह तो लगभग सभी लोग जानते हैं कि नज़ील का शब्द मुसाफ़िर पर भी बोला जाता है और जिस स्थान पर सफर के बाद ठहरा जाए उसे मन्ज़िल कहते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ हदीसों में मसीह के बारे में बअस और ख़ुरूज (بَعَث اور خُرُوْج) के शब्द भी आए हैं (कन्ज़ुल उम्माल) जो नुज़ूल के अर्थों का बड़ी स्पष्टता के साथ निर्धारण कर देते हैं क्योंकि इस स्थिति में जो भाव बअस, ख़ुरूज और नुज़ूल में पाया जाता है (अर्थात् प्रकट होने का) वही सही और उचित माना जाएगा। अत: शब्द नुज़ूल से यह परिणाम निकालना कि मसीह आकाश से उतरेगा एक नितान्त ग़लत मार्ग है जिस से प्रत्येक बुद्धिमान को बचना चाहिए। क़ुर्आन करीम किसी मनुष्य के पार्थिव

शरीर के साथ आकाश पर जाने को स्पष्ट शब्दों में निषिद्ध ठहराता है। मसीह के जीवित आकाश पर जा बैठने की कोई हदीस साक्ष्य नहीं देती अपितु विरोधी है तथा मानव-बुद्धि इस आस्था को दूर से ही धक्के देती है तो फिर अकारण हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के आकाश पर बैठे होने की कल्पना क्यों की जाए।

अध्याय-द्वितीय

(मसीह की मृत्यु की समस्या पर बहस)

इस लेख का दूसरा भाग विशेषकर मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु से सम्बद्ध है। अब तक मैंने यह सिद्ध किया है कि हज़रत मसीह आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित नहीं गए तथा इसके समर्थन में बहुत सी क़ुर्आनी आयतें और नबी करीम (स.अ.व.)की हदीसें प्रस्तुत की हैं। यदि कोई सज्जन ठंडे हृदय से विचार करें तो उन पर प्रकाशमान दिन की तरह प्रकट हो जाएगा कि इस्लामी शिक्षानुसार यह कदापि सिद्ध नहीं होता कि मसीह नासिरी को पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठा लिया गया। अब मैं बताता हूँ कि मसीह मृत्यु भी पा चुका है।

नबी करीम से पूर्व जितने रसूल गुज़रे हैं सब मृत्यु पा चुके हैं।

क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ

(सूरह आले इमरान रुकू-15)

अर्थात् *मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) अल्लाह के केवल एक रसूल हैं और उन से पहले जितने रसूल हुए हैं सब गुज़र गए तो क्या यदि मुहम्मद (स.अ.व.) भी स्वाभाविक तौर पर मृत्यु पा जाएं अथवा क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे?*

यह आयत स्पष्ट तौर पर नबी करीम (स.अ.व.) से पूर्व गुज़रे हुए नबियों की मृत्यु की सूचना देती है और उनके बारे में बताती है कि वे सब के सब मृत्यु पा चुके हैं और स्पष्ट है कि हज़रत मसीह नासिरी भी एक रसूल थे जो नबी करीम (स.अ.व.) से छः सौ वर्ष पूर्व अवतरित किए गए थे। अतः अनिवार्य तौर पर मानना पड़ा कि वह भी मृत्यु पा चुके हैं। यदि इस आयत पर यह एतिराज़ किया जाए कि **خَلَا** के अर्थ केवल गुज़र जाने के हैं इसलिए इस आयत से निश्चित तौर पर मृत्यु सिद्ध नहीं होती, क्योंकि यदि एक व्यक्ति जीवित आकाश पर उठा लिया जाए तो उसके बारे में भी कहा जा सकता है कि वह नहीं रहा और गुज़र गया है तो इस आरोप के उत्तर में दो बातों का स्मरण रखना आवश्यक है। **प्रथम**- यह कि अरबी भाषा में **خَلَا** (ख़ला) के अर्थ **مَاتَ** (अर्थात् मर गया) के भी होते हैं। अतः ताजुल उरूस जो अरबी भाषा का नितान्त प्रमाणित शब्द-कोश है उसमें लिखा है कि-

خَلَا فُلَانٌ: اِذَا مَاتَ

"अर्थात् जब कोई व्यक्ति मर जाए तो कहते हैं कि "ख़ला फ़ुलानुन" अर्थात् अमुक व्यक्ति मर गया"

इसका **दूसरा** उत्तर यह है कि स्वयं इस आयत में अल्लाह तआला ने

'ख़ला' के अर्थों का निर्धारण कर दिया है, जैसा कि फ़रमाया :-

اَفَاۡئِنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ

अर्थात् *"यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह स्वाभाविक मृत्यु से मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं।"*

तो मानो यहां 'ख़लत' शब्द के अर्थ अनिवार्य रूप से इन दो प्रकारों में से एक के होने चाहिएं अर्थात् या तो यह कि वह स्वाभाविक मौत से मर गए और या वह क़त्ल हुए। ये शब्द कि اَفَاۡئِنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ (अफ़इम्माता औ क़ुतिला) स्पष्ट बता रहे हैं कि पूर्व नबियों का गुज़र जाना इन्हीं दो प्रकारों में से किसी एक में हुआ था अर्थात् या तो वे स्वाभाविक मौत से मृत्यु पाते रहे और या फिर क़त्ल होते रहे। यदि पूर्व नबियों में से कोई नबी आकाश की ओर उठाया गया होता अथवा उपरोक्त दोनों प्रकारों के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार से किसी पूर्व नबी का गुज़र जाना घटित हुआ होता तो यहां अनिवार्य तौर पर उस प्रकार का वर्णन होना चाहिए था या कम से कम मसीह का अपवाद स्वरूप ही वर्णन कर दिया जाता, परन्तु ऐसा नहीं किया गया। इस से स्पष्ट है कि उपरोक्त आयत में ख़ला के अर्थ या तो स्वाभाविक मृत्यु द्वारा मरने के लिए जाएंगे और या क़त्ल के द्वारा इस नश्वर संसार को छोड़ जाने के, परन्तु मसीह के बारे में अल्लाह तआला की स्पष्ट साक्ष्य विद्यमान है कि مَاقَتَلُوۡهُ (मा क़तलूहो) अर्थात् मसीह के विरोधी उसके क़त्ल पर समर्थ नहीं हुए। इसलिए अनिवार्य तौर पर दूसरा प्रकार ही स्वीकार करना होगा अर्थात् यह मानना होगा कि मसीह ने मृत्यु के द्वारा यह संसार छोड़ा है और यही हमारा उद्देश्य है। बहस के अन्तर्गत आयत की व्याख्या करते हुए व्याख्याकार समान्यतः इस आयत के साथ ये शब्द संलग्न कर देते हैं कि :-

وَسَيَخۡلُوۡا كَمَا خَلَوۡا بِالۡمَوۡتِ اَوِ الۡقَتۡلِ

अर्थात् *"नबी करीम (स.अ.व.) भी संसार को इसी प्रकार छोड़ जाएंगे जिस प्रकार पूर्व नबी मृत्यु के द्वारा या क़त्ल द्वारा संसार को छोड़ते रहे हैं।"*

मसीह की मृत्यु पर सहाबा की सर्वसम्मति

इस आयत के अर्थ और भी अधिक स्पष्ट हो जाते हैं जब हम इसे एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना के प्रकाश में देखते हैं। हदीस में लिखा है कि जब नबी करीम (स.अ.व.) की मृत्यु हुई तो संयोग ऐसा हुआ कि हज़रत उमर रज़ि. अभी तक आप (स.अ.व.) को जीवित ही समझ रहे थे और कहते थे कि आप फिर वापस आ जाएंगे तथा काफ़िरों और मुनाफ़िकों (द्वय मुखी लोग) का विनाश करेंगे। वह अपने इस विचार पर इतने दृढ़ थे कि उन्होंने तलवार खींच कर घोषणा आरम्भ कर दी कि जो व्यक्ति भी नबी करीम (स.अ.व.) को मृत्यु प्राप्त कहेगा मैं उसकी गर्दन काट दूँगा। उस समय हज़रत अबू बकर खड़े हुए और सहाबा के सामने यही आयत पढ़ी कि :-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ۔

अर्थात् *"मुहम्मद (स.अ.व.) तो केवल एक रसूल थे उन से पूर्व जो रसूल गुज़रे हैं वे सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं"....अन्त तक*

लिखा है कि हज़रत उमर रज़ि. पर इस बात के सुनते ही इतना शोक व्याप्त हुआ कि वह पृथ्वी पर गिर पड़े, क्योंकि उन्होंने उस समय महसूस कर लिया जिसे वह अपने शोक के सामयिक आवेग में महसूस नहीं कर रहे थे कि उनका प्रिय स्वामी भी अल्लाह का केवल एक रसूल था जिस ने पूर्व नबियों की भांति मौत के द्वार से गुज़रना था। (बुख़ारी किताबुल मनाक़िब)

अब प्रश्न यह है कि यदि कोई पूर्व नबी इस समय तक जीवित होता तो हज़रत अबू बकर रज़ि. के इस सबूत पर कि चूंकि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं इसलिए स्वाभाविक तौर पर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को भी मृत्यु पाना आवश्यक है। आदरणीय सहाबा अवश्य ऐतिराज़ करते और विशेष तौर पर हज़रत उमर रज़ि. और उनकी विचारधारा से सहमत लोग

जो पहले ही से आंहज़रत (स.अ.व.) को अभी तक जीवित समझ रहे थे वे अवश्य चिल्लाने लगते कि यह क्या बात कह रहे हो? परन्तु समस्त सहाबा ने हज़रत अबू बकर रज़ि. के साथ सहमत होकर इस तर्क पर मुहर लगा दी कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से पूर्व समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं। मानो आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् सहाबा रज़ि. की सब से पहली सर्वसम्मति (इज्माअ) (अपितु सत्य यह है कि इस्लाम का एकमात्र सर्व सम्मति)यही थी कि पूर्व अंबिया सब के सब मृत्यु पा चुके हैं। विचारणीय है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर यह कैसा साफ और स्पष्ट सबूत है, परन्तु खेद कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विरोधी इस प्रकार के साफ और ठोस सबूत की ओर भी ध्यान नहीं देते और यही कहे जाते हैं कि بَلْ نَتَّبِعُ مَا اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَاءَنَا परन्तु समाधान योग्य बात यह है कि اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ अच्छा अब आगे चलिए।

मसीह नासिरी (ईसा अलैहिस्सलाम) का 'रफ़ा' मृत्योपरान्त हुआ

क़ुर्आन करीम फ़रमाता है:-

يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(सूरह आले इमरान रकू-6)

"अर्थात् हे ईसा मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मृत्यु से मौत दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊँगा और तुझे पवित्र करूँगा उन लोगों से जिन्होंने कुफ़्र किया और तेरे अनुयायियों का तेरे इन्कार करने वालों पर प्रलय तक प्रभुत्व रखूँगा।"

इस आयत में अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से चार वादे फ़रमाए हैं जो विशेष क्रम में क्रमबद्ध हैं। अर्थात् (1) **मृत्यु** (2) **रफ़ा** (3) **पवित्रता** (4) **विजय और प्रभुत्व**। अत: यह विचार करना कि पिछले तीन वादे तो पूरे हो चुके हैं, परन्तु पहला वादा अभी तक पूरा होने में नहीं आया सरासर हठधर्मी है। क़ुर्आन करीम अल्लाह तआला का कलाम है और उसके शब्द मोतियों की भांति अपने-अपने स्थान पर जड़े गए हैं। किसी को यह अधिकार नहीं कि क़ुर्आन के शब्दों को इधर-उधर कर दे। यदि इस प्रकार से होने लगे तो शान्ति उठ जाए। अल्लाह तआला यहूदियों को इसलिए धिक्कारता और फ़टकारता है कि-

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

"अर्थात् वे दुर्भाग्यशाली लोग ख़ुदाई कलाम में काट-छांट करते तथा शब्दों को उनके स्थान से उलट-पुलट कर देते थे।"

परन्तु अत्यन्त खेद कि आज मुसलमानों ने भी वही किया जो यहूदी लोग किया करते थे और केवल मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विरोध के कारण कह दिया कि इस आयत में वास्तव में 'राफ़िओका' पहले रखना चाहिए और मुतवफ़्फ़ीका (مُتَوَفِّيْكَ) बाद में रखना चाहिए ताकि किसी प्रकार मसीह जीवित सिद्ध हो जाए, परन्तु कम से कम कुछ व्याख्याकारों ने तथा आजकल के मौलवियों के इस प्रयास ने हमें स्पष्ट तौर पर बता दिया कि 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ उनके निकट भी वास्तव में मृत्यु देने के ही हैं अन्यथा पहले और बाद में रखने के प्रयास के क्या अर्थ? क्योंकि उनका हृदय कहता है कि 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ मारने के ही हैं, इसलिए वे शब्दों को आगे-पीछे करने की आड़ लेकर तावील (व्याख्या) करना चाहते हैं। बहरहाल अब मामला बिल्कुल स्पष्ट है। अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा से वादा किया कि वह उसे मृत्यु देगा और उसे अपनी ओर उठाएगा और उसे काफ़िरों के आरोपों से पवित्र करेगा और उसके अनुयायियों को

उसके इन्कार करने वालों पर प्रलय तक विजयी रखेगा। हमारे विरोधी यह स्वीकार करते हैं कि दूसरा वादा जो मसीह अलैहिस्सलाम के रफ़ा से संबंध रखता है वह पूरा हो चुका तथा ख़ुदा ने मसीह अलैहिस्सलाम को अपनी ओर उठा लिया। तीसरे वादे के अनुसार क़ुर्आन करीम के द्वारा अल्लाह ने यहूदियों के आरोपों से मसीह को पवित्र भी सिद्ध कर दिया और अन्ततः चौथे वादे के अनुसार मसीह के अनुयायियों को उसके इन्कार करने वालों पर प्रभुत्व भी प्राप्त हो गया, परन्तु आश्चर्य है कि अभी तक सब से प्रथम वादा अर्थात् मृत्यु वाला वादा पूर्ण नहीं हुआ परन्तु मज़ेदार बात यह है कि यदि यह मान लिया जाए कि पहला वादा अभी पूरा नहीं हुआ तो फिर यह मानना पड़ेगा कि इस स्थिति में इस वादे के पूरा होने का समय बहरहाल अन्तिम वादे के पश्चात् आएगा क्योंकि अन्तिम तीन वादे पूर्ण हो चुके हैं परन्तु कठिनाई यह है कि अन्तिम वादे का दामन प्रलय तक फैला हुआ है जैसा कि اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ के शब्दों से प्रकट है तो जैसे प्रलय तक तो हज़रत मसीह पर मृत्यु आती नहीं और जब प्रलय आएगी और समस्त संसार के मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे उस समय मसीह की रूह निकाली जाएगी, परन्तु इसमें एक अन्य कठिनाई का सामना है और वह यह कि प्रलय का दिन तो जीवित करने का दिन है न कि मारने का। तो जैसे परिणाम यह निकला कि हज़रत मसीह मृत्यु के पन्जे से बिल्कुल ही छूट गए। चलिए निर्णय हुआ। इस विषय पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:-

> ''तवफ़्फ़ा का शब्द यदि आयत के सर से उठा दिया जाए तो उसे किसी दूसरे स्थान में प्रलय से पूर्व रखने की कोई जगह नहीं। अतः इस से तो यह अनिवार्य हो जाता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय के पश्चात् मरेंगे और पहले मरने से यह क्रम बाधक है। अतः देखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम का यह चमत्कार है कि हमारे विरोधी यहूदियों की भांति क़ुर्आन करीम में परिवर्तन

करने पर सहमत तो हुए, परन्तु समर्थ नहीं हो सके और कोई स्थान दिखाई नहीं देता जहां वाक्य राफ़िओका को उसके स्थान से उठाकर उस स्थान पर रखा जाए। प्रत्येक स्थान की पूर्ति इस प्रकार हो चुकी है कि हस्तक्षेप की गुंजायश नहीं।''

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया भाग पंचम)

अत: हम विवश हैं कि जो क्रम नीतिवान और बहुत ज्ञान रखने वाले अल्लाह ने क़ुर्आनी शब्दों का रखा है उसे स्वीकार करें और अपनी ओर से एक नया क़ुर्आन न बनाएं। चूंकि पिछले तीन वादे पूरे हो चुके हैं इसलिए अनिवार्य तौर पर स्वीकार करना पड़ा कि पहला वादा जो मसीह की मृत्यु के बारे में है वह भी पूरा हो चुका होगा। सांकेतिक तौर पर यह आयत रफ़ा के अर्थ भी स्पष्ट कर रही है, क्योंकि अल्लाह तआला ने रफ़ा का वादा मृत्यु के वादे के पश्चात् रखा है। अत: ज्ञात हुआ कि यहां रफ़ा उन्हीं अर्थों में है जो आयत يَاَيَّتُهَاالنَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِىٓ اِلٰى رَبِّكِ में वर्णन किए गए हैं अर्थात् जिस प्रकार मृत्यु के पश्चात् सदाचारी रूहों का ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा हुआ करता है, बुरी रूहों का अल्लाह तआला की ओर रफ़ा नहीं हुआ करता। इन्हीं अर्थों में मसीह का रफ़ा हुआ।

'मुतवफ़्फ़ीका' शब्द के अर्थ

इस आयत के बारे में कुछ विरोधी कहा करते हैं कि इसमें जो मुतवफ़्फ़ीका शब्द आया है उसके अर्थ रूह निकालने अर्थात् मृत्यु देने के नहीं हैं अपितु पूर्ण रूप से उठा लेने के हैं। इसके उत्तर में पूर्व इसके कि मैं शब्दकोष के अनुसार तवफ़्फ़ा के अर्थ वर्णन करूँ, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम का एक वक्तव्य प्रस्तुत करता हूँ जिसमें इस ऐतिराज़ का उत्तर दिया गया है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

''ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ के 23 स्थानों में तवफ़्फ़ा शब्द को रूह निकालने के अवसर पर प्रयोग किया है। आरम्भ से अन्त तक क़ुर्आन शरीफ़ में तवफ़्फ़ी का शब्द ऐसा नहीं जिस के अर्थ रूह निकालने और मृत्यु देने के अतिरिक्त कोई और हों और फिर सबूत पर सबूत यह कि सही बुख़ारी में इब्ने अब्बास से 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ 'मुमीतुका' लिखे हैं। इसी प्रकार तफ़्सीर 'फ़ौज़ुलकबीर' में भी यही अर्थ लिखे हैं तथा किताब ऐनी तफ़्सीर बुख़ारी में इस कथन के प्रमाण का क्रम वर्णन किया है............ हदीसों में जहां कहीं तवफ़्फ़ा का शब्द किसी रूट में आया है वह मारने के ही अर्थ में आया है। जैसा कि हदीस के विद्वान भली-भांति जानते हैं तथा भाषा विज्ञान में यह प्रमाणित, मान्य और सर्वसम्मत बात है कि जहां ख़ुदा कर्ता और मनुष्य कर्म हो और शब्द तवफ़्फ़ा हो वहां मारने के अतिरिक्त अन्य कोई अर्थ नहीं होते। अरब के समस्त कवियों के काव्य संग्रह इस पर साक्षी हैं। अतः इस से अधिक अन्याय क्या होगा कि क़ुर्आन उच्च स्वर में कह रहा है, परन्तु कोई नहीं सुनता, हदीस गवाही दे रही है परन्तु कोई परवाह नहीं करता, अरब का शब्दकोश साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा है परन्तु कोई देखने का कष्ट नहीं करता, अरब के कवियों के काव्य संग्रह इस शब्द के मुहावरे बता रहे हैं परन्तु किसी के कान सुनने के लिए तैयार नहीं होते।''

(तुहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ-4)

अधिक सन्तुष्टि के लिए शब्दकोश देखिए, छोटे-मोटे शब्दकोश की साक्ष्य तो हमारे मौलवी लोग शायद टाल दें, इसलिए हम सब से बड़ी प्रसिद्ध और प्रमाणित किताब (डिक्शनरी) 'ताजुलउरूस' को साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत करते हैं। ताजुलउरूस में लिखा है:-

تَوَفَّاهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اِذَا قَبَضَ نَفْسَهٗ

अर्थात् *" 'तवफ़्फ़ाहुल्लाहो' के ये अर्थ हैं कि ख़ुदा ने उसकी रूह (आत्मा) निकाल ली"* (अपने अधिकार में ले लिया)

और यह भी लिखा है:-

تُوُفِّيَ فُلَانٌ: اِذَا مَاتَ

अर्थात् *" 'तुवुफ़्फ़िया फ़ुलानुन' के ये अर्थ हैं कि अमुक व्यक्ति मर गया"*

फिर प्रकाण्ड विद्वान ज़मख़शरी लेखक ''तफ़्सीर कश्शाफ़'' मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ लिखते हैं:-

مُمِيْتُكَ حَتْفَ اَنْفِكَ

अर्थात् *"मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मौत से मृत्यु दूंगा।"*

और सब से बढ़कर यह कि स्वयं सही बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. की रिवायत से लिखा है कि 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ मुमीतुका के हैं। अर्थात मैं तुम्हें मृत्यु दूँगा। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

अत: यह बात निश्चित है कि बहस के अन्तर्गत आयत में 'इन्नी मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ केवल यही हैं कि मैं तुझे मृत्यु दूँगा। इसमें सन्देह नहीं कि चूंकि तवफ़्फ़ा के वास्तविक अर्थ रूह निकालने के हैं जो एक सीमा तक निद्रावस्था में भी होता है, इसलिए तवफ़्फ़ा का शब्द प्राय: केवल नींद के समय रूह निकालने के अर्थ भी देता है, परन्तु इन अर्थों के लिए किसी लक्षण का होना अनिवार्य होता है अन्यथा जब यह शब्द बिना लक्षण या बिना अनुकूलता के प्रयोग हो तथा ख़ुदा कर्ता हो और मनुष्य कर्म तो इसके अर्थ निश्चित तौर पर मृत्यु देने के ही होते हैं। अहमदिया जमाअत के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ने विरोधी मौलवियों को चुनौती दी थी कि वे क़ुर्आन करीम, हदीस अथवा अरब

की किसी प्रमाणित किताब में यह दिखादें कि जब ख़ुदा कर्ता हो और कोई कथित मनुष्य कर्म हो तो तवफ़्फ़ा के अर्थ रूह क़ब्ज़ (निकालने) के अतिरिक्त कुछ और अभिप्राय हों, परन्तु आज तक कोई विरोधी मौलवी इसका उत्तर नहीं दे सका। इसके अतिरिक्त स्वयं संबंधित आयत भी 'मुतवफ़्फ़ीका' के अर्थ स्वयं स्पष्ट बता रही है, क्योंकि यदि मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ ये हैं कि पूरा उठा लेना तो 'राफ़िओका' का शब्द पृथक वर्णन करने से क्या लाभ था इस आयत में राफ़िओका का शब्द इस बात पर निश्चित साक्ष्य है कि 'मुतवफ़्फ़ीका' का शब्द 'राफ़िओका' से पृथक अर्थ रखता है। फिर ख़ुदा तआला नबी करीम (स.अ.व.) को फ़रमाता है:-

اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ (यूनुस रुकू-5)

अर्थात् *"हम काफ़िरों को अज़ाब के जो वादे दे रहे हैं उन में कुछ या तो तुझे दिखा देंगे और या तुझे मृत्यु दे देंगे।"*

फिर क़ुर्आन में लिखा है:-

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ (आराफ़ रुकू-14)

"अर्थात् हे हमारे रब्ब। हमें धैर्य की पूर्ण सामर्थ्य प्रदान कर और हमें ऐसी अवस्था में मृत्यु दे कि हम तेरे आज्ञाकारी हों।"

अत: तवफ़्फ़ा के शब्द पर हठधर्मी करना अधम स्तर की अज्ञानता है और उस पर आश्चर्य यह कि जब किसी अन्य व्यक्ति के लिए यही तवफ़्फ़ा का शब्द प्रयोग हो तो उसके अर्थ मृत्यु देने के किए जाते हैं, परन्तु यह शब्द जहां हज़रत ईसा के बारे में जहां प्रयोग हुआ तो तुरन्त उसके अर्थ आकाश की ओर उठा लेने के कर दिए जाते हैं! रसूलों में सर्वश्रेष्ठ हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के सन्दर्भ में मृत्यु देने के अर्थ रहे, परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में आकाश पर ले जाने के अर्थ पैदा हो गए। यह कैसा न्याय है और कैसा स्वाभिमान है ? इस से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं।

मसीह की अपनी मृत्यु के बारे में स्वयं स्वीकारोक्ति

यहां तक मैंने जो आयतें मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में लिखी हैं उसके द्वारा नितान्त स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और इस बारे में स्वयं ख़ुदा की साक्ष्य का उल्लेख हो चुका है। वास्तव में यदि अनुचित पक्षपात की पट्टी आँखों से उतार कर देखा जाए तो मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु की समस्या ऐसी स्पष्ट है कि किसी सन्देह की गुंजायश नहीं, परन्तु जिन्होंने नहीं मानना, वे नहीं मानते। अत: अब मैं मसीह की मृत्यु के बारे में स्वयं हज़रत मसीह की ही साक्ष्य प्रस्तुत करता हूँ शायद यदि ख़ुदा तआला की साक्ष्य पर पूर्ण सन्तुष्टि न हुई हो तो मसीह का अपना बयान ही किसी मार्ग भटके व्यक्ति की सन्तुष्टि का कारण हो जाए। क़ुर्आन करीम फ़रमाता है:-

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ○ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ○

(सूरह अलमाइदह रुकू-16)

अर्थात् *"ख़ुदा (प्रलय के दिन) कहेगा कि हे ईसा मरयम के बेटे क्या तूने लोगों से कहा था कि तुम मुझे और मेरी मां को अल्लाह के अतिरिक्त दो ख़ुदा मान लो। तो इस पर हज़रत ईसा उत्तर देंगे -*

पवित्र है तेरी हस्ती मेरे लिए उचित नहीं कि वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं। यदि मैंने ऐसी कोई बात कही है तो तू उसे जानता है। तू जानता है जो मेरे मन में है परन्तु मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है, तू निःसन्देह सब ग़ैबों (परोक्ष) का जानने वाला है। मैंने उन्हें इस बात के अतिरिक्त जिसका तूने मुझे आदेश दिया और कुछ नहीं कहा और वह यह कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा और तुम्हारा दोनों का प्रतिपालक है तथा मैं उनका संरक्षक रहा जब तक कि मैं उनके मध्य रहा परन्तु जब हे ख़ुदा तूने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उन्हें देखने वाला था और तू प्रत्येक वस्तु पर संरक्षक है।"

यह आयत मसीह की मृत्यु पर सबूत का एक सूर्य उदय कर देती है। كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ के शब्दों में मसीह अलैहिस्सलाम केवल दो युगों की चर्चा करता है जिनमें से वह एक के बाद दूसरे से गुज़रा। प्रथम युग वह है जब मसीह अपने अनुयायियों के मध्य मौजूद था और दूसरा युग जो पहले के साथ संलग्न और जुड़ा हुआ है वह मसीह की मृत्यु का युग है। अब यदि मसीह वास्तव में आकाश पर गया होता तो उसका उत्तर यह होना चाहिए था कि

مَا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا رَفَعْتَنِيْ إِلَى السَّمَاءِ حَيًّا

अर्थात् *"मैं अपने अनुयायियों पर संरक्षक रहा जब तक मैं उन में रहा फिर जब तूने मुझे जीवित आकाश पर उठा लिया।"* अन्त तक

परन्तु मसीह का उत्तर यह नहीं अपितु मसीह ने अपने अनुयायियों के मध्य रहने वाले युग के पश्चात् दूसरा युग जिसका वर्णन किया है वह केवल अपनी मृत्यु का युग है। अतः सिद्ध हुआ कि मसीह अलैहिस्सलाम आकाश पर नहीं उठाया गया अपितु जिस प्रकार अन्य मनुष्य मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं उसी प्रकार वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। बहस के अन्तर्गत आयत हमें स्पष्ट शब्दों में बताती है कि वह वस्तु जो मसीह के पहले युग

अर्थात् अनुयायियों के मध्य रहने वाले युग को समाप्त करने वाली तथा एक नया दौर आरम्भ करने वाली है वह मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु है, जैसा कि مَّادُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ के शब्दों से स्पष्ट है। यदि पहले युग को समाप्त करने वाली वस्तु आकाश पर जाना होता तो मसीह का यह उत्तर सरासर ग़लत ठहरता है।

फिर यही नहीं अपितु इस आयत में हज़रत मसीह अपनी मृत्यु का समय भी हमें बताते हैं, क्योंकि फ़रमाते हैं कि "मैंने अपनी जाति को यही शिक्षा दी थी कि ख़ुदा की उपासना करो जो मेरा, तुम्हारा और सब का प्रतिपालक है और मैं जब तक उन के बीच रहा उन का संरक्षक रहा।" जिसके अर्थ ये हैं कि जब तक मैं उनमें रहा मैंने उन्हें सदमार्ग से भटकने नहीं दिया। इस प्रकार जैसे मसीह अपने अनुयायियों के पथभ्रष्ट हो जाने के बारे में अपनी अज्ञानता प्रकट करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मसीही लोग हज़रत मसीह की मृत्यु के पश्चात् पथ भ्रष्ट हुए थे, परन्तु क़ुर्आन करीम तो हमें बता रहा है कि आंहज़रत (स.अ.व.) के युग में भी मसीही लोग सदमार्ग त्याग बैठे थे और पथ भ्रष्ट हो चुके थे, जैसा कि फ़रमाया:-

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ

(सूरह अलमाइदह रुकू-10)

अर्थात् *"उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में से एक है।"*

अतः सिद्ध हुआ कि कम से कम नबी करीम (स.अ.व.) के मुबारक युग से पहले-पहले मसीह मृत्यु पा चुका था। भली-भांति विचार करो कि मसीह का यह उत्तर स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा है कि ईसाई लोग मसीह की मृत्यु के पश्चात् बिगड़े हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या ईसाई बिगड़ चुके हैं या नहीं? यदि नहीं बिगड़े तो उचित, मसीह भी शायद जीवित होगा, परन्तु यदि वे बिगड़ चुके हैं और अवश्य बिगड़ चुके हैं तो फिर इस

बात को स्वीकार किए बिना चारा नहीं कि मसीह मृत्यु पा चुका है। इसके अतिरिक्त यदि यह मान लिया जाए कि मसीह अब तक आकाश पर जीवित मौजूद है और अन्तिम युग में प्रलय से पूर्व उतरेगा तो फिर इसके साथ यह भी मानना पड़ेगा कि वह प्रलय से पूर्व ही अपनी उम्मत के बिगड़ जाने से अवगत हो जाएगा और उसे ज्ञात हो जाएगा कि मेरी उम्मत मुझे ख़ुदा बना रही है तो ऐसी अवस्था में वह अपनी अज्ञानता को किस प्रकार प्रकट कर सकता है। निश्चय ही मसीह की ओर से (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) यह सरासर एक झूठ होगा। यदि वह ज्ञान रखने के बावजूद अज्ञानता को प्रकट करे। एक गन्दे से गन्दा मनुष्य भी ख़ुदा के समक्ष ऐसे स्पष्ट झूठ का साहस नहीं कर सकता, तो फिर मसीह जो ख़ुदा का प्रिय भक्त और उसका रसूल था वह किस प्रकार ऐसा स्पष्ट झूठ बोलेगा। अतः विचार कर, चिन्तन कर और सन्देह करने वालों में से न हो।

हदीस में इस आयत की व्याख्या

एक हदीस भी इस आयत के अर्थों को प्रकाशमान दिन की भांति प्रकट कर देती है और वह यह है कि हदीस में आता है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि प्रलय के दिन मैं हौज़े कौसर पर खड़ा हूँगा और अपने अनुयायियों को इस मुबारक झरने का पानी बांट रहा हूँगा, अचानक लोगों का एक समूह मेरे सामने आएगा जिन्हें फ़रिश्ते दूसरी ओर धकेल कर ले जा रहे होंगे मैं उन्हें देखकर चिल्लाने लगूंगा असैहाबी, उसैहाबी अर्थात् ''ये तो मेरे सहाबा हैं, ये तो मेरे सहाबा हैं।'' इस पर फ़रिश्ते कहेंगे-

اِنَّكَ لَا تَدْرِىْ مَا اَحْدَثُوْا بَعْدَكَ اِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوْا مُرْتَدِّيْنَ عَلٰى اَعْقَابِهِمْ

अर्थात् ''*आप नहीं जानते कि इन लोगों ने आप के पश्चात् क्या कुछ किया, ये तो आप के पश्चात् अपनी एड़ियों के बल फिर गए थे।*''

नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि यह सुनकर मैं वही कहूँगा जो एक नेक बन्दे ईसा पुत्र मरयम ने कहा कि :-

كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ۔

अर्थात् *"जब तक मैं उनके बीच रहा मैं उनकी देखभाल करता रहा परन्तु फिर जब हे ख़ुदा तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उन को देखने वाला था।"* (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

देखिए नबी करीम (स.अ.व.) ने वही शब्द अपने लिए प्रयोग किए जो हज़रत ईसा ने किए। अत: स्पष्ट है कि नबी करीम (स.अ.व.) आकाश पर नहीं उठाए गए अपितु मृत्यु ने ही आपको आपके अनुयायियों से पृथक किया था। यही अर्थ ईसा के बारे में लेना चाहिए तथा विचार करो कि नबी करीम (स.अ.व.) ने अपना हाल किस प्रकार ईसा पुत्र मरयम के हाल के समान बताया है। आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि जिस प्रकार ईसा इब्ने मरयम अपनी अज्ञानता प्रकट करेगा उसी प्रकार मैं भी अपनी अज्ञानता प्रकट करूँगा तथा यह ऊपर बताया जा चुका है कि यदि मसीह नासिरी अन्तिम युग में उतरे तो वह अवश्य अपनी उम्मत के बिगड़ जाने से प्रलय से पूर्व ही अवगत हो जाएगा। अत: उसके लिए प्रलय के दिन अपनी अज्ञानता प्रकट करना एक खुला झूठ है। क्या मसीह के अनुयायियों में से कोई व्यक्ति उस समय खड़े होकर यह नहीं कह सकता कि हे ख़ुदा तेरे इस रसूल ने एक ऐसा झूठ बोलने का साहस किया है कि निकट है कि पृथ्वी और आकाश दोनों फट जाएं। यह अन्तिम युग में दोबारा संसार में आया तथा उसने हमें उसकी ख़ुदाई मानते और लोगों से मनवाते देखा, जिसके कारण उसने हमारे विरुद्ध युद्ध किया तथा चालीस वर्ष तक उसने पृथ्वी पर कोतूहल मचाए रखा तथा उसने उस समय तक अपनी तलवार म्यान में नहीं की जब तक कि उसने उन समस्त लोगों को तलवार के घाट नहीं उतार

दिया जिन्होंने उसकी बात को अस्वीकार किया, परन्तु अब ख़ुदावन्द यह अपनी अज्ञानता प्रकट करता है।'' खेद हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के विरोध में लोग इतने अन्धे हो गए हैं कि ख़ुदा के एक महानतम नबी पर आरोप लगाने से भी नहीं रुके परन्तु मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम को सच्चा मानना स्वीकार न किया। क़ुर्आन करीम क्या उचित फ़रमाता है:-

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ

(सूरह यासीन रुकू-2)

अर्थात् *"खेद लोगों पर कि वे प्रत्येक रसूल के साथ उपहास ही करते आए हैं।"*

बहस के अन्तर्गत आयत तवफ़्फ़ा के अर्थ भी स्पष्ट कर रही है, क्योंकि नबी करीम (स.अ.व.) ने अपने बारे में ये ही शब्द प्रयोग किए हैं कि فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ अर्थात् जब तूने मुझे मृत्यु दे दी। यदि तवफ़्फ़ा के अर्थ मृत्यु देने के न होते अपितु उठा लेने के होते, जैसा कि दावा किया जाता है तो नबी करीम (स.अ.व.) अपने लिए ये शब्द कदापि प्रयोग न करते, क्योंकि आप तो आसमान की ओर नहीं उठाए गए अपितु दूसरे लोगों की भांति पृथ्वी पर ही मृत्यु को प्राप्त हुए।

यदि मसीह को ख़ुदा मान लिया जाए तो फिर भी वह मृत्यु से नहीं बचता

यहां तक तो मसीह का मनुष्य होने के नाते वर्णन हुआ है परन्तु क़ुर्आन करीम एक ऐसी परिपूर्ण किताब है जो किसी पहलू को नहीं छोड़ती। आजकल विश्व का एक बड़ा भाग मसीह अलैहिस्सलाम को ख़ुदा मानता है। अत: इस हैसियत में भी क़ुर्आन करीम उसकी मृत्यु की चर्चा करता है ताकि समझाने का अन्तिम प्रयास प्रत्येक प्रकार से पूर्ण हो जाए। फ़रमाता है -

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝

(सूरह नहल रुकू-2)

अर्थात् *"जिन उपास्यों को ये लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं (अर्थात् उनकी उपासना करते हैं) वे कोई वस्तु पैदा नहीं कर सकते अपितु वे स्वयं पैदा किए गए हैं, वे मुर्दा हैं जीवित नहीं हैं और वे इतना भी नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे।"*

यह आयत उन समस्त लोगों की मृत्यु की सूचना देती है जो बतौर उपास्य नबी करीम (स.अ.व.) के युग में पूजे जाते थे। स्पष्ट है कि मसीह उन्हीं में से एक हैं। यदि कुछ लोग इस आयत के बारे में यह ऐतिराज़ करें कि इसमें मूर्तियों आदि की चर्चा है न कि उन लोगों की जो बतौर ख़ुदा के पूजे जाते हैं तो यह एक स्पष्ट ग़लती होगी, क्योंकि अल्लाह तआला इस आयत में स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है :-

وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ

अर्थात् *"जो लोग पूजे जाते हैं वे इतना भी नहीं जानते कि उन्हें कब उठाया जाएगा।"*

अत: स्पष्ट है कि पत्थर की मूर्तियों को तो जीवित करके नहीं उठाया जाता अपितु मृत्योपरान्त मनुष्य को ही उठाया जाएगा।

इसके अतिरिक्त आयत में اَلَّذِيْن का शब्द प्रयोग किया गया है जो अरबी भाषा के नियमानुसार स्थूल पदार्थों के लिए प्रयोग नहीं होता अपितु प्राणियों तथा मनुष्यों के लिए प्रयोग होता है। इसलिए भी यहां पत्थर इत्यादि अभिप्राय नहीं हो सकते। अत: जब कि यह सिद्ध हो गया कि यह आयत उन मनुष्यों के बारे में ही है जो बतौर उपास्य नबी करीम (स.अ.व.) के युग में पूजे जाते थे तो निश्चित तौर पर हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम

का भी इस सूची में सम्मिलित होना स्वीकार करना पड़ेगा, अपितु क्या इस दृष्टिकोण से कि वह युग के अनुसार नबी करीम (स.अ.व.) के सर्वाधिक निकट थे तथा क्या इस दृष्टिकोण से कि मानव ख़ुदाओं में सर्वाधिक उपासना मसीह की की जाती है। सब से पहला व्यक्ति जो इस सूची के अन्तर्गत आता है वह मसीह ही है। अत: सिद्ध हुआ कि मसीह उन लोगों में विशेष तौर पर सम्मिलित हैं, जिन के बारे में ख़ुदा फ़रमाता है कि :-

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ

अर्थात् *"वे मुर्दा हैं न कि जीवित और वे नहीं जानते कि उन का जीवित होकर उठना कब होगा।"*

आयत وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ व इम्मिन अहलिल किताबे की सही व्याख्या

उपरोक्त क़ुर्आनी आयत से भली भांति स्पष्ट हो चुका होगा कि हज़रत मसीह आकाश पर नहीं गए अपितु सामान्य लोगों की भांति अपना जीवत व्यतीत करके पृथ्वी पर ही मृत्यु को प्राप्त हो गए, परन्तु यहां आवश्यक मालूम होता है कि हमारे विरोधी जिस आयत से मसीह का जीवित रहना सिद्ध करते हैं उसकी संक्षिप्त व्याख्या कर दी जाए ताकि यह बात हर तरह से स्पष्ट हो जाए। क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ

(सूरह अन्निसा, रुकू-22)

इस आयत के अर्थ ग़ैरअहमदी विद्वान सामान्य तौर पर इस प्रकार करते हैं कि

"कोई अहले किताब में से नहीं परन्तु मसीह की मृत्यु से पूर्व मसीह पर ईमान लाएगा।"

जिस से वे यह परिणाम निकालते हैं कि मसीह अब तक जीवित है और अन्तिम युग में आकाश से उतरेगा और उस समय सब के सब अहले किताब उस पर ईमान लाने पर विवश किए जाएंगे*, परन्तु यदि हम तनिक विचार से काम लें तो इस सबूत का समस्त रहस्य प्रकट हो जाता है। क़ुर्आन करीम के शब्द हैं وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ जिस के अर्थ हैं ''समस्त अहले किताब बिना अपवाद के''। अतः यदि यह मान भी लिया जाए कि जिस समय मसीह उतरेंगे उस समय जितने यहूदी होंगे सब के सब मसीह पर ईमान ले आएंगे तब भी وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ का अर्थ पूरा नहीं होता, क्योंकि वे लाखों, करोड़ों यहूदी जो इस आयत के उतरने और मसीह के आगमन के मध्य मृत्यु पा गए होंगे वे किस प्रकार ईमान लाएंगे? वे तो बहरहाल अपवाद ही रहेंगे, परन्तु आयत के शब्द किसी अपवाद को स्वीकार नहीं करते। अतः ज्ञात हुआ कि इस आयत के जो अर्थ किए जाते हैं वे ग़लत हैं। इसके अतिरिक्त हम क़ुर्आन करीम में पढ़ते हैं कि:-

فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(सूरह माइदह रुकू-3)

अर्थात् *''हम ने यहूदियों और ईसाइयों में शत्रुता और बैर डाल दिया है जो प्रलय के दिन तक स्थापित रहेगा।''*

इस से सिद्ध हुआ कि ऐसा कोई समय नहीं आएगा कि जब यहूदी और ईसाई बिल्कुल समाप्त हो जाएंगे अपितु वे प्रलय तक रहेंगे। इस आयत के अतिरिक्त और भी बहुत सी क़ुर्आन की आयतें है जो हमें स्पष्ट तौर पर बताती हैं कि यहूदी प्रलय तक रहेंगे और बिल्कुल समाप्त कभी

---

* हमारे विरोधी ये अर्थ करते हुए इतना विचार नहीं करते कि इन्हीं यहूद के बारे में उपरोक्त आयत से कुछ आयतें पहले अल्लाह तआला फ़रमाता है لَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا अर्थात् ''उन में से बहुत थोड़े लोग ईमान लाएंगे'' अतः इस ठोस आयत के होते हुए बहस के अन्तर्गत आयत के अन्य अर्थ किस प्रकार किए जा सकते हैं?

नहीं होंगे। अतः उपरोक्त विवादित आयत के ये अर्थ करना कि कोई ऐसा समय आएगा कि जब समस्त यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आएंगे क़ुर्आनी शिक्षा के सरासर विरुद्ध है।

फिर आयत के उचित अर्थ क्या हुए? इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व मैं यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि जो अर्थ हमारे विरोधी करते हैं उन पर पूर्वकालीन बुज़ुर्ग कदापि एकमत नहीं हैं अपितु इस आयत की व्याख्या में पूर्वकालीन धर्माचार्यों में भी अत्यधिक मतभेद हुआ है। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ प्रकट करता है। स्पष्ट है कि इस आयत के सही अर्थ वही होंगे जो क़ुर्आन करीम की नितान्त स्पष्ट और ठोस आयतों के विपरीत न हों तथा आयत का अगला-पिछला प्रसंग भी उनका सत्यापन करता हो। अतः सर्वप्रथम हम आयत के परिदृश्य पर दृष्टि डालते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इस आयत से पूर्व यहूद के इस दावे का वर्णन है कि उन्होंने मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर मार दिया जिसके खंडन में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वास्तव में मसीह सलीब पर नहीं मरा अपितु यहूदियों को भ्रम हुआ है। हां मसीह घावों की पीड़ा के कारण ऐसी मूर्च्छावस्था में अवश्य हो गया था कि जिस से वह सलीब पर मर जाने वाले के समान हो गया। इसलिए यहूदियों को यह धोखा लगा कि मसीह वास्तव में सलीब पर मर गया है, परन्तु यहूदियों ने इस बारे में पूर्ण छान-बीन से काम नहीं लिया अपितु एक भ्रम का अनुसरण करते रहे। तत्पश्चात् ख़ुदा फ़रमाता है कि

اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ

अर्थात् *"समस्त अहले किताब अपनी मृत्यु से पूर्व इसी बात पर ईमान रखेंगे* (कि मसीह निश्चित ही सलीब पर मर गया)

परन्तु उन का यह ईमान केवल उनकी मृत्यु तक रहेगा और मृत्योपरांत उन पर मूल वास्तविकता प्रकट हो जाएगी क्योंकि मृत्यु के पश्चात् वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है तथा मनुष्य को अपनी भूलों का ज्ञान हो जाता है।

देखिए! ये अर्थ कितने स्पष्ट हैं तथा अगले-पिछले प्रसंग के बिल्कुल अनुकूल हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस सांसारिक जीवन में तो नि:सन्देह समस्त अहले-किताब की यही धारणा रहेगी कि मसीह सलीब पर मर गया था, परन्तु यह ईमान केवल उनकी मृत्यु तक है, मृत्योपरान्त उन्हें ज्ञात हो जाएगा कि उनका विचार ग़लत था तथा मसीह की मृत्यु वास्तव में सलीब पर नहीं हुई थी। इसके अतिरिक्त इस आयत के जो अर्थ हमारे विरोधी करते हैं उसके अन्तर्गत यह आयत यहूदियों के लिए एक बड़ी बरकत का कारण बनती है कि मानो वे सब के सब एक दिन मोमिन बन जाएंगे। हालांकि इस आयत से पहली और पिछली आयतें यहूदियों के अपद्रवों और दुर्भाग्यों पर आधारित हैं। अत: इस मध्य की आयत को शुभ संदेश देने वाली आयत कैसे समझा जा सकता है। हमारे अर्थों का अतिरिक्त समर्थन इस प्रकार भी होता है कि आयत में जो शब्द مَوْتِه आया है उसको पढ़ने का दूसरा ढंग مَوْتِهِمْ आया है जैसा कि 'तफ़्सीर बैज़ावी' और 'कश्शाफ़' इत्यादि में उल्लेख है। इस से स्पष्ट है कि مَوْتِه का सर्वनाम (ज़मीर) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर कदापि नहीं जाता अपितु अहले-किताब की ओर जाता है और بِهٖ (बिही) के शब्द में जो सर्वनाम है वह अहले किताब के उस कथन की ओर जाता है कि मसीह की मृत्यु सलीब पर हो गई क्योंकि इस आयत से पूर्व क़ुर्आन करीम में इस बात की चर्चा की गई है। इस आयत के जो अर्थ यहां हमने किए हैं बहस के अन्तर्गत आयत का अन्तिम भाग भी उन अर्थों का बड़े ठोस रूप में समर्थन कर रहा है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है।* وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا अर्थात्

---

* यह आयत स्वयं मसीह की मृत्यु पर प्रमाण है क्योंकि अल्लाह तआला मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाता है कि वह अहले किताब पर प्रलय के ही दिन बतौर गवाह के होगा। यदि मसीह ने प्रलय से पूर्व भी उतरना था तो यह अर्थ ग़लत ठहरता है।

"अहले किताब इसी धारणा पर जमे रहेंगे कि मसीह अलैहिस्सलाम की वास्तव में सलीब पर मृत्यु हो गई थी। परन्तु प्रलय के दिन जब समस्त मुर्दे उठाए जाएंगे तो मसीह उनके विरुद्ध एक साक्षी के तौर पर खड़ा होगा और उन्हें बता देगा कि उसकी सलीबी मृत्यु के बारे में उनकी धारणा ग़लत थी। अत: बहस के अन्तर्गत आयत के अगले-पिछले प्रसंग और مَوْتِهٖ (मौतिही) के स्थान पर مَوْتِهِمْ (मौतिहिम) को दूसरे ढंग से पढ़ना और फिर क़ुर्आन करीम की स्पष्ट आयतें हमें विवश करती हैं कि हम ग़ैर अहमदी मौलवियों के अर्थों को ग़लत ठहरा दें।

क़ुर्आन करीम की व्याख्या का गुर

क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ
الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ۭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ
فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ

(सूरह आले इमरान रुकू-1)

मौलवी नज़ीर अहमद साहिब देहलवी इस आयत के अर्थ इस प्रकार करते हैं:-

"हे पैग़म्बर! वही पवित्र हस्ती है जिसने तुम पर यह किताब उतारी जिसमें कुछ आयतें पक्की अर्थात् साफ और स्पष्ट हैं कि वही मूल किताब हैं और कुछ दूसरी अस्पष्ट और संदिग्ध हैं कि उनके अर्थों में कई पहलू निकल सकते हैं। अत: जिन लोगों के हृदयों में टेढ़ापन है वे तो क़ुर्आन की इन्हीं अस्पष्ट आयतों के पीछे पड़े रहते

हैं ताकि फ़साद उत्पन्न करें।''

विचार करो कि अल्लाह तआला ने हमें क़ुर्आनी आयतों की व्याख्या करने का कैसा उपाय बताया है जिस से सारे विवाद का समूल अन्त हो जाता है। फ़रमाता है कि कुछ आयतें ऐसी हैं कि जिनके अर्थों के कई पहलू निकल सकते हैं। उदाहरणतया यही कि कोई सर्वनाम (ज़मीर) वर्णन किया गया हो जिसके लिए सम्भव है कि वह एक वस्तु की ओर फ़िरता हो और सम्भव है कि दूसरी वस्तु की ओर फिरता हो अथवा अन्य किसी प्रकार की समानता घटित हो जाए तो ऐसी अवस्था में ख़ुदा तआला हमारा मार्ग दर्शन करता है कि ऐसी आयतों के वही अर्थ करें कि जो क़ुर्आन करीम की स्पष्ट ठोस आयतों के विपरीत न हों। अब देखो कि यह आयत कैसी स्पष्ट और निश्चित तौर पर सिद्ध कर रही है कि :-

فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

अर्थात् *''यहूदियों और ईसाइयों में प्रलय तक शत्रुता रहेगी।''*

अब न्याय का स्थान है कि हम विवादित आयत का यह अनुवाद किस प्रकार स्वीकार कर लें कि कोई ऐसा समय आने वाला है कि समस्त यहूदी मसीह अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आएंगे तथा वे और ईसाई एक हो जाएंगे।

कुछ विद्वान इस आयत के बारे में कहा करते हैं कि हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाह अन्हो ने भी इसके वही अर्थ किए हैं जो आजकल के मौलवी करते हैं। इसके उत्तर में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब फ़रमाते हैं:-

> ''مَوْتِهٖ (मौतिही) का सर्वनाम अहले किताब हैं न कि हज़रत ईसा। इसी कारण इस आयत की दूसरी उच्चारण शैली में مَوْتِهِمْ (मौतिहिम) है। यदि हज़रत ईसा की ओर यह सर्वनाम जाता तो दूसरे उच्चारण में क्यों आता? देखो 'तफ़्सीर सनाई' कि उसमें बड़े

ज़ोर से हमारे इस बयान का सत्यापन मौजूद है और उसमें यह भी उल्लेख है कि अबूहुरैरा रज़ि. के निकट यही अर्थ हैं, परन्तु तफ़्सीर का लेखक लिखता है कि अबूहुरैरा रज़ि. क़ुर्आन के बोध में अपूर्ण है तथा उसके हदीस के बोध पर हदीस के विद्वानों को आपत्ति है। अबू हुरैरा रज़ि. में नक़ल करने का तत्व था तथा वह हदीस के बोध और समझ से बहुत ही कम भाग रखता था और मैं कहता हूँ कि यदि अबू हुरैरा रज़ि. ने ऐसे अर्थ किए हैं तो यह उसकी ग़लती है जैसा कि कई अन्य स्थानों में हदीस के विद्वानों ने सिद्ध किया है कि जो बातें हदीस के बोध के बारे में हैं अबू हुरैरा रज़ि. उनके समझने में प्राय: ठोकर खाता है तथा ग़लती करता है। यह बात सर्वमान्य है कि एक सहाबी की राय शरई प्रमाण नहीं हो सकती, शरई प्रमाण केवल सहाबा रज़ि. की सर्वसम्मति है। अत: हम वर्णन कर चुके हैं कि इस बात पर सहाबा रज़ि. की सर्वसम्मति हो चुकी है कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं और स्मरण रखना चाहिए कि जब कि आयत قَبْلَ مَوْتِہٖ की दूसरी उच्चारण शैली قَبْلَ مَوْتِہِمْ क़बला मौतिहिम मौजूद है जो हदीस के विद्वानों के नियमानुसार सही हदीस का आदेश रखता है अर्थात् ऐसी हदीस जो आंहज़रत (स.अ.व.) से सिद्ध है तो इस अवस्था में केवल अबू हुरैरा रज़ि. का अपना कथन खंडन करने योग्य है, क्योंकि वह आंहज़रत (स.अ.व.) के कथन की तुलना में तुच्छ और व्यर्थ है तथा उस पर आग्रह कुफ़्र तक पहुँचा सकता है, फिर इसी पर बस नही अपितु अबूहुरैरा रज़ि. के कथन से क़ुर्आन करीम का असत्य होना अनिवार्य होता है, क्योंकि क़ुर्आन करीम तो स्थान-स्थान पर फ़रमाता है कि यहूदी और ईसाई प्रलय तक रहेंगे, उनका समूल विनाश नहीं होगा तथा अबूहुरैरा रज़ि. कहता

है कि यहूद का पूर्णतया अन्त हो जाएगा और यह बात क़ुर्आन करीम के बिल्कुल विपरीत है। जो व्यक्ति क़ुर्आन करीम पर ईमान लाता है उसे चाहिए कि अबू हुरैरा रज़ि. के कथन को एक रद्दी वस्तु की भांति फेंक दे।''

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया, भाग पंचम, पृष्ठ 234, 235)

अत: यह निश्चित बात है कि विवादित आयत में مَوْتِہٖ (मौतिही) का सर्वनाम अहले किताब हैं न कि ईसा अलैहिस्सलाम। जब यह सिद्ध हो गया कि مَوْتِہٖ का सर्वनाम ईसा नहीं होता तो चाहे कल्पना के तौर पर بِہٖ (बिही) का सर्वनाम ईसा को ही मान लिया जाए और आयत के कोई से भी अर्थ कर लिए जाएं तो भी इस आयत से यह कदापि सिद्ध नहीं हो सकता कि मसीह जीवित है और यही अभीष्ट था। आश्चर्य है कि हमारे विरोधी जिन आयतों को संदिग्ध आयतों में मानते हैं तथा पूर्वकालीन भाष्यकारों ने भी उनके अर्थों में परस्पर बड़ा मतभेद किया है, उन पर ऐसे नितान्त आवश्यक मामलों की नींव रखी जाती है तथा नितान्त स्पष्ट आदेशों को ध्यानयोग्य नहीं समझा जाता है, परन्तु ज्ञात रहे कि यह किन लोगों का कार्य है। सुनिए ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

اَلَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ

(सूरह आले इमरान)

अर्थात् *''जिन लोगों के हृदय में टेढ़ापन है वे ही अस्पष्ट और संदिग्ध आयतों के पीछे लगते हैं।''*

परन्तु आपने देखा कि हमने ख़ुदा तआला की कृपा से उसकी संदिग्धता को भी ऐसा दूर कर दिया है कि अब यह आयत भी नितान्त स्पष्ट आयतों में दिखाई देती है, जिसके नेत्र हों देखे।

हदीस से मसीह की मृत्यु का प्रमाण

दर्शकों ने उपरोक्त वर्णन से यह भली-भांति समझ लिया होगा कि क़ुर्आन करीम ईसा अलैहिस्सलाम के जीवित रहने की समस्या का दूर से ही खण्डन कर रहा है और यद्यपि आयत مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا इस बात की आवश्यकता शेष नहीं छोड़ती कि इस समस्या के बारे में हदीस से भी साक्ष्य तलाश की जाए, परन्तु दर्शकों की अत्यधिक सन्तुष्टि के लिए आवश्यक मालूम होता है कि हदीस से भी मसीह की मृत्यु का कुछ प्रमाण दे दिया जाए ताकि सन्देह का कोई स्थान न रहे। अत: स्पष्ट हो कि हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि :-

مَا مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوْسَةٍ الْيَوْمَ يَأْتِيْ عَلَيْهَا مِائَةُ سَنَةٍ وَهِيَ يَوْمَئِذٍ حَيَّةٌ

(सही मुस्लिम)

अर्थात् *"समस्त वे लोग जो आज जीवित हैं वे एक सौ वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् जीवित न रहेंगे।"*

यह हदीस बड़ी स्पष्टता के साथ मसीह की मृत्यु पर फ़ातिहा पढ़ रही है। स्पष्ट है कि यदि मसीह अब भी जीवित है तो वह अवश्य ही नबी करीम (स.अ.व.) के समय भी जीवित होगा और यदि वह उस समय जीवित था तो निश्चय ही वह सौ वर्ष के अन्दर-अन्दर मर चुका होगा। फिर इसी पर बस नहीं और लीजिए। एक और हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि:-

اِنَّ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ عَاشَ عِشْرِيْنَ وَمِائَةَ سَنَةٍ

(तिबरानी व मुस्तदरक हाकिम)

अर्थात् *"ईसा इब्ने मरयम एक सौ बीस वर्ष जीवित रहे थे।"*

यह हदीस तो किसी संदेह और संशय की गुंजायश ही नहीं छोड़ती अपितु मसीह की आयु का निर्धारण करके स्पष्ट तौर पर उनकी मृत्यु को सिद्ध कर रही है तथा इस विवाद को आगे बढ़ाने की आवश्यकता शेष नहीं रहने देती, परन्तु हमारा उद्देश्य तो यथासम्भव सन्तुष्टि कराना है, इसलिए एक और हदीस प्रस्तुत है। आंहज़रत (स.अ.व.) फ़रमाते हैं :-

لَوْكَانَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى حَيَّيْنِ لَمَا وَسِعَهُمَا اِلَّا اتِّبَاعِىْ

(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द-2, पृष्ठ-246)

अर्थात् *"यदि मूसा तथा ईसा जीवित होते तो उन्हें भी मेरे आज्ञापालन के सिवाए कोई चारा न होता।"*

सुब्हान अल्लाह इस हदीस ने तो विवाद का अन्त ही कर दिया, मसीह की मृत्यु पर सहस्त्रों सूर्य उदय कर दिए और इस समस्या के किसी दूरस्थ कोने तक में अंधकार नहीं रहने दिया, परन्तु इसी पर अन्त नहीं मे'राज की हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) ने वर्णन किया है कि जब मैं दूसरे आसमान पर गया तो मैंने वहां यह्या और ईसा को देखा (बुख़ारी, मुस्लिम) अब यह सर्वमान्य बात है कि हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है और उनकी रूह (आत्मा) इस पार्थिव शरीर से पृथक हो चुकी है। इसलिए सिद्ध हुआ कि मसीह भी मृत्यु पा चुके हैं, क्योंकि मुर्दों में वही व्यक्ति रहता है जो स्वयं मृत्यु पा चुका हो। ऐसा तो हो नहीं सकता कि मुर्दों के अन्दर एक जीवित को रख दिया जाए। अब आप ने देखा कि किस स्पष्टता के साथ क़ुर्आन करीम और सही हदीसें मसीह को मृत्यु-प्राप्त सिद्ध कर रही हैं। इससे अधिक और क्या होगा कि क़ुर्आन करीम ने स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि मसीह आसमान पर नहीं उठाया गया अपितु उस का 'रफ़ा' उन्हीं अर्थों में हुआ जिन अर्थों में समस्त सदात्मा पुरुषों का मृत्योपरान्त रफ़ा हुआ करता है। फिर यही नहीं अपितु मसीह के अपने मुख से इक़रार करवा दिया कि भाइयो मुझे अकारण ही जीवित क्यों मान

रहे हो मैं तो अपनी उम्मत के बिगड़ने से पूर्व मृत्यु पा चुका हूँ। अतः इस पर अल्लाह तआला ने अपना फ़ैसला भी सुना दिया कि देखो कि नबी करीम (स.अ.व.) से पूर्व जितने भी नबी गुज़रे हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं, फिर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की हदीस मसीह की आयु भी बता रही है कि एक सौ बीस वर्ष हुई और फिर स्पष्ट शब्दों में कह रही है कि यदि मूसा और ईसा जीवित होते तो वे भी नबी करीम (स.अ.व.) का अनुसरण करने पर विवश होते। इन स्पष्ट सबूतों की मौजूदगी में फिर भी यदि कोई व्यक्ति अपनी हठधर्मी को नहीं छोड़ता तो उसे अधिकार है, हमने अपनी ओर से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर दिया। अब ऐसे लोगों का मामला ख़ुदा के साथ है।

अध्याय-तृतीय

(मृत्यु प्राप्त लोग दोबारा जीवित होकर इस संसार में वापस नहीं आते)

कुछ लोग जब मसीह की मृत्यु की चर्चा स्पष्ट तौर पर क़ुर्आन करीम और हदीसों में देखते हैं तो फिर वे यह पहलू धारण करते हैं कि क्या हुआ यदि मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो चुका, ख़ुदा उसे जीवित करके संसार में दोबारा ले आएगा। इसके उत्तर में स्मरण रखना चाहिए कि इस संसार में मुर्दों का दोबारा जीवित होकर आ जाना इस्लामी शिक्षा और ख़ुदा के नियम के सरासर विरुद्ध है। क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाता है:-

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ۔ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ۔

(सूरह मोमिनून रुकू 1)

अर्थात् *"तुम पैदा किए जाने के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगे और*

फिर प्रलय के दिन ही दोबारा जीवित किए जाओगे।"

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया है कि मृत्योपरान्त जीवित किए जाने का समय प्रलय का दिन ही है, इस से पूर्व कदापि नहीं। फिर फ़रमाया:-

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ

(सूरह मोमिनून रुकू-6)

अर्थात् *"जो लोग मर जाते हैं उनके और इस संसार के बीच एक रोक हो जाती है जो प्रलय के दिन तक रहेगी।"*

इस आयत ने बड़ी स्पष्टता के साथ इस बात का निर्णय कर दिया कि जो व्यक्ति मर जाए वह प्रलय को ही जीवित किया जाएगा। प्रलय से पूर्व उसके और इस संसार के मध्य अल्लाह तआला ने एक रोक रख दी है जो केवल प्रलय के दिन उठाई जाएगी।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

(सूरह अंबिया रुकू-7)

अर्थात् *"जिन लोगों को हम मार देते हैं उन पर अवैध है कि वे इस संसार की ओर वापस लौटें।"*

फिर नबी करीम (स.अ.व.) की एक हदीस है जो इस समस्या का बिल्कुल ही समाधान कर देती है। आप (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि 'उहद' के युद्ध में जब जाबिर रज़ि. के पिता शहीद हुए तो उन से ख़ुदा तआला ने वादा किया कि जो मांगोगे मैं तुम्हें दूँगा। उन्होने कहा कि हे मेरे ख़ुदा! मुझे फिर जीवित किया जाए ताकि मैं इस्लाम के मार्ग में फिर युद्ध करूँ और पुनः अपने प्राण दूँ। ख़ुदा तआला ने इसके उत्तर में फ़रमाया कि :-

سَبَقَ الْقَوْلُ مِنِّيْ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

(तिरमिज़ी रिवायत जाबिर रज़ि. से)

अर्थात् *" ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि मैं पहले से सैद्धान्तिक*

*निर्णय कर चुका हूँ कि जो लोग मर जाते हैं वे पुनः इस संसार में वापस नहीं लौटेंगे।"**

इस हदीस के पश्चात् मेरे विचार में किसी अन्य सबूत की आवश्यकता नहीं रहती, परन्तु आश्चर्य है कि हमारे कुछ मौलवी लोग न केवल मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम को मृत्यु प्राप्त स्वीकार करके फिर उसके दोबारा संसार में आने के अभिलाषी हैं अपितु स्वयं मसीह अलैहिस्सलाम की ओर वास्तविक मुर्दों का इसी संसार में जीवित करना सम्बद्ध कर रहे हैं, हालांकि जिन अर्थों में मसीह ने मुर्दे जीवित किए उन अर्थों में तो समस्त नबी मुर्दे जीवित करते आए हैं तथा आंहज़रत (स.अ.व.) ने सब से अधिक मुर्दे जीवित किए। वास्तव में कठिनाई यह होती है कि ज्ञान के अभाव के कारण लोग प्रत्येक शब्द के प्रत्यक्ष अर्थों पर दृढ़ हो जाते हैं हालांकि कभी एक शब्द रूपक और कल्पना के तौर पर प्रयोग होता है उदाहरणतया क़ुर्आन करीम में आया है कि:-

مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى

(सूरह बनी इस्राईल रुकू-8)

अर्थात् *"जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह आख़िरत (परलोक) में भी अंधा ही होगा।"*

यहां सब की सहमति है कि यहां अंधे से अभिप्राय आध्यात्मिक (रूहानी) अंधा है न कि शारीरिक अंधा, परन्तु मालूम नहीं कि मसीह के मामले में मुर्दे से आध्यात्मिक मुर्दा क्यों अभिप्राय नहीं लिया जाता। नबी करीम (स.अ.व.) के बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है:-

---

* इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि ख़ुदा ने स्वयं कहा कि कुछ मांगो और फिर मांगने वाला शहीद और श्रेष्ठ स्तर का सहाबी था, परन्तु चूंकि यह प्रश्न ख़ुदा के ठोस निर्णय और नियम के विपरीत था इसलिए नकारात्मक उत्तर मिला। इसी से।

يَآاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ

(सूरह अन्फ़ाल रुकू-3)

अर्थात् *"हे मोमिनो! तुम अल्लाह की बात मान लिया करो और रसूल की आवाज़ पर भी कान धरा करो जब कि वह तुम्हें बुलाए क्योंकि वह तुम्हें जीवित करता है।"*

देखो नबी करीम (स.अ.व.) के बारे में कितनी स्पष्टता पूर्वक जीवित करने का शब्द आया है, परन्तु यहां हमारे विरोधी भी आध्यात्मिक जीवन अभिप्राय लेते हैं, परन्तु जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इसी प्रकार के शब्द आते हैं तो वहां वास्तविक मुरदों का जीवित करना अभिप्राय ले लिया जाता है। अफ़सोस सौ बार अफ़सोस कि हमारे मौलवियों ने मसीह नासिरी के सम्मान को द्वैतवाद की सीमा तक पहुँचा रखा है तथा उसकी तुलना में अपने स्वामी के सम्मान की भी परवाह नहीं की।

हमारे विरोधी जब इस बात में भी तंग आ जाते हैं और देखते हैं कि क़ुर्आन करीम मुर्दों का इसी संसार में जीवित हो जाना निषिद्ध ठहरा देता है तो कहते हैं कि नि:सन्देह ख़ुदा का सामान्य नियम यही है कि मुर्दे दोबारा जीवित होकर इस संसार में नहीं आते, परन्तु क्या ख़ुदा समर्थ नहीं कि मसीह अलैहिस्सलाम की यदि मृत्यु हो भी चुकी है तो उसे जीवित करके इस संसार में ले आए? अब देखिए कि यह भी कोई तर्क है? कौन इन्कार करता है कि ख़ुदा समर्थ नहीं है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि किसी बात में अल्लाह तआला की क़ुदरत का होना इस बात का प्रमाण नहीं है कि वास्तव में वह बात हो भी गई है। विचार करो कि क्या अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ नहीं कि नबी करीम (स.अ.व.) को जीवित करके दोबारा संसार में ले आए। अत: क्या इस से सिद्ध होगा कि नबी करीम (स.अ.व.) दोबारा जीवित होकर आ जाएंगे? फिर क्या ख़ुदा समर्थ नहीं कि उसी समय प्रलय आ जाए। अत: क्या इस से सिद्ध हो गया कि उसी समय प्रलय आ भी

गई ? ऐसे तर्क सुनकर इस युग के मौलवियों की बुद्धि और विवेक पर रोना आता है कि उनकी दशा कैसी गिर चुकी है। भाइयो! ख़ुदा की क़ुदरत इस बात को सिद्ध नहीं करती कि जिस वस्तु पर उसे क़ुदरत है वह वास्तव में हो भी गई। उस का घटित होना तो तब सिद्ध हो कि तुम इस बात का सबूत दो कि ख़ुदा ने बाद में इस मामले में अपने नियम का त्याग करके अपनी विशेष अपवादीय शक्ति का प्रयोग किया। हम इसी बात को तो सिद्ध कर रहे हैं कि इसके बावजूद कि ख़ुदा मुर्दों को जीवित करके इस संसार में वापस लाने पर समर्थ है, फिर भी उसने अपना यह नियम निर्धारित कर रखा है कि वह ऐसा नहीं करता। फिर यह भी विचार करो कि यदि ख़ुदा की क़ुदरत पर ही निर्णय करना है तो क्या ख़ुदा इस बात पर समर्थ नहीं कि इसी उम्मत में से मसीह अलैहिस्सलाम को पैदा कर दे, अपितु विचार करो तो ख़ुदा की क़ुदरत का अत्यधिक जल्वा इस बात में है कि इसी उम्मत में से मसीह मौऊद पैदा करे न कि पूर्व मसीह को दोबारा लाए। एक वस्तु को संभाल-संभाल कर रखने की आवश्यकता केवल उस व्यक्ति को पड़ती है जो डरता है कि यदि यह वस्तु नष्ट हो गई तो फिर उस की प्राप्ति दुष्कर हो जाएगी और मैं उसकी सदृश नहीं बना सकूँगा, परन्तु जो व्यक्ति समर्थ होता है वह अपने नियम के विपरीत वस्तुओं को सम्भाल-सम्भाल कर नहीं रखता, क्योंकि वह जानता है कि जब आवश्यकता होगी मैं ऐसी अनेकों वस्तुएं पैदा कर लूँगा। अतः ख़ुदा की क़ुदरत का जल्वा तो इस बात में अधिक प्रकट होता है कि वह कोई नया मसीह बना कर इस उम्मत में भेजे न कि पहले मसीह को ही दो हज़ार वर्ष सुरक्षित रखकर वापस भेज दे। अतः मैं कहता हूँ कि ख़ुदा ने यदि किसी मृत्यु प्राप्त को ही जीवित कर के दोबारा भेजना था तो फिर नबी करीम को ही क्यों न भेजा जाए। क्या मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम हमारे नबी करीम (स.अ.व.) की तुलना में अधिक सुधार कर लेगा। अफ़सोस सौ अफ़सोस।

كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا

अध्याय-चतुर्थ

क़ुर्आन तथा हदीस से सिद्ध है कि आने वाला मसीह और है जो इसी उम्मत में से होगा

अत: जब कि यह सिद्ध हो चुका कि क़ुर्आन करीम और हदीसें इस बात पर सर्वसम्मति से साक्ष्य दे रहे हैं कि मसीह नासिरी पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर नहीं उठाया गया अपितु मृत्यु को प्राप्त हो चुका है तथा यह कि जो व्यक्ति मृत्यु पा जाता है वह दोबारा इस संसार में नहीं लाया जाता। अत: इस से अनिवार्य परिणाम यह भी निकला कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा परन्तु अतिरिक्त सन्तुष्टि के लिए मैं इस सैद्धान्तिक परिणाम को ही पर्याप्त नहीं समझता अपितु अपने पाठकों को बताता हूँ कि क़ुर्आन करीम और हदीसों में स्पष्टतापूर्वक उल्लेख है कि आने वाला मसीह और है जो इसी उम्मत में से होगा।

नबी करीम (स.अ.व.) के समस्त ख़लीफ़े आपकी ही उम्मत में से होंगे

ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है:-

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ
فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(सूरह नूर रुकू-7)

अर्थात् *"हे मुसलमानो! अल्लाह तआला वादा करता है उन*

लोगों से जो तुम में से उच्च श्रेणी का ईमान लाए तथा उन्होंने उच्च कर्मों का आदर्श प्रदर्शित किया कि ख़ुदा अवश्य ही उन्हें पृथ्वी पर ख़लीफ़ा बनाएगा जिस प्रकार कि उसने उन लोगों को ख़लीफ़ा बनाया जो उन से पूर्व गुज़र चुके।"

इस आयत में अल्लाह तआला वादा करता है कि वह मुसलमानों में से नबी करीम (स.अ.व.) के उसी प्रकार ख़लीफ़े बनाएगा जिस प्रकार कि उसने मूसा के सिलसिले में बनी इस्राईल में से मूसा के ख़लीफ़े बनाए। अब यह बात प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हज़रत मूसा के पश्चात् अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल में बहुत से ख़लीफ़े भेजे जो तौरात की सेवा करते थे तथा बनी इस्राईल को सच्चाई के मार्गों में क़ायम रखते थे। मूसा के ख़लीफ़ों का यह क्रम मसीह नासिरी (ईसा अलैहिस्सलाम) के अस्तित्व में अपनी चरम सीमा को पहुँचा, तत्पश्चात् मुसलमानों के साथ भी इसी प्रकार के ख़लीफ़ों के सिलसिले का वादा दिया गया और ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मूसा के सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा इस्राईली मसीह हुआ उसी प्रकार यह ख़ुदाई फैसला था कि अन्तिम युग में मुसलमानों में भी एक मसीह भेजा जाएगा जो इस्लामी ख़लीफ़ों की श्रृंखला को पूर्ण करने वाला और चरम सीमा तक पहुँचाने वाला होगा। उपरोक्त आयत हमें बताती है कि मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले तथा मुहम्मद (स.अ.व.) के सिलसिले में स्पष्ट समानता है, जैसा कि 'कमा' (كَمَا) के शब्द से स्पष्ट है अब यदि मुहम्मदी सिलसिले का मसीह मूस्वी सिलसिले के मसीह से पृथक कोई अस्तित्व नहीं रखता अपितु वही है जो हज़रत मूसा के सिलसिले के अन्त में प्रकट हुआ तो समानता मिथ्या ठहरती है, क्योंकि समानता प्रतिकूलता को चाहती है अर्थात् यह आवश्यक होता है कि उपमेय और उपमान दो भिन्न-भिन्न अस्तित्व हों। अत: सिद्ध हुआ कि मुहम्मदी मसीह अलैहिस्सलाम मूस्वी मसीह अलैहिस्सलाम से पृथक व्यक्तित्व रखता है।

इस बात को भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि दोनों सिलसिलों में सामान्य समानता का होना भी आवश्यक है, परन्तु इन दोनों के प्रारम्भ और अन्त में तो विशेष और स्पष्ट समानता का होना आवश्यक है, क्योंकि प्रारम्भ और अन्त ही किसी सिलसिले का निर्धारण और परिसीमन करने वाले होते हैं। जब हम क़ुर्आनी निर्देशन के अन्तर्गत दोनों सिलसिलों के आरम्भ अर्थात् मूसा अलैहिस्सलाम और आंहज़रत (स.अ.व.) के मध्य समानता को स्वीकार करते हैं तो उनके अन्त में भी समानता अवश्य मानना पड़ेगी और जब समानता हुई तो प्रतिकूलता अनिवार्य तौर पर मानी जाएगी।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने इस आयत में मिन्कुम (अर्थात् तुम में से) का शब्द रख कर समस्त विवाद की जड़ काट दी है और स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि मुहम्मदी सिलसिले के ख़लीफ़े मुसलमानों में से ही होंगे। यह स्थान आँखें बन्द करके गुज़र जाने वाला नहीं। आदरणीय पाठक भली-भांति विचार करें कि मुसलमानों से अल्लाह तआला का निश्चित वादा है कि जिस प्रकार हज़रत मूसा के पश्चात् तौरात की सेवा के लिए ख़लीफ़े भेजे गए, इसी प्रकार नबी करीम (स.अ.व.) के पश्चात् क़ुर्आन और इस्लाम की सेवा के लिए भी ख़लीफ़े भेजे जाएंगे और ये ख़लीफ़े मुसलमानों में से ही होंगे। अतः यह कितना अन्याय है कि अपनी हठ पूर्ण करने के लिए मुहम्मदी सिलसिले का अन्तिम और सब से महान् ख़लीफ़ा बनी इस्राईल में से सोचा जाए और इस प्रकार ख़ुदा के वादे को जो उसने मिन्कुम के शब्द में किया है रद्दी की तरह फेंक दिया जाए और उम्मते मुहम्मदिया को उम्मते मूसविया का पराश्रय बनाया जाए? जिस मनुष्य के हृदय में लेशमात्र भी ईमान और स्वाभिमान हो वह कभी भी इस बात का साहस नहीं कर सकता कि सर्वोत्तम उम्मत को मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का भिखारी बनाए। ख़ुदा तो स्पष्ट शब्दों में वर्णन कर रहा है कि देखो मुसलमानों! मैं तुम्हारे अन्दर इस्लाम की सेवा के लिए जो ख़लीफ़े

भेजूँगा वे तुम में से ही होंगे, परन्तु हमारे मौलवियों के हृदय मसीह नासिरी के प्रेम में द्वैतवाद के ऐसे स्तर तक पहुँच चुके हैं कि ख़ुदा के स्पष्ट वादे के विपरीत अपने सुधार के लिए अकारण बनी इस्राईल के पैरों पर गिर रहे हैं। ख़ुदा उन्हें उठाना चाहता है तथा उनका सम्मान स्थापित करना चाहता है और उन पर इनाम करना चाहता है परन्तु वे अपने अपमान के इच्छुक हैं। ख़ुदा कहता है कि देखो मैं तुम पर इनाम करता हूँ कि तुम्हारे अन्दर ख़लीफ़े तुम में से ही भेजे जाएंगे, परन्तु मुसलमान हैं कि छोटे-मोटे ख़लीफ़ों के संबंध में तो मानते हैं कि इसी उम्मत में से ही होंगे, परन्तु जब अन्तिम और महान् ख़लीफ़ा का प्रश्न आता है तो उस समय बनी इस्राईल की ओर देखने लग जाते हैं। ख़ुदा इस क़ौम पर दया करे यह कहां आकर गिरी! क़ुर्आन मुसलमानों को सब उम्मतों से उत्तम ठहरा रहा है, परन्तु मुसलमान यह तो ईमान रखते हैं कि आंहज़रत (स.अ.व.) के आदेशानुसार यहूदी बनने के लिए हमारे अन्दर से ही उपद्रवी लोग पैदा होंगे, परन्तु जहां उन्नति का प्रश्न आता है वहां मुहम्मदी मसीह को बनी इस्राईल में से लाने के अभिलाषी हैं! नितान्त खेद! क्या मुसलमानों के भाग में बिगाड़ ही रह गया है और सुधारक बाहर से आएगा।

मसीह नासिरी दोबारा नहीं उतरेंगे

फिर आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ (सूरह माइदह रुकू-16) जो मसीह की मृत्यु के सबूत में ऊपर प्रस्तुत की जा चुकी है वह इस मामले में भी सबूत के तौर पर प्रस्तुत की जा सकती है क्योंकि यदि असम्भव के तौर पर मान भी लिया जाए कि **फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी** के अर्थ ये हैं कि ''जब तूने मुझे पूरा उठा लिया'' और फिर हम असम्भव के तौर पर यह भी मान लें कि उठा लेने से आकाश की ओर ही उठा लेना अभिप्राय है तब भी यह आयत

इस बात पर तो अटल सबूत है कि मसीह आकाश से नहीं उतरेगा, क्योंकि यह बात तो बहरहाल मान्य है कि हज़रत ईसा प्रलय के दिन अपनी उम्मत के बिगड़ जाने के संबंध में अपनी अज्ञानता प्रकट करेंगे। अत: सिद्ध हुआ कि प्रलय के दिन से पूर्व वह अपनी उम्मत को बिगाड़ की अवस्था में कभी नहीं देखेंगे अर्थात् उन्हें प्रलय से पूर्व यह ज्ञान कभी प्राप्त न होगा कि मेरी उम्मत ने मुझे उपास्य बना लिया है, परन्तु हम ऊपर बता चुके हैं कि यदि अन्तिम दिनों में स्वयं मसीह नासिरी ही उतरेंगे तो यह निश्चित है कि उन्हें अपनी उम्मत के बिगड़ जाने का ज्ञान हो जाएगा विशेषकर जब कि मसीह मौऊद का बड़ा कार्य ही सलीब तोड़ना है तो ऐसी अवस्था में अज्ञानता का प्रकटन कैसा? अत: यह बात निश्चित है कि यदि असम्भव की कल्पना करते हुए मान भी लें कि मसीह आकाश पर चले गए हैं तो फिर भी आने वाला मसीह निश्चय ही और है तथा मसीह नासिरी वहीं आकाश पर किसी स्थान पर मृत्यु पाकर दफ़्न कर दिए गए होंगे क्योंकि उनका आकाश पर होना उन्हें मृत्यु से तो नहीं बचा सकता। देखिए आयत :-

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ

तथा फ़रमाया:-

يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ

हदीस स्पष्ट तौर पर बता रही है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा

फिर क़ुर्आन करीम ही नहीं अपितु हदीस भी स्पष्ट शब्दों में बता रही है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा। नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ

(बुख़ारी किताब बदउलख़ल्क)

*"अर्थात् क्या ही अच्छा हाल होगा तुम्हारा हे मुसलमानो! जब मसीह इब्ने मरयम तुम में उतरेंगे और वह इमाम होंगे तुम्हारे, तुम्हीं * में से।"*

यह हदीस स्पष्ट शब्दों में और किसी व्याख्यायोग्य शब्द की आवश्यकता के बिना बता रही है कि मसीह मौऊद मुसलमानों में से ही एक सदस्य होगा जो मुसलमानों का इमाम होगा, जैसा कि **'इमामोकुम मिन्कुम'** के शब्द निश्चित तौर पर प्रकट कर रहे हैं। नि:संदेह आने वाले को इब्ने मरयम के नाम से याद किया गया है, परन्तु मिन्कुम का शब्द ऊँचे स्वर में

---

* कुछ लोग इस हदीस के ये अर्थ करते हैं कि शब्द اِمَامُكُم مِنكُم मसीह के बारे में नहीं हैं अपितु महदी के बारे में हैं जो मसीह के युग में अवतरित होगा और मुसलमानों का इमाम होगा, परन्तु बात यह है कि हम ने हदीस सही बुख़ारी से ली है, जिसमें महदी के प्रकटन का कोई अध्याय ही नहीं रखा गया, जिसका कारण यह है कि महदी के बारे में हदीसों में ऐसी गड़बड़ और ऐसा मतभेद है कि किसी हदीस के बारे में पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता कि वह सही है। अत: अब यदि इस हदीस में اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ के शब्द महदी के बारे में होते तो आवश्यक था कि इमाम बुख़ारी रह. जो हदीस से आचार्यों के सब से बड़े इमाम हैं वह महदी का अध्याय स्थापित करके इस हदीस को महदी के उतरने के सन्दर्भ में भी वर्णन करते, परन्तु वह यह हदीस केवल मसीह के सन्दर्भ में लाए हैं तथा महदी की चर्चा तक नहीं की, जिस से स्पष्ट है कि इमाम साहिब ने कभी اِمَامُكُمْ مِنْكُم के शब्दों का संकेत महदी की ओर नहीं समझा क्योंकि यदि वह ऐसा समझते तो वह इस हदीस को महदी के उतरने के सबूत में प्रस्तुत करते। यही हाल इमाम मुस्लिम का है अपितु इमाम मुस्लिम ने तो اِمَامُكُمْ के स्थान पर اَمَّكُمْ की रिवायत वर्णन करके निर्णय ही कर दिया है।

पुकार-पुकार कर कह रहा है कि यह इब्ने मरयम वह नहीं जो पहले गुज़र चुका अपितु हे मुसलमानो! यह तुम में से ही एक व्यक्ति होगा। यदि कथित मसीह पूर्व आ चुका मसीह नासिरी ही है तो **मिन्कुम** के क्या अर्थ हुए? ख़ुदा के लिए शीतल हृदय से विचार करो कि क्या **मिन्कुम** का शब्द मसीह नासिरी के बारे में समस्त आशाओं पर पानी नहीं फेर देता? यह मैं आगे चल कर बताऊँगा कि मसीह इब्ने मरयम के शब्दों का प्रयोग करने में क्या नीति थी, परन्तु इस समय दर्शक इतना देखें कि क्या **मिन्कुम** के शब्द ने इस्राईली मसीह के आगमन की आस्था को समूल काट कर नहीं रख दिया? मैं हैरत और आश्चर्य में डूब जाता हूँ जब देखता हूँ कि लोग तो भलाई को अपनी ओर सम्बद्ध करने के इतने जिज्ञासु होते हैं कि जिस वस्तु का उन्हें अधिकार ही नहीं उसे भी अपनी ओर सम्बद्ध करने से नहीं रुकते, परन्तु यह वह क़ौम है कि उसे जो ने'मत ख़ुदा तआला की ओर से प्रदान हुई है उसे भी अपनी ओर सम्बद्ध करना नहीं चाहती। हमारा स्वामी नबियों का सरदार ख़ातमुन्नबिय्यीन सूचना दे रहा है कि हे मुसलमानो! तुम में एक मसीह प्रकट होगा जो तुम्हीं में से तुम्हारा एक इमाम होगा, परन्तु मुसलमान कहते हैं कि भला, यह ने'मत इस उम्मत को कहां प्राप्त होगी। इस उम्मत के भाग्य में तो मसीह नासिरी ही का आना लिखा है मैं दर्शकों की सेवा में निवेदन करता हूँ कि वे इस हदीस के शब्दों पर पुन: विचार करें जो ये हैं:-

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ

अर्थात् *"क्या ही अच्छा हाल होगा तुम्हारा हे मुसलमानों जब मसीह इब्ने मरयम तुम में प्रकट होगा और वह तुम्हीं में से तुम्हारा एक इमाम होगा।"*

विचार करो कि नबी करीम (स.अ.व.) इस विचार से किस प्रकार प्रसन्न हो रहे हैं कि मेरी उम्मत में से एक इतना महान् मनुष्य प्रकट होगा जो मेरी उम्मत के सौभाग्य का झण्डा बुलन्द करने वाला होगा। न्याय का

स्थान है कि इस्राईली मसीह के आने में इस दयनीय उम्मत के लिए कौन सी प्रसन्नता है ? वह तो इस उम्मत के लिए शोक का दिन होगा जब कि इसके सुधार के लिए किसी बाह्य व्यक्ति की आवश्यकता होगी, क्योंकि इसके अर्थ ये होंगे कि हमारे स्वामी, नबियों में सर्वश्रेष्ठ (स.अ.व.) की पवित्र शक्ति इस उम्मत में से किसी सुधारक को पैदा न कर सकी। क्या नबी करीम (स.अ.व.) इस बात पर ख़ुशी मना रहे हैं कि जब मेरी उम्मत में उपद्रव और विकार फैलेगा तो मेरी उम्मत के अन्दर कोई व्यक्ति इस योग्य नहीं होगा कि सुधार का कार्य कर सके अपितु ख़ुदा को आवश्यकता होगी कि इस्राईली मसीह को उतारे ? **لا حول ولا قوة اِلَّا باللہ العظیم**

हदीस में दोनों मसीहों के अलग-अलग फोटो विद्यमान हैं

अत: मसीह मौऊद के बारे में '**इमामोकुम मिन्कुम**' के शब्द फ़रमा कर नबी करीम (स.अ.व.) ने समस्त विवाद का निर्णय कर दिया है तथा शंका और सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा, परन्तु आपकी सहानुभूति को देखिए कि स्पष्ट शब्दों में बता देने के बावजूद कि मसीह मौऊद मेरी उम्मत में से होगा आप उस समस्या पर केवल यही बात कह कर ख़ामोश नहीं हो गए अपितु अतिरिक्त व्याख्या की है ताकि मसीह नासिरी के बारे में मुसलमानों के हृदयों से उसके दोबारा आगमन का विचार बिल्कुल निकाल दिया जाए। आप (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

رَأَيْتُ عِيسٰى وَ مُوْسٰى وَاِبْرَاهِيْمَ فَاَمَّا عِيْسٰى فَاَحْمَرُ جَعْدٌ عَرِيْضُ الصَّدْرِ وَاَمَّا مُوْسٰى فَاٰدَمُ جَسِيْمٌ سَبْطُ الشَّعْرِ كَاَنَّهٗ مِنْ رِجَالِ الزُّطِّ وَاَمَّا اِبْرَاهِيْمُ فَانْظُرُوْا اِلٰى صَاحِبِكُمْ

(सही बुख़ारी किताब बदउलख़ल्क़)

अर्थात् *"मैंने रोया (स्वप्न) में ईसा, मूसा और इब्राहीम को देखा। ईसा लाल रंग के थे तथा उनके बाल घुंघराले थे और उनका सीना चौड़ा था, मूसा का रंग गेहुंआं था तथा उन का शरीर भारी था और ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे ज़ुत्त क़बीले का कोई व्यक्ति है और इब्राहीम को देखना हो तो केवल मुझे देख लो।"*

इस हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) ने ईसा इब्ने मरयम का हुलिया यह वर्णन किया है कि ईसा इब्ने मरयम लाल रंग के थे और उनके बाल घुंघराले थे। इस बात का प्रमाण कि यहां ईसा से अभिप्राय पूर्वकालीन ईसा है स्वयं इस हदीस में मौजूद है और वह यह है कि उनको पूर्वकालीन नबियों हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ मिलाकर वर्णन किया गया है। पाठक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इस हुलिए को भली-भांति याद रखें। इसके मुक़ाबले पर एक अन्य हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

بَيْنَمَا اَنَا نَائِمٌ اَطُوْفُ بِالْكَعْبَةِ فَاِذَا رَجُلٌ سَبْطُ الشَّعْرِ فَقُلْتُ مَنْ
هٰذَا قَالُوْا هٰذَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

(सही बुख़ारी बाब ज़िकरुद्दज्जाल)

अर्थात् *"मैंने स्वप्न में काबे की परिक्रमा की, अचानक मैंने एक आदमी देखा जिसका रंग गेहुआं था तथा उसके बाल सीधे और लम्बे थे। मैंने पूछा कि यह कौन है? जिस पर मुझे उत्तर दिया गया कि यह मसीह इब्ने मरयम है।"*

इस हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) आने वाले मसीह का हुलिया (आकृति) यह वर्णन करते हैं कि वह गेहुआं है तथा उसके बाल सीधे और लम्बे हैं। इस बात का प्रमाण कि यहां मसीह से अभिप्राय आने वाला मसीह है स्वयं इसी हदीस में मौजूद है, क्योंकि इसी हदीस में आगे नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि मैंने उस समय दज्जाल को भी देखा। जिस

से स्पष्ट है कि यह मसीह वह है जो दज्जाल के मुकाबले पर प्रकट होगा।

अत: बात बिल्कुल स्पष्ट है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जो बनी इस्राईल में अवतरित हुए उन के बारे में आंहज़रत (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि उन का रंग लाल था और बाल घुंघराले थे, परन्तु आने वाला मसीह जो दज्जाल के युग में प्रकट होगा, उसके बारे में आप फ़रमाते हैं, कि उसका रंग गेहुआं है और उसके बाल सीधे और लम्बे होंगे। दोनों हुलियों (आकृतियों) में स्पष्ट अन्तर है किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। कहां लाल रंग और कहां गेहुआं रंग। फिर कहां घुंघराले बाल और कहां सीधे बाल! देखिए नबी करीम (स.अ.व.) ने किस स्पष्टता के साथ बता दिया कि हे मुसलमानो! इब्ने मरयम के शब्द से यह न समझ लेना कि तुम में इस्राईली मसीह ही उतरेंगे क्योंकि उनका रंग लाल था और बाल घुंघराले थे, परन्तु आने वाले मसीह का रंग गेहुआं होगा तथा बाल सीधे और लम्बे होंगे। इस से अधिक स्पष्टता और क्या होगी? दोनों मसीहों का चित्र दर्शकों के समक्ष रख दिया गया है और चित्र भी स्वयं नबी करीम (स.अ.व.) के द्वारा खींचा गया है। अब पाठक स्वयं निर्णय कर लें कि क्या दोनों चित्रों में एक व्यक्ति की शक्ल दिखाई दे रही है? जिसे ख़ुदा ने आँखें दी हैं वह तो दोनों को एक नहीं कह सकता। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम क्या ख़ूब फ़रमाते हैं:-

मौऊदम व बहुलिया मासूर आमदम
हैफ़ अस्त गर बदीदा न बीनंद मन्ज़रम

रंगम चूं गन्दम अस्त व बमूफ़र्क़ बय्यिन अस्त
ज़इन्सां कि आमद अस्त दर अख़बार सरवरम

ईं मक़दमम न जाए शुकूक अस्त व इलतिबास
सय्यद जुदा कुनद ज़ मसीहा ए अहमरम

अर्थात् *"मैं ही वादा दिया गया मसीह हूँ और मैं हदीसों में वर्णित*

हुलिये के अनुसार आया हूँ। खेद है कि यदि लोग आँख रखते हुए मुझे न देखें। मेरा रंग गेहुआं है और मेरे बालों में भी उस व्यक्ति के बालों से अन्तर है जिसका वर्णन मेरे स्वामी के कथनों में आता है। मेरे इस पद के बारे में किसी शंका और सन्देह की गुंजायश नहीं क्योंकि नबी करीम (स.अ.व.) ने मुझे स्वयं लाल रंग वाले मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम से अलग बताया है।''

आयत اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ पर एक सरसरी दृष्टि

इस लेख को समाप्त करने से पूर्व एक संक्षिप्त नोट आयत اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا (सूरह ज़ुख़रुफ़) के बारे में उल्लेख करना हित से ख़ाली न होगा क्योंकि अन्य सब ओर से निराश होकर हमारे मौलवी लोग प्राय: इस आयत से हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के प्रलय के निकट के युग में उतरने को सिद्ध किया करते हैं, परन्तु पाठक अभी देखेंगे कि डूबते को तिनके का सहारा कुछ हो तो हो, परन्तु यह आयत उनके उद्देश्य के लिए इतना काम भी नहीं देती। प्रथम तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या इस आयत के अर्थों पर समस्त व्याख्याकारों की सहमति है ? क्या इस से सब अनिवार्य रूप से यही परिणाम निकालते हैं कि मसीह प्रलय के निकट उतरेगा ? देखिए इस आयत में बहुत से व्याख्याकार इस ओर गए हैं कि इन्नहू (اِنَّهٗ) का सर्वनाम क़ुर्आन शरीफ़ की ओर जाता है न कि ईसा की ओर अर्थात् आयत के मूल अर्थ ये हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में प्रलय का सबूत मौजूद है क्योंकि जिस सूरह में यह आयत आई है अर्थात् सूरह 'ज़ुख़रुफ़' इसमें क़ुर्आन शरीफ़ की चर्चा की पुनरावृत्ति है और कई बार اِنَّهٗ का शब्द प्रयोग करके सर्वनाम को क़ुर्आन शरीफ़ की ओर फेरा गया है। इसी लिए बहुत से व्याख्याकारों ने इस सर्वनाम को क़ुर्आन शरीफ़ ही

की ओर लौटने वाला स्वीकार किया है। हां कुछ ने 'इन्नहू' के सर्वनाम को नि:सन्देह ईसा की ओर फेरा है परन्तु ऐसे व्याख्याकारों के भी आगे दो वर्ग हो जाते हैं। कुछ तो आयत के ये अर्थ करते हैं कि ईसा प्रलय की निशानी हैं अर्थात् वह प्रलय के निकट उतरेंगे परन्तु कुछ ने ये अर्थ किए हैं कि ईसा प्रलय का एक सबूत हैं अपितु पूर्व कालीन व्याख्याकार तो अलग रहे इस युग के ग़ैर अहमदी विद्वान भी इस आयत के यही अर्थ करते हैं कि हज़रत ईसा का अस्तित्व प्रलय का एक सबूत है। अत: मौलवी नज़ीर अहमद साहिब देहलवी ही का अनुवाद ले लीजिए। मौलवी साहिब इस आयत के ठीक वही अर्थ करते हैं जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है अर्थात् ''ईसा अलैहिस्सलाम भी प्रलय का एक सबूत हैं'' फिर इस पर मौलवी साहिब एक नोट लिखते है जो निम्नलिखित है, फ़रमाते हैं कि:-

> ''जो ख़ुदा ईसा अलैहिस्सलाम के बिन बाप पैदा करने पर समर्थ है वह इस बात पर भी समर्थ है कि प्रलय में मुर्दों को जीवित कर दे या यह मतलब है कि हज़रत ईसा का दोबारा संसार में आना प्रलय के निकट होने का सबूत है जैसा कि हदीसों में आया है।''

देखिए यहां मौलवी नज़ीर अहमद साहिब देहलवी आयत के मूल अर्थ यही करते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम की चमत्कारिक पैदायश प्रलय पर एक सबूत है और यद्यपि उन्होंने दूसरे अर्थ भी वर्णन किए हैं परन्तु प्रमुखता उन्हीं अर्थों को दी है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का अस्तित्व प्रलय का एक सबूत है, जिस से स्पष्ट है कि उनके निकट अधिक स्वीकार करने योग्य यही अर्थ थे। फिर कुछ व्याख्याकारों ने इन्नहू के सर्वनाम को मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ओर भी फेरा है।

इन परिस्थितियों में पाठक स्वयं विचार करें कि क्या यह आयत ऐसी

महत्वपूर्ण समस्या के लिए नींव का पत्थर बन सकती है? क्या आप की अन्तर्दृष्टि इस बात को स्वीकार करने को तैयार है कि मसीह के दोबारा अगमन की समस्या का एक ऐसी आयत पर आधार हो जिसमें अधिकांश व्याख्याकारों के निकट मसीह का कहीं नाम तक नहीं, अपितु सर्वनाम क़ुर्आन करीम की ओर लौटता हो? फिर एक अन्य वर्ग के निकट भी आयत में मसीह की चर्चा तक न हो अपितु सर्वनाम मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ओर लौटता हो और केवल एक छोटे वर्ग के विचार में सर्वनाम ईसा अलैहिस्सलाम की ओर फिरता समझा जाए, परन्तु इस विचार के व्याख्याकार भी परस्पर लड़ने पर तैयार हों। कोई कहता हो कि आयत के ये अर्थ हैं कि हज़रत मसीह अपनी चामत्कारिक और विलक्षण पैदायश के कारण प्रलय पर एक सबूत थे और कोई कहे कि नहीं अपितु चूंकि वह प्रलय के निकट उतरेंगे, इसलिए उन्हें प्रलय का सबूत ठहराया गया है।

एक बार देहली में मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भोपालवी ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के सामने मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के उतरने के बारे में यही आयत प्रस्तुत की थी। इस पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर दिया वह यह है :-

चौथा सबूत आपने यह प्रस्तुत किया है कि

> ''अल्लाह तआला फ़रमाता है وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا इस स्थान पर भी आप मान गए हैं कि यह आयत आपके उद्देश्य पर निश्चित सबूत नहीं है परन्तु मैं आप को मात्र ख़ुदा के लिए स्मरण कराता हूँ कि इस आयत का हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के दोबारा उतरने से संदिग्ध तौर पर भी कुछ संबंध नहीं। बात यह है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के समय में यहूदियों में सदूक़ी नामक एक समूह था जो प्रलय का इन्कारी था। पूर्वकालीन

किताबों में बतौर भविष्यवाणी उल्लेख था कि उनको समझाने के लिए मसीह अलैहिस्सलाम का जन्म बिना बाप के होगा और उनके लिए यह एक निशान बताया गया था जैसा कि अल्लाह तआला दूसरी आयत में फ़रमाता है وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ यहां पर 'अन्नास' से अभिप्राय वही सदूक़ी समूह है जो उस युग में बाहुल्य के साथ मौजूद था। चूंकि तौरात में प्रलय का वर्णन प्रत्यक्ष तौर पर कहीं विदित नहीं होता। इसलिए यह समूह मुर्दों के जीवित हो उठने से पूर्णत: इन्कारी हो गया था। बाइबल की कुछ पुस्तकों में अब तक उपलब्ध है कि मसीह अपनी पैदायश की दृष्टि से बतौर 'इल्मुस्साअत' के उनके लिए आया था। अब देखिए इस आयत का मसीह अलैहिस्सलाम के उतरने से क्या संबंध है। आपको ज्ञात है कि व्याख्याकारों ने कितने पृथक-पृथक तौर पर इसके अर्थ लिखे हैं। एक जमाअत ने इन्नहू के सर्वनाम को क़ुर्आन करीम की ओर फेर दिया है क्योंकि क़ुर्आन करीम से आध्यात्मिक तौर पर मुर्दे जीवित होते हैं और यदि अकारण ज़बरदस्ती यहां मसीह का उतरना अभिप्राय लिया जाए और वही उतरना उन लोगों के लिए जो आंहज़रत (स.अ.व.) के युग में थे प्रलय का निशान ठहराया जाए तो यह तर्क प्रलय के आने तक उपहास योग्य होगा और जिन्हें यह सम्बोधन किया गया कि मसीह अन्तिम युग में उतर कर प्रलय का निशान ठहरेगा। तुम इतने बड़े निशान के बावजूद प्रलय के क्यों इन्कारी हुए। वे बहाना प्रस्तुत कर सकते हैं कि सबूत तो अभी विद्यमान नहीं फिर यह कहना कितना निरर्थक है कि अब प्रलय के होने पर ईमान ले आओ। सन्देह मत करो हमने प्रलय के आने का सबूत वर्णन कर दिया।''

(अलहक़ देहली, पृष्ठ 38-39)

पाठक विचार करें कि निश्चय ही यह कितनी हँसी की बात है कि जो वस्तु भविष्य के किसी युग में होगी उसे उन लोगों के लिए सबूत ठहराया जाए जो अब मौजूद हैं। मसीह ने तो भविष्य के किसी युग में उतरना था परन्तु उसके उतरने को नबी करीम (स.अ.व.)के युग के इन्कार करने वालों के सामने बतौर सबूत के प्रस्तुत किया जा रहा है 'नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक' यदि हमारे विरोधी मौलवियों के अर्थ स्वीकार किए जाएं तो नऊज़ुबिल्लाह क़ुर्आन करीम सबूतों की दृष्टि से एक नितान्त रद्दी किताब दिखाई देती है। विचार तो कीजिए कि नबी करीम (स.अ.व.) के युग के विरोधियों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि देखो प्रलय के निकट मसीह का दोबारा उतरना प्रलय का एक सबूत है। अतः तुम प्रलय के बारे में किसी सन्देह में न पड़ो! क्या इससे भी अधिक कमज़ोर सबूत कोई होगा? वर्तमान लोगों के लिए तो जो वस्तु हो चुकी हो या उनके जीवन में घटित हो जाने वाली हो उसे किसी आइन्दा घटित होने वाली वस्तु के प्रमाण में प्रस्तुत किया जा सकता है, परन्तु यह सबूत विचित्र है कि देखो तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् अन्तिम युग में मसीह उतरेगा। इसलिए तुम प्रलय के होने में कोई शंका और सन्देह न करो। ख़ुदा तआला की ओर ऐसे व्यर्थ और बेहूदा सबूतों को सम्बद्ध करना सरासर पाप है, परन्तु चौदहवीं सदी के मौलवियों को कौन समझाए?

अध्याय पंचम

(कुछ विविध शंकाओं का निवारण)

इतना लिखने के पश्चात् मैं आदरणीय पाठकों से निवेदक करता हूँ कि वे कृपया विचार करें कि हम ने किस प्रकार क़ुर्आन करीम तथा सही

हदीसों से सिद्ध कर दिया है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम आकाश की ओर जीवित नहीं उठाए गए अपितु उन का इन्हीं अर्थों में रफ़ा (ऊपर जाना) हुआ जिन अर्थों में ख़ुदा के समस्त मान्य लोगों का रफ़ा हुआ करता है। फिर यही नहीं अपितु यह भी प्रकाशमान दिन की तरह सिद्ध कर दिया कि क़ुर्आन करीम और हदीसें पुकार-पुकार कर गवाही दे रहे हैं कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम मर चुका है तथा जो व्यक्ति मृत्यु पा जाता है ख़ुदा का नियम उसके जीवित होकर संसार में वापस आने को निषिद्ध ठहराता है। फिर इसी पर अन्त नहीं अपितु ख़ुदा की वाणी और आंहज़रत (स.अ.व.) के कथनों से आपको स्पष्ट तौर पर दिखा दिया गया है कि नबी करीम (स.अ.व.) के समस्त ख़लीफ़े इसी उम्मत में से होंगे अपितु मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए विशेष तौर पर आपके सामने इमामोकुम मिन्कुम (اِمَامُکُمْ مِنْکُمْ) के शब्द निकाल कर रख दिए गए और अन्ततः आपकी पूर्ण सन्तुष्टि के लिए हमने आपके सामने ख़ातमुन्नबिय्यीन के द्वारा खींचे गए दोनों मसीहों के चित्र भी पृथक-पृथक रख दिए, इस से अधिक हम क्या कर सकते हैं? मैं अपने बुद्धिमान पाठकों पर सरासर अन्याय करने वाला हूँगा यदि मैं यह विचार करूँ कि इन महत्वपूर्ण साक्ष्यों के होते हुए उनके हृदय में एक पल के लिए भी यह विचार आ सकता है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम जीवित आकाश पर बैठे हैं तथा किसी युग में पुनः पृथ्वी पर उतरेंगे? हां अब उनके हृदय में यह चिन्ता उत्पन्न होना एक स्वाभाविक बात है कि जब क़ुर्आन करीम, हदीसें और सहाबा रज़ियल्लाह के कथन इस स्पष्टता से मसीह पर फ़ातिहा पढ़ रहे हैं तो सम्पूर्ण उम्मत इतनी सदियों से मसीह अलैहिस्सलाम को क्यों जीवित मानती चली आई है?

हज़रत मसीह के जीवित रहने की आस्था पर उम्मत-ए-मुहम्मदिया की सर्वसम्मति कभी नहीं हुई

इस का उत्तर यह है कि यह बिल्कुल ग़लत है कि इस आस्था पर सम्पूर्ण उम्मत की सर्वसम्मति रही है। पूर्वकालीन सदात्माओं में से ऐसे अधिकांश लोग गुज़रे हैं जिन्होंने मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु का इक़रार किया है। क्या आप को स्मरण नहीं रहा कि जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि सब से प्रथम सर्वसम्मति जो आंहज़रत के मृत्योपरान्त सहाबा रज़ियल्लाह की हुई वह इसी बात पर थी कि आंहज़रत (स.अ.व.) से पूर्व जितने नबी हुए वे सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। फिर हज़रत इब्ने अब्बास ने मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ मुमीतोका वर्णन करके अपनी आस्था को प्रकट कर दिया तथा इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने इसे अपनी सही बुख़ारी में लिखकर इस पर अपनी मुहर लगा दी। फिर मज्मउल-बिहार में लिखा है:-

وَالْاَکْثَرُ اَنَّ عِیْسٰی عَلَیْہِ السَّلَامُ لَمْ یَمُتْ وَقَالَ مَالِکٌ مَاتَ

अर्थात् *"अधिकांश लोगों का विचार है कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु नहीं हुई, परन्तु इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि वह मृत्यु पा चुके हैं।"*

फिर इमाम इब्ने हज़्म के बारे में लिखा है कि:-

وَتَمَسَّکَ ابْنُ حَزَمَ بِظَاھِرِ الْاٰیۃِ وَقَالَ بِمَوْتِہٖ

अर्थात् *"इब्ने हज़्म ने प्रत्यक्ष आयत लेकर मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु वर्णन की है।"*

फिर हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रह. फ़रमाते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम का दूसरा उतरना प्रतिबिम्ब के तौर पर होगा अर्थात् मसीह स्वयं नहीं आएंगे अपितु उनका कोई समरूप आएगा जो उन के रंग-रूप

होगा*। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि यह बात बिल्कुल ग़लत है कि उम्मते मुहम्मदिया की इस मिथ्या समस्या पर सर्वसम्मति रही है अपितु इस के विपरीत यदि कोई बात सिद्ध होती है तो वह यह है कि यदि उम्मत की किसी समस्या पर कभी सर्वसम्मति हुई है तो वह मसीह की मृत्यु का ही मसअला (समस्या) है जैसा कि आंहज़रत (स.अ.व.) की मृत्यु के पश्चात् सहाबा रज़ियल्लाह की सर्वसम्मति हुई और सहाबा के युग के पश्चात् तो उम्मते मुहम्मदिया बहुलता के साथ सुदूर देशों में फैल गई और प्रसारित हो गई। इसलिए सहाबा के बाद के युग में किसी धार्मिक मामले के संबंध में सर्वसम्मति का दावा कर देना तो आसान है, परन्तु उसे सिद्ध करना असम्भव बातों में से है। इसीलिए इमाम अहमद बिन हम्बल रह. फ़रमाते हैं कि जो सर्वसम्मति का दावा करे वह झूठा है। हां यह बात निसन्देह उचित है कि कई सदियों (शताब्दियों) से मसीह की जीवित रहने की समस्या सामान्यतया लोगों में फैली हुई है, परन्तु मैं कहता हूँ कि किसी ग़लत आस्था का सामान्यतया प्रचलित हो जाना अनुमान से दूर की बात नहीं है। देखिए आजकल मुसलमानों के कम से कम बहत्तर फ़िर्क़े (समुदाय) हो रहे है और यह सम्भव नहीं कि वे सब अपनी आस्थाओं में सही हों। यदि सही हैं तो मतभेद कैसा। यह मतभेद स्पष्ट करता है कि मुसलमानों के अन्दर कुछ ग़लत आस्थाएं आ गई हैं। अब पाठक बताएं कि वे ग़लत आस्थाएं कहां से आ गईं? क़ुर्आन करीम और हदीस ने तो नि:सन्देह सही आस्थाएं ही वर्णन की होंगी, फिर उन के होते हुए ग़लत आस्थाएं कैसे सम्मिलित हो गईं? जो उत्तर आप देंगे वही हमारी ओर से समझ लीजिए, परन्तु मैं केवल आरोप का उत्तर देकर आपको ख़ामोश करना नहीं चाहता अपितु मेरी इच्छा तो यह है कि किसी प्रकार आपकी सन्तुष्टि हो। इसलिए सुनिए!

---

* ये कुछ उदाहरण केवल बड़े-बड़े इमामों के वर्णन किए गए हैं इनके अनुयायी अलग रहे जो इन्हीं के अधीन समझे जाएंगे। इसी से.

मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने की आस्था मुसलमानों के अन्दर किस प्रकार प्रविष्ट हुई ?

पाठकों को ज्ञात होगा कि जब इस्लाम की विजयों का युग था उस समय ईसाई लोग समूह के समूह इस्लाम में सम्मिलित हुए और यह एक स्वाभाविक बात है कि मनुष्य अपने पुराने विचारों का शनैः शनैः त्याग करता है। हमारे देश में कहावत प्रसिद्ध है कि राम का नाम निकलते-निकलते ही निकलेगा और अल्लाह का नाम प्रवेश होते-होते ही होगा। इसी पर अनुमान कर लो कि ये लोग जो हज़ारों लाखों की संख्या में समूह के समूह इस्लाम में शामिल होते थे। वे यद्यपि इस्लाम की सच्चाई को स्वीकार करके ही मुसलमान होते थे, परन्तु विचारों में पूर्णतया क्रान्ति न होने के कारण वे विवरण योग्य बातों में स्वाभाविक तौर पर कुछ ईसाई विचारधारा अपने साथ लाते थे, जिनका एक दिन में हृदय से निकल जाना सम्भव न होता था। उन लोगों के हृदयों से मसीह नासिरी का अनुचित प्रेम द्वैतवाद के स्थान से तो निःसन्देह नीचे गिर गया था, परन्तु अभी पूर्णरूप से हृदय से नहीं निकला था, इसलिए क़ुर्आन शरीफ़ और हदीसों में जहां कहीं मसीह अलैहिस्सलाम की चर्चा आती है वहां स्वाभाविक तौर पर उन लोगों ने कुछ हाशिए चढ़ाए और मुसलमान आहिस्ता-आहिस्ता ग़ैर महसूस ढंग से उनके विचारों से प्रभावित होते चले गए*। जब तक सहाबा रज़ि. का एक बड़ा समूह जीवित रहा उस समय तक तो ऐसा प्रभाव बिल्कुल सम्भव न था, परन्तु सहाबा रज़ि. के युग के पश्चात् स्वयं वंशानुगत मुसलमान भी एक सीमा तक उन नए मुसलमानों के प्रभाव के अधीन हो गए और इस प्रकार

---

* यही कारण है कि हमारे पूर्वकालीन व्याख्याकार क़ुर्आन शरीफ़ की व्याख्या करते हुए अकारण इस्राईली कहानियां सुनाने लग जाते हैं।

शनैः शनैः कुछ ग़लत आस्थाएं मुसलमानों के अन्दर प्रचलित हो गईं। भला आप विचार करें कि क़ुर्आन शरीफ़ में मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के बारे में आता है कि उसने मुर्दे जीवित किए उसके स्पष्ट तौर पर ये अर्थ थे कि वे लोग जो आध्यात्मिक तौर पर मुर्दा थे उनके अन्दर उसने जीवन की आत्मा फूंकी जैसा कि समस्त नबियों का काम है। स्वयं मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के संबंध में ये शब्द आते हैं कि हे लोगो! जब तुम्हें ख़ुदा का रसूल जीवित करने के लिए बुलाए तो उसकी बात पर उपस्थित हूँ कहा करो, परन्तु इसके बावजूद मसीह के लिए जब-जब जीवित करने के शब्द आए तो वहां इन लोगों ने वास्तविक मुर्दों को जीवित करना समझ लिया। इसी प्रकार क़ुर्आन में जहां कहीं मसीह के बारे में 'ख़ल्क़' का शब्द आ गया तो उसे नऊज़ुबिल्लाह वास्तविक तौर पर स्रष्टा ही मान लिया गया, हालांकि ऐसे शब्द बतौर रूपक के होते हैं। यही हाल इस मामले में हुआ। ईसाई धर्म में पहले से ही मसीह के दोबारा आगमन की ख़बर मौजूद थी, जिसे समस्त ईसाई लोग स्वयं मसीह का पुनरागमन समझते थे। जब ये लोग समूह के समूह मुसलमान होकर इस्लाम में सम्मिलित हुए तो उन्होंने इस्लाम में भी मसीह के आने की ख़बर सुनी जिससे उन्होंने तुरन्त यह सोच लिया कि यह वही ख़बर है जो ईसाइयत में भी मौजूद है कि मसीह दोबारा आएगा, आगे अरबी मुहावरे के अनुसार 'नुज़ूल' (उतरना) का शब्द भी मिल गया अतः फिर क्या था इस विचार पर सुदृढ़ रूप में जम गए कि इस्राईली मसीह स्वयं अन्तिम युग में उतरेंगे। मसीह के प्रेम ने इस बात की आज्ञा ही नहीं दी कि क़ुर्आन खोल कर विचार करें कि यह आस्था क़ुर्आन के अनुकूल है भी या नहीं। बाद में जो लोग आए उनमें इतना साहस कहां कि पूर्वकालीन बुज़ुर्गों के विरुद्ध कोई शब्द मुख पर लाएं, अन्धाधुन्ध इस आस्था पर दृढ़ रहने का उपदेश देते आए, केवल कोई-कोई ऐसे साहसी निकले जिन्होंने इस मिथ्या आस्था के विरुद्ध साहस करके क़ुर्आन और

सही हदीसों पर गहरी दृष्टि डाली तो देखा कि मामला तो कुछ और है, जन सामान्य के विरोध की शक्ति हुई तो घोषणा करते हुए कहा कि ईसा की मृत्यु हो चुकी है वरन् अपनी खोज को सीने में ही दबाए हुए इस संसार से कूच कर गए। कठिनाई यह है कि पूर्वजों की आस्थाओं का परित्याग जनता के लिए नितान्त कठिन होता है। क़ुर्आन खोल कर देखो प्रारम्भ से ही जनता की यह आवाज़ रही है कि :

بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

अर्थात् *"हम तो इसी बात पर ही दृढ़ रहेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया।"*

परन्तु ख़ुदा ने भी अच्छा उत्तर दिया कि –

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ

हमारा भी यही उत्तर है, परन्तु न सुनने वालों ने ख़ुदा की नहीं सुनी तो हम किस गिनती में हैं!

ईसा इब्ने मरयम का नाम प्रयोग करने में नीति

यह लेख अपूर्ण रहेगा यदि मैं अन्त में वह कारण न बताऊँ जिसके आधार पर नबी करीम (स.अ.व.) ने आने वाले को मसीह इब्ने मरयम के नाम से याद किया। इस बात को भली-भांति समझ लेना चाहिए कि भविष्य में अवतरित होने वाले नबियों के नाम जो किसी नबी के द्वारा बताए जाते हैं वे सामान्य तौर पर किसी आन्तरिक वास्तविकता की ओर संकेत करने वाले होते हैं, इसलिए उन्हें प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना उचित नहीं होता। सामान्यतया उनका आशय यह होता है कि वे आने वाले और उस नाम के मध्य किसी गहरी विशेषता के संबंध को प्रकट करें। उदाहरणतया बनी इस्राईल को यह वादा दिया गया था कि मसीह के प्रकट से पूर्व इल्यास

अलैहिस्सलाम अर्थात् 'एलिया' नबी दोबारा उतरेंगे (मलाकी बाब 14, आयत 5) जिन के बारे में यहूदियों की यह आस्था थी कि वह आकाश की ओर उठाए गए हैं (सलातीन बाब-2, आयत-11) इन परिस्थितियों में प्रत्यक्ष पर दृष्टि रखने वाले यहूदियों ने एलिया नबी के नुज़ूल (उतरने) से यह समझा कि वह एलिया जो पहले गुज़र चुका वही स्वयं उतरेगा, तत्पश्चात् मूसा के सिलसिले का मसीह अलैहिस्सलाम आएगा। इसलिए जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने मसीह होने का दावा किया तो यहूदियों ने स्पष्ट तौर पर इन्कार कर दिया और कहा कि हमारी किताबों में तो लिखा है कि मसीह से पूर्व एलिया नबी आकाश से उतरेगा, परन्तु चूंकि अभी तक एलिया नहीं आया इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम का दावा सच्चा नहीं हो सकता। इसका उत्तर ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के नियमानुसार यह दिया कि एलिया की जो भविष्यवाणी की गई थी उससे स्वयं एलिया का आना अभिप्राय नहीं था अपितु वह रूपक के तौर पर ऐसे नबी की सूचना थी जो एलिया की पद्धति (रंग-रूप) पर आएगा और वह आ चुका है और वही यह्या अलैहिस्सलाम हैं जिसकी आँखें हों देखे (मती बाब 11, आयत 13,14) लेकिन प्रत्यक्ष के पुजारी यहूदी इसी बात पर जमे रहे कि स्वयं एलिया का दोबारा उतरना लिखा है इसलिए यह्या का आना उसका आना नहीं हो सकता और इस प्रकार वे मुक्ति से वंचित हो गए। इस उदाहरण से यह बात सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान हो जाती है कि भविष्यवाणियों में भविष्य में आने वाले सुधारकों के जो नाम बताए जाते हैं उन्हें हमेशा प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना सरासर विनाश का मार्ग है जिससे हर मोमिन को बचना चाहिए। देखिए कहां एलिया नबी का आगमन और कहां यह्या का? परन्तु मसीह यह्या को ही एलिया बता रहे हैं क्योंकि वह एलिया के रंग-रूप पर और उसकी विशेषताओं के साथ प्रकट हुआ था। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम में लिखा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने एक रसूल के आगमन की

सूचना दी थी, जिसका नाम अहमद होगा। अब हमारे समस्त विरोधियों की इस बात पर सहमति है कि यह भविष्यवाणी नबी करीम (स.अ.व.)के आगमन से पूरी हो चुकी है, परन्तु क्या नबी करीम का नाम अहमद था? यह ठीक है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने नुबुव्वत के दावे के पश्चात् यह फ़रमाया कि मैं अहमद अलैहिस्सलाम भी हूँ, परन्तु दावे के बाद इस नाम को अपनी ओर सम्बद्ध करना विरोधी पर किसी प्रकार सबूत नहीं हो सकता। विरोधी पर तो तब ही सबूत हो जब कि यह सिद्ध किया जाए कि आप के बुज़ुर्गों की ओर से आप का यह नाम रखा गया था, या यह कि दावे से पूर्व आप कभी इस नाम से पुकारे गए परन्तु सही हदीसों से यह कदापि सिद्ध नहीं, इसलिए इस के अतिरिक्त इस का और क्या उत्तर हो सकता है कि आकाश पर आप का नाम अहमद (स.अ.व.) था जिस प्रकार कि आकाश पर यह्या का नाम एलिया था।

इन दो उदाहरणों से भली-भांति यह स्पष्ट हो जाता है कि भविष्यवाणियों में जो नाम बताए जाते हैं वे अनिवार्य तौर पर प्रत्यक्ष में पाए जाने आवश्यक नहीं होते अपितु प्राय: वे किसी काल्पनिक वास्तविकता की ओर संकेत करने वाले होते हैं*। अब प्रश्न पैदा होता है कि आने वाले सुधारक के

हाशिया * इस स्थान पर कुछ लोग ऐतिराज़ किया करते हैं कि मसीह इब्ने मरयम का नाम जो नबी करीम (स.अ.व.) ने लिया तो अब यह उस समय तक अपने मूल अर्थ में समझा जाएगा जब तक उस के विपरीत कोई प्रचलित अनुकूलता सिद्ध न की जाए। इस का मूल और सीधा उत्तर तो यही है कि जब क़ुर्आन करीम स्पष्टता के साथ पहले मसीह को मृत्यु प्राप्त कहता है और मुर्दों का जीवित होकर इस संसार में आ जाना भी इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से निषेध है तो फिर इस से बढ़कर प्रचलित अनुकूलता क्या होगी? इससे अधिक स्पष्ट प्रचलित अनुकूलता तो विचार में नहीं आ सकती, परन्तु प्रश्न यह है कि प्रचलित अनुकूलता हम से क्यों पूछी जाती है? प्रचलित अनुकूलता

बारे में मसीह इब्ने मरयम इत्यादि नाम प्रयोग करने में कौन सी गुप्त नीति है ? इसके उत्तर में कई बातें प्रस्तुत की जा सकती हैं, परन्तु यहां सब का उल्लेख करना विस्तार का कारण होगा, इसलिए कुछ मोटी-मोटी नीतियों के वर्णन करने को ही पर्याप्त समझता हूँ। **प्रथम** यह कि आने वाला मसीह

शेष हाशिया ☀

निकालना तो ग़ैर अहमदियों का कर्तव्य है क्योंकि ख़ुदा का तो वस्तुओं की वास्तविकता से संबंध है उन के प्रत्यक्ष नामों से नहीं है। हम नि:सन्देह पहचान के लिए प्रत्यक्ष नामों का ध्यान रखते हैं, परन्तु ख़ुदा तआला वस्तुओं की मूल वास्तविकता को दृष्टिगत रखता है और उसकी दृष्टि में मूल नाम विशेषता वाला नाम ही होता है न कि प्रत्यक्ष नाम उदाहरणतया एक ग़ुलाम रसूल नामक मुसलमान ईसाई हो जाए तो यद्यपि हम तो पहचान के कारण उसे इसी नाम से पुकारेंगे, परन्तु ख़ुदा की दृष्टि में वह अब ग़ुलाम रसूल के स्थान पर दुश्मने रसूल हो चुका है, इसलिए ख़ुदा उसे दुश्मने रसूल ही कहेगा। इसलिए ख़ुदा ने जब आने वाले के बारे में इब्ने मरयम का नाम प्रयोग किया तो वह प्रत्यक्ष तौर पर इस नाम से कोई मतलब नहीं रखता अपितु चूंकि पहले इब्ने मरयम की परिस्थितियों और विशेषताओं ने इस नाम को एक विशेष अर्थ से विशेष्य कर दिया है, अर्थात् दया और नम्रता के रूप में मैत्री से काम लेने वाला और एक सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा। इसलिए ख़ुदा ने इस नाम को उसी वास्तविकता को प्रकट करने के लिए प्रयोग किया अन्यथा केवल इब्ने मरयम की पहचान वाला नाम ख़ुदा की दृष्टि में कोई महत्व नहीं रखता। अत: ख़ुदा की वाणी में निश्चित तौर पर इब्ने मरयम से अभिप्राय पहले इब्ने मरयम के रूप और गुणों पर आने वाला मनुष्य होना चाहिए। जब यह सिद्ध है तो हम से प्रचलित अनुकूलता की मांग कैसी ? हमारा दावा ख़ुदा के नियम के अनुकूल है कि उसने अपने नियमानुसार इस नाम को अपने वास्तविक अर्थ में प्रयोग किया है। हां जो लोग इस नाम को उसकी स्थापित वास्तविकता से हटा कर केवल एक पहचान और रस्म संबंधी नाम प्रस्तावित करते हैं वह नि:सन्देह उसे वास्तविकता से हटा कर काल्पनिक रूप में लेते हैं। इसलिए उन पर अनिवार्य है कि अपने अर्थों के समर्थन में कोई सबूत प्रस्तुत करें।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रंग-रूप और गुणों पर आना था, जिस प्रकार एलिया नबी के रंग-रूप और गुणों पर यह्या नबी आया। हज़रत ईसा मैत्री और शान्ति के दूत थे उन्होंने जीवन पर्यन्त विनम्रतापूर्वक मैत्री और नर्मी के साथ अपनी रिसालत का प्रचार किया और यदि विरोधियों ने कभी कठोरता भी की तो उन्होंने धैर्य से काम लिया तथा मुकाबला नहीं किया, इसी प्रकार उम्मते मुहम्मदिया (स.अ.व.) के मसीह मौऊद ने आना था जैसा कि स्वयं नबी करीम (स.अ.व.) ने मसीह मौऊद के बारे में फ़रमाया है कि يَضَعُ الْحَرْبَ (बुख़ारी किताबुल अंबिया) अर्थात् जब मसीह मौऊद प्रकट होगा तो वह तलवार के जिहाद को स्थगित कर देगा क्योंकि वह तलवार द्वारा जिहाद का युग नहीं होगा।

द्वितीय - नीति इसमें यह थी कि जिस प्रकार मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम मूसा के सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा था इसी प्रकार यह प्रकट करना अभीष्ट था कि आने वाला मसीह नबी करीम (स.अ.व.) का अन्तिम ख़लीफ़ा होगा और ख़ातुमुलख़ुलफ़ा कहलाएगा, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि यहां अन्तिम ख़लीफ़ा से अन्तिम स्थायी ख़लीफ़ा अभिप्राय है न कि बिल्कुल हर प्रकार का ख़लीफ़ा अर्थात् अभिप्राय यह है कि मसीह मौऊद स्वयं तो नबी करीम (स.अ.व.) का स्थायी ख़लीफ़ा होगा परन्तु मसीह मौऊद के पश्चात् जो ख़लीफ़े होंगे वे वास्तव में मसीह मौऊद के ख़लीफ़े होंगे और उसके माध्यम से नबी करीम (स.अ.व.) के भी ख़लीफ़े कहलाएंगे, क्योंकि मुहम्मदी सिलसिला प्रलय तक चलेगा।

तृतीय - और बड़ा कारण यह है कि क़ुर्आन करीम तथा सही हदीसों से विदित होता है कि अन्तिम दिनों में ईसाइयत बहुत ज़ोर पकड़ेगी और ईसाई धर्म बड़े प्रभुत्व की अवस्था में होगा, इसलिए आने वाले सुधारक का एक बड़ा काम यह भी निर्धारित किया गया कि يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ अर्थात् मसीह मौऊद सलीबी धर्म के ज़ोर को तोड़ देगा। इस में नीति यह है कि

जब किसी नबी की उम्मत में ख़राबी फैल जाती है तो फिर आध्यात्मिक तौर पर उस नबी का ही यह कर्तव्य होता है कि वह उस ख़राबी को दूर करे। जिस प्रकार यदि किसी शासन में ख़राबी हो तो बाहर के शासनों का कर्तव्य नहीं होता कि उस ख़राबी को दूर करें अपितु स्वयं उसी शासन का यह कर्तव्य होता है। अब एक ओर तो अन्तिम युग के लिए प्रारब्ध था कि वह सम्पूर्ण विश्व के उपद्रव का युग होगा और समस्त उम्मतों में उपद्रव फैल जाएगा। ऐसे समय के लिए आवश्यकता थी कि समस्त उम्मतों के प्रवर्तकों के मसील (समरूप) प्रकट होते जो उन के समरूप बन कर सुधार-कार्य करते परन्तु दूसरी ओर इस्लाम के आगमन और ख़ातमुन्नबिय्यीन के प्रकटन ने समस्त आध्यात्मिक पानी अपने अन्दर खींच लिया है और अब कोई सुधारक इस्लाम के बाहर किसी अन्य उम्मत में प्रकट नहीं हो सकता। इसलिए समस्त नबियों का प्रतिबिम्ब (बुरूज़) एक ही अस्तित्व में इस्लाम में पैदा किया जाना आवश्यक था। इस आने वाले सुधारक का काम यह रखा गया कि समस्त उम्मतों का सुधार करे। इस प्रकार उस कथित सुधारक का कार्य दो भागों में विभाजित हो गया। एक स्वयं उम्मते मुहम्मदिया का सुधार, दूसरे शेष उम्मतों का सुधार, परन्तु चूंकि शेष उम्मतों के सुधार-कार्य में सब से प्रमुख कार्य हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का सुधार था, जैसा कि हदीस के शब्द '**यक्सिरुस्सलीब**' से स्पष्ट है। इसलिए इस दृष्टि से आने वाले को विशेष तौर पर ईसा इब्ने मरयम का सम्बोधन दिया गया तथा अन्य उम्मतों के सुधार की दृष्टि से केवल संक्षेप में وَاِذَاالرُّسُلُ اُقِّتَتْ (मुरसलात रुकू-1)के शब्द प्रयोग किए गए। अर्थात् ''अन्तिम युग में समस्त रसूलों के बुरूज़ (प्रतिबिम्ब) एकत्र किए जाएंगे।'' इसके मुकाबले में उम्मते मुहम्मदिया के सुधार का काम भी एक विशेष काम था। अत: इस दृष्टि से आने वाले का नाम महदी रखा गया जो नबी करीम (स.अ.व.) के इस आदेश के अनुसार था कि اَلْخُلَفَاءِالرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ अर्थात् ''मेरे

ख़लीफ़े सदमार्ग पर चलने वाले महदी होंगे।'' स्पष्ट है कि कथित इमाम ने मुसलमानों को सुधारने के कार्य में नबी करीम (स.अ.व.) का सब से बड़ा ख़लीफ़ा होना था*। ईसा अलैहिस्सलाम इब्ने मरयम के नाम में और भी कुछ नीतियां हैं, परन्तु एक शुद्ध हृदय रखने वाले मनुष्य की सन्तुष्टि के लिए इतना ही पर्याप्त है।

पुस्तक का समापन तथा लेखक की हार्दिक दुआ

अब में इस लेख को समाप्त करता हूँ और ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह अपनी कृपा से आदरणीय पाठकों के हृदयों को विशाल करे ताकि वे अपनी ग़लती को स्वीकार करने में हठ से काम न लें अपितु सत्य के प्रकट हो जाने पर उसे स्वीकार कर लेने के लिए तैयार हों। मैं तो जब इस समस्या पर दृष्टि डालता हूँ तो आश्चर्य चकित हो जाता हूँ कि ऐसा तुच्छ मामला मुसलमानों के हृदयों में किस प्रकार घर कर गया परन्तु अब समय

हाशिया * हमने लिखा है कि महदी और मसीह एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं। इस पर पाठकों में स्वाभाविक तौर पर यह विचार पैदा होगा कि हम तो इन दोनो को दो भिन्न-भिन्न अस्तित्व सुनते और समझते चले आए हैं ये एक किस प्रकार हो सकते हैं। अत: इसके उत्तर में स्मरण रखना चाहिए कि अन्तिम युग के कथित आने वाले को दो विभिन्न रूपों के कारण ये दो विभिन्न नाम दिए गए हैं। इस से यह अभिप्राय कदापि नहीं कि एक ही समय में दो विभिन्न व्यक्ति प्रकट होंगे परन्तु सामान्य मुसलमानों ने ग़लती से यह समझ लिया कि एक ही समय में दो सुधारकों के प्रकटन की सूचना दी गई है। नबी करीम (स.अ.व.) ने तो इस विचार से कि मुसलमान महदी और मसीह को पृथक-पृथक न समझने लग जाएं यहां तक सावधानी की थी कि फ़रमाया لَاالْمَهْدِیُّ اِلَّا عِیْسٰی (इब्ने माजा व हाकिम) अर्थात् ''ईसा के समय में ईसा के अतिरिक्त कोई अन्य कथित महदी नहीं होगा'' परन्तु खेद कि हमारे मुसलमान भाई इस के बावजूद ठोकर खाने से न बचे।

है कि ऐसी बातों से इस्लाम का दामन पवित्र किया जाए जो इस्लामी शिक्षा के बिल्कुल विपरीत होने के अतिरिक्त हमारे स्वामी पहलों और बाद में आने वालों के सरदार के अनादर का कारण हो रही हैं। ख़ुदा मुसलमानों की आँखों को खोले ताकि वे देखें कि इन ग़लत और दूषित आस्थाओं ने इस्लाम को कितनी हानि पहुँचाई है। केवल हिन्दुस्तान में ही पिछले कुछ वर्षों में लाखों कलिमा पढ़ने वाले मुसलमान ईसाई हो चुके हैं। मैं समझता हूँ कि इन सब का पाप मौलवियों की गर्दन पर है। ईसाई प्रचारक भोला-भाला रूप बनाकर मुसलमानों के पास जाते हैं तथा बड़ी विनम्रता के साथ कहते हैं कि देखो तुम्हारे नबी तो मर चुके हैं और मदीने में मिट्टी के नीचे दफ़्न हैं परन्तु हमारा मसीह दो हज़ार वर्ष से अब तक न केवल जीवित है अपितु आकाश पर ख़ुदा के पास बैठा है। बताओ कौन श्रेष्ठ हुआ और कौन जीवित नबी सिद्ध हुआ और कौन मुर्दा नबी निकला? मुसलमानों के लिए मसीह की मृत्यु का शब्द तो मुख पर लाना कुफ़्र हुआ। विवश हो कर मुख से यही स्वीकार कर लेते हैं कि इस बात में तो मसीह ही श्रेष्ठ है। तत्पश्चात् पादरी साहिब कहते हैं कि देखो अन्तिम युग में जब मुहम्मद (स.अ.व.) की उम्मत में उपद्रव और पथभ्रष्टता फैलेगी तो उस के सुधार हेतु ख़ुदा हमारे मसीह को आकाश पर से भेजेगा, मालूम होता है कि वह कोई ऐसा उपद्रव होगा कि उस का सुधार (नऊज़ुबिल्लाह) इस्लाम के नबी की आध्यात्मिक शक्ति से ऊपर होगा अन्यथा ख़ुदा ने यदि किसी को जीवित रख कर ही अन्तिम युग में मुहम्मद (स.अ.व.) की उम्मत का सुधार कराना था तो स्वयं मुहम्मद (स.अ.व.) साहिब को जीवित रखा जाता, परन्तु इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए मुहम्मद (स.अ.व.) साहिब के स्थान पर हमारे मसीह को जीवित रखा गया।

यहां तक तो मसीह की श्रेष्ठता स्वीकार कराई जाती है, तत्पश्चात् अग्रिम पग उठाया जाता है। पादरी साहिब नितान्त सादगी से बोलते हैं कि

मुहम्मद साहिब से जब उनके विरोधियों ने आकाश पर जाने का चमत्कार मांगा तो उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया और कहा मैं तो केवल एक मनुष्य हूँ और मनुष्य का आकाश पर जाना निषेध है, परन्तु देखो तुम भी मानते हो कि मसीह जीवित आकाश पर जा पहुँचा। इन बातों का उत्तर कौन दे? यदि लोग मौलवियों के पास जाएं तो उन के ईमानों की कमज़ोर चट्टानों पर पहले ही से इन बातों से एक भूकम्प आया होता है, इधर-उधर की बातें करके टाल देते हैं। ये बेचारे जब मौलवियों की ओर से सन्तोषजनक उत्तर नहीं पाते तो विवश होकर गिरजे की ओर जाते हैं।

अफ़सोस! वह धर्म जो किसी युग में يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ افواجًا (समूह के समूह ख़ुदा के धर्म में प्रवेश करते थे) का चरितार्थ था आज يَخْرُجُوْنَ مِنْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا (समूह के समूह ख़ुदा के धर्म से बाहर जा रहे हैं) का तमाशा-स्थल बन रहा है*। क्या कोई मुसलमान कहलाने वाला मनुष्य है जिसके हृदय में ये बातें दर्द पैदा करें? खेद! बहुत थोड़े हैं जो सही नीयत के साथ इन बातों पर विचार करते हैं अन्यथा मामला तो बिल्कुल साफ़ है, वह जिसके पुनरागमन की प्रतीक्षा की जा रही है वह स्वयं पुकार-पुकार कर अपने पुनरागमन की वास्तविकता वर्णन कर रहा है,

---

* यह इबारत देश-विभाजन से बहुत पूर्व अर्थात् 1917 ई. में लिखी गई थी जब कि देश में मसीही उपद्रव का ज़ोर था। अब ख़ुदा की कृपा से .... मुसलमानों के हृदय में राजनैतिक समझ पैदा हो जाने के आधार पर इस्लाम से प्रत्यक्ष तौर पर धर्म छोड़ने का दृश्य तो कम दिखाई देता है और क़ौमी नारे ज़ोर-शोर से लगाए जाते हैं परन्तु वास्तविकता और क्रियात्मक रूप से इस्लाम अब भी वैसा ही कमज़ोर है और संसार में दज्जाली प्रभाव उसी प्रकार ज़ोर लगा रहा है। सत्य यह है कि देश से अंग्रेज़ तो नि:सन्देह चला गया, परन्तु पाश्चात्य शैली और भौतिकता उसी प्रकार स्थापित है और धर्म की सच्ची भावना दुर्लभ दिखाई देती है।

क्योंकि एलिया नबी जिसके बारे में विचार था कि मसीह से पूर्व आकाश से उतरेगा उसके पुनरागमन को मसीह ने उस के किसी समरूप का आगमन बताया है। (मती बाब-11, आयत 13-14)

आश्चर्य है कि एक स्पष्ट उदाहरण सामने होने के बावजूद मुसलमान फिर भी इस बारे में ठोकर खा रहे हैं ठीक जिस प्रकार मसीह नासिरी के बारे में कहा गया था कि वह अन्तिम दिनों में उतरेगा। इस से अधिक स्पष्टता के साथ एलिया के बारे में कहा गया था कि वह मसीह से पूर्व उतरेगा, परन्तु आश्चर्य का स्थान है कि एलिया के वादे को तो एक समरूप (मसील) के द्वारा पूर्ण हो चुका मान लिया जाता है परन्तु मसीह के स्वयं उतारे जाने पर आग्रह है! खेद जिस स्थान पर यहूदियों ने ठोकर खाई उसी स्थान पर मुसलमानों ने भी ठोकर खाई, परन्तु यहूदी ऐसी पकड़ के नीचे नहीं हैं जैसे कि मुसलमान हैं, क्योंकि यहूदियों के सामने कोई पूर्व उदाहरण मौजूद नहीं था परन्तु मुसलमानों के लिए इस प्रकार के वादे का उदाहरण मौजूद है तथा वे देख चुके हैं कि किसी पहले नबी के आगमन से उसके मसील (समरूप) का आना अभिप्राय होता है न कि स्वयं उसी का आना।

आह! सत्य फ़रमाया था नबी करीम (स.अ.व.) ने कि मेरी उम्मत के लोग यहूद के पद चिन्हों पर चलेंगे (बुख़ारी जिल्द प्रथम पृष्ठ-491) अर्थात् जिस प्रकार यहूद ने एक पहले नबी के आगमन के वादे को स्वयं उसी नबी का आगमन समझ लिया था उसी प्रकार मेरी उम्मत के लोग भी करेंगे, परन्तु मुसलमानों ने इस चेतावनी से भी कोई लाभ नहीं उठाया और आने वाले का केवल इस कारण इन्कार कर दिया कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के आने में न केवल मुहम्मद (स.अ.व.) का ही बड़ा अपमान है अपितु स्वयं मसीह अलैहिस्सलाम का भी अपमान है क्योंकि चाहे मसीह नासिरी पद में नबी करीम (स.अ.व.) से कितना ही छोटा हो

फिर भी वह ख़ुदा का एक मनोनीत रसूल था, जिसने नुबुव्वत का पद नबी करीम (स.अ.व.) के अनुसरण के कारण नहीं पाया अपितु उसे यह इनाम स्थायी रूप से सीधा ख़ुदा की ओर से प्राप्त हुआ था। अब उसे दोबारा उतारने के ये अर्थ हैं कि उसे (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उसके स्थायी नुबुव्वत के पद से अपदस्थ कर दिया जाए और केवल एक उम्मती की हैसियत दी जाए, क्योंकि यदि वह दोबारा उतर कर भी स्थायी रूप से नबी ही रहेगा तो यह बात ख़त्मे नुबुव्वत के सरासर विपरीत है ख़ातमुन्नबिय्यीन के पश्चात् कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता चाहे नया हो या पुराना जिसने नुबुव्वत का पद स्थायी रूप में नबी करीम (स.अ.व.) के पूर्ण अनुसरण के बिना सीधे तौर पर प्राप्त किया हो। आप (स.अ.व.) के बाद केवल ऐसी नुबुव्वत का द्वार खुला है जिसे ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब स्वरूप) नुबुव्वत के नाम से पुकार सकते हैं अर्थात् ऐसी नुबुव्वत जो नबी करीम (स.अ.व.) की नुबुव्वत का प्रतिबिम्ब है न कि स्थायी नुबुव्वत। अत: ऐसी अवस्था में जब कि आयत ख़ातमुन्नबिय्यीन स्थायी नुबुव्वत के द्वार को बड़ी दृढ़ता के साथ बन्द कर रही है तो मसीह नासिरी का उतरना केवल ऐसी अवस्था में ही हो सकता है कि उसे (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) स्थायी नुबुव्वत के पद से हटा कर केवल एक उम्मती की हैसियत दी जाए, परन्तु यह बात ख़ुदा के स्पष्ट नियम के विपरीत है जिसे उसने इन शब्दों में वर्णन किया है कि :-

بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ

(सूर अन्फ़ाल रुकू-3)

अर्थात् *"अल्लाह तआला किसी को कोई इनाम देकर उस से वह इनाम कदापि वापस नहीं लेता जब तक कि वह स्वयं अपनी दशा परिवर्तित न कर ले।"*

अत: अब इस नितान्त स्पष्ट आयत के होते हुए यह किस प्रकार स्वीकार कर लिया जाए कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम स्वयं अन्तिम दिनों

में उतरेगा क्योंकि उसके उतरने के अर्थ ये हैं कि उस से (नऊज़ुबिल्लाह) अकारण उसकी स्थायी नुबुव्वत का पद छीन लिया जाएगा।

फिर यह भी तो देखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाता है:-

رَسُوۡلًا اِلٰی بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ

(सूरह आले इमरान, रुकू-5)

अर्थात् *"मसीह नासिरी बनी इस्राईल की ओर रसूल बना कर भेजा गया था।"*

अब यदि वही मसीह अलैहिस्सलाम उतरे तो उसका अवतरण केवल बनी इस्राईल के अतिरिक्त सम्पूर्ण संसार के लिए स्वीकार करना पड़ेगा, परन्तु यह उपरोक्त आयत के सरासर विपरीत है। अतः अब जिस व्यक्ति को क़ुर्आनी आयतों के निरस्त और मिथ्या सिद्ध करने की इच्छा और साहस हो वह निःसन्देह मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का प्रतीक्षक रहे, हम तो उस ख़ुदा से डरते हैं जिसने यहूदियों पर ख़ुदा की वाणी में हस्तक्षेप करने के कारण ला'नत की। ख़ुदा साक्षी है कि हमारा हृदय इस बात को देख-देख कर किस प्रकार कुढ़ता है कि मुसलमान एक ऐसी आस्था पर दृढ़ हैं जो ख़ुदा के नियम के विपरीत होने के अतिरिक्त हमारे स्वामी मुहम्मद (स.अ.व.) और मसीह नासिरी दोनों के नितान्त अपमान का कारण है परन्तु समय आता है कि जब हमारे मुसलमान भ्राता अपनी ग़लती को महसूस करेंगे तथा मसीह के आगमन के लिए आकाश की ओर देखने की बजाए अपने पीछे दृष्टि डालेंगे। उस समय मुहम्मदी मसीह अलैहिस्सलाम का यह कथन पूर्ण होगा कि -

इमरोज़ क़ौमे मन न शनासद मक़ामे मन
रोज़े ब गिरिया याद कुनद वक़्ते ख़ुशतरम

अर्थात् *"आज मेरी क़ौम ने मेरे ख़ुदा द्वारा दिए गए पद को नहीं*

पहचाना, परन्तु एक दिन आता है कि वह मेरे बरकत वाले समय को याद करते रोएगी।"

अन्त में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के एक लेख पर इस वर्णन का समापन करता हूँ :-

> **"हे समस्त लोगो सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने पृथ्वी और आकाश बनाया। वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा तथा सबूत और तर्कों की दृष्टि से उनको सब पर प्रभुत्व प्रदान करेगा, वह दिन आते हैं अपितु निकट हैं कि संसार में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मानपूर्वक स्मरण किया जाएगा। ख़ुदा इस धर्म और इस सिलसिले में असीम श्रेणी और स्वभाव से बढ़कर बरकत डालेगा तथा प्रत्येक को जो इसे मिटाने की चिन्ता में है निराश रखेगा और यह प्रभुत्व हमेशा रहेगा यहां तक कि प्रलय आ जाएगी। यदि (लोग) अब मुझ से उपहास करते हैं तो इस उपहास से क्या हानि, क्योंकि कोई नबी नहीं जिस से उपहास नहीं किया गया। अतः आवश्यक था कि मसीह मौऊद से भी उपहास किया जाता, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -**
>
> يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
>
> **अतः ख़ुदा तआला की ओर से यह निशानी है कि प्रत्येक नबी से ठट्ठा किया जाता है परन्तु ऐसा मनुष्य जो समस्त लोगों के समक्ष आकाश से उतरे और फ़रिश्ते भी उसके साथ हों उस**

से कौन ठट्ठा करेगा ? अतः इस सबूत से भी बुद्धिमान समझ सकता है कि मसीह मौऊद का आकाश से उतरना मात्र झूठा विचार है। स्मरण रखो कि कोई आकाश से नहीं उतरेगा हमारे समस्त विरोधी जो अब जीवित विद्यमान हैं वे समस्त मरेंगे और कोई उन में से ईसा इब्ने मरयम को आकाश से उतरते हुए नहीं देखेगा और फिर उन की सन्तान जो शेष रहेगी वह भी मरेगी और उन में से भी कोई व्यक्ति ईसा इब्ने मरयम को आकाश से उतरते नहीं देखेगा और फिर सन्तान की सन्तान मरेगी और वह भी मरयम के पुत्र को आकाश से उतरते नहीं देखेगी, तब ख़ुदा उनके हृदयों में व्याकुलता पैदा कर देगा कि युग सलीब के प्रभुत्व का भी गुज़र गया और संसार दूसरे रूप में आ गया, परन्तु मरयम का पुत्र ईसा अलैहिस्सलाम अब तक आकाश से न उतरा। तब मनीषी अचानक इस आस्था से विमुख हो जाएंगे और आज के दिन से अभी तीसरी सदी पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई नितान्त निराश और बदगुमान हो कर यह असत्य आस्था त्याग देंगे और संसार में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीजारोपण करने आया हूँ। अतः वह बीज मेरे हाथ से बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो उसे रोक सके।''

(तज़किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ 66-67)

परिशिष्ट*

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब प्रवर्तक जमाअत अहमदिया की जिस शानदार भविष्यवाणी का उपरोक्त इबारतों में उल्लेख किया गया है जिसमें बताया गया है कि इस घोषणा से तीन सौ वर्ष के अन्दर-अन्दर क्या मुसलमान और क्या ईसाई हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के शारीरिक तौर पर उतरने के संबंध में निराश होकर इस झूठी आस्था को त्याग देंगे और संसार दूसरे रूप में परिवर्तित हो जाएगा, इसके प्रारम्भिक लक्षण अभी से प्रकट हो रहे हैं। अतः मुसलमानों का एक वर्ग इस विचारधारा की ओर जा रहा है कि किसी मसीह के आकाश से उतरने का विचार ग़लत है। अतः स्वर्गीय विद्वान इक़बाल ने भी अपने निधन से कुछ समय पूर्व अपने एक लेख में इस विचार को प्रकट किया था कि हमारे मौलवियों से भारी ग़लती हुई कि उन्होंने मसीह के उतरने की आस्था को उचित स्वीकार करके जमाअत अहमदिया के साथ बहस का द्वार खोला और इस बहस में पराजय का मुख देखना पड़ा। उन्हें चाहिए था कि सिरे से मसीह के उतरने के ही इन्कारी हो कर अहमदियत का मुकाबला करते और इस प्रकार मसीह के उतरने से इन्कार पर ही इस सारी बहस का अन्त कर देते ताकि किसी व्यक्ति के कथनानुसार ''न रहे बांस और न बजे बांसुरी'' इस प्रकार के विचारों को निकट के युग में कुछ अन्य मुसलमान लोगों ने भी प्रकट करना आरम्भ कर दिया है। निश्चय ही यह अहमदियत की एक महान् विजय तथा

---

* यह पुस्तक के द्वितीय संस्करण के समय लिखकर इस पुस्तक में सम्मिलित किया जा रहा है (ख़ाकसार - लेखक पुस्तक अल हुज्जतुल बालिग़ा)

जमाअत अहमदिया के संस्थापक की उपरोक्त भविष्यवाणी के पूर्ण होने के प्रारम्भिक लक्षण हैं जो ख़ुदा की कृपा और दया से इस घोषणा के पचास-साठ वर्ष के अन्दर-अन्दर ही प्रकट होने आरम्भ हो गए हैं। यह सत्य है कि अभी यह वर्ग इस समस्या को अन्य रूप में प्रस्तुत कर रहा है अर्थात् यह कि इस्लाम में किसी मसीह के उतरने या प्रकट होने की भविष्यवाणी ही नहीं पाई जाती और न आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् मुसलमानों के लिए किसी आध्यात्मिक सुधारक की आवश्यकता है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य जिसे इस्लामी ग्रन्थों का थोड़ा बहुत अध्ययन है आसानी के साथ समझ सकता है कि यह विचार कि आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् किसी आध्यात्मिक सुधारक की आवश्यकता नहीं ख़ुदा तआला की अनादि सुधार व्यवस्था के प्रतिकूल है जो यह है कि संसार में जब भी आस्थाओं और कर्मों का असाधारण विकार फैल जाता है तो ख़ुदा उसे अपने किसी प्रशिक्षण प्राप्त सुधारक द्वारा दूर करता है। आध्यात्मिक सुधारकों का अवतरित होना केवल नवीन शरीअत (धार्मिकविधान) लाने के उद्देश्य से नहीं हुआ करता अपितु स्रष्टा के अस्तित्व पर लोगों के ईमान को ताज़ा करने तथा लोगों के हृदयों का सुधार, आचरण का सुधार तथा मिथ्या विचारों का दमन करने के लिए भी होता है और यह उद्देश्य क़ुर्आन करीम से पूर्ण हो जाने के पश्चात् भी स्थापित रहता है। यही कारण है कि आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् मुसलमानों में कई मुजद्दिद आते रहे हैं और यही कारण है कि हज़रत मूसा[अ.] के पश्चात् भी उनकी शरीअत के अनुसरण में कई आध्यात्मिक सुधारक आते रहे जिन्हें कोई नई शरीअत नहीं दी गई अपितु वे केवल मूसा की शरीअत की सेवा के लिए अवतरित होते थे।

शेष रहा यह विशेष आरोप कि इस्लाम में किसी मसीह के उतरने की भविष्यवाणी नहीं पाई जाती। अतः यह विचार भी स्पष्ट तौर पर मिथ्या है अपितु सत्य यह है कि इस युग में अहमदियत के संबंध में इस विचार

का उत्पन्न होना सरासर पराजित स्वभाव के रुझान का परिणाम है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं अन्यथा कौन मुसलमान नहीं जानता कि हमारे स्वामी (स.अ.व.) ने किस ज़ोर-शोर और किस पुनरावृत्ति के साथ अन्तिम युग में एक मसीह के समरूप की भविष्यवाणी की है। अतः उदाहरण के तौर पर सही बुख़ारी की यही एक हदीस पर्याप्त है जिसमें रसूले करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं :-

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَیُوْشِکَنَّ اَنْ یَّنْزِلَ فِیْکُمْ ابْنُ مَرْیَمَ حَکَمًا عَدْلًا
فَیَکْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَۃَ

(सही बुख़ारी किताब बदउल ख़ल्क़ बाब नुज़ूल ईसब्ने मरयम)

अर्थात् *"मुझे उस हस्ती की क़सम है जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं कि तुम में अवश्य ही मसीह इब्ने मरयम उतरेगा। वह धार्मिक मतभेदों में मध्यस्थ बनकर निर्णय करेगा और उसका निर्णय सत्य और न्यायपूर्ण होगा, वह सलीबी उपद्रव की तीव्रता के युग में प्रकट होगा तथा इस उपद्रव को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और उस समय संसार में ख़िन्ज़ीरी अपवित्रताओं का भी ज़ोर होगा और मसीह उन अपवित्रताओं का विनाश करके रख देगा परन्तु ये समस्त कार्य सबूतों, तर्कों और आध्यात्मिक निशानों के माध्यम से होगा क्योंकि वह युग शान्ति का होगा तथा धार्मिक युद्ध और कर उस युग में स्थगित हो जाएगा।"*

क्या ऐसी शक्तिशाली भविष्यवाणियों के होते हुए जो आंहज़रत (स.अ.व.) ने ख़ुदा की क़सम खा कर वर्णन की हैं और हदीसों की सामान्य पुस्तकों में ही नहीं अपितु हदीस की चोटी की पुस्तक तक में भी जिनकी ख़ुदा की किताब के पश्चात् सर्वाधिक सही पुस्तकों में गणना की जाती है पाई जाती हैं और क़ुर्आन करीम में भी इस की ओर स्पष्ट संकेत मिलते हैं और समस्त मुसलमान सहाबा रजि. के समय से लेकर इस समय

तक उन भविष्यवाणियों पर ईमान लाते चले आए हैं। कोई व्यक्ति मूल रूप से मसीह के उतरने की आस्था से इन्कार कर सकता है ? हां मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर जाना और फिर आकाश से उतरना नि:सन्देह एक मिथ्या आस्था है जिसका क़ुर्आन और हदीस में कोई प्रमाण नहीं मिलता। उचित आस्था यही है कि इन भविष्यवाणियों में एक मसीह के मसील (समरूप) की ख़बर दी गई थी जिसने हज़रत मसीह नासिरी की तरह मुहम्मदी सिलसिले के अन्त में मसीह के रूप पर अवतरित हो कर इस्लाम की सेवा में सेवारत होना था और वह ख़ुदा की कृपा से प्रकट हो चुका है जिसके नेत्र हों देखे।

सारांश यह है कि जो भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने की थी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की प्रतीक्षा करने वाले तीन सौ वर्ष के अन्दर-अन्दर इस प्रतीक्षा से निराश होकर मसीह नासिरी के शारीरिक रूप में उतरने की आस्था को त्याग देंगे। इसके लक्षण अभी से आरम्भ हैं और यद्यपि इस समय अपनी पराजय पर पर्दा डालने के लिए केवल एक भाग की प्रतीक्षा की जा रही है, परन्तु वह समय दूर नहीं कि क्या मुसलमान और क्या ईसाई इस बहस के मूल बिन्दु पर आकर यह घोषणा करने पर विवश होंगे कि जिस मसीह के आसमान से आने की प्रतीक्षा की जा रही थी वह समस्त लोकों के सरदार हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन (स.अ.व.) की पवित्र सांसों के उपलक्ष्य इसी पृथ्वी में से प्रकट हो कर **इमामोकुम मिन्कुम** का वादा पूर्ण कर चुका है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने अपने रसूल (स.अ.व.) के प्रेम की ओर संकेत करते हुए क्या ख़ूब फ़रमाया है कि-

آں مسیحا کہ بر افلاک مقامش گویند
لطف کردی کہ ازیں خاک نمایاں کر دی

(ऐसा मसीह कि लोग जिसका स्थान आकाश पर बताते हैं हे ख़ुदा तेरा उपकार है कि तूने उसे इसी मिट्टी से प्रकट कर दिया। अनुवादक)